चिरन्तन काल से ही कोई न कोई नारी व्यक्ति के जीवन, संसार या राष्ट्र में विनाश को अनिवार्य बनाती आई है। इस मामले में सर्वनाश के जितने भी अस्त्र हो सकते हैं, सब के सब नारी के सौंदर्य में छिपे रहते हैं। पुरुष इस मामले में प्रकृति के हाथ में खिलौना की भूमिका ही अदा करता है।

महेन्द्र के साथ भी यही हुआ। जीवन भर एक बँधी-बँधाई डगर पर चलता हुआ जब वह लखपती हो गया तो उसे नष्ट करने को उसके जीवन में ईरानी आ जुटी और उसने महेन्द्र का सारा जीवनक्रम ही बदल डाला। और तब उत्थान की जगह ह्रास शुरू हुआ।

जीवन निःसन्देह एक ही है, और आदमी को एक ही जीवन में अपना सारा काम-काज निपटा लेना पड़ता है। इसे भूल जाने की गलती की वही सजा भुगतनी पड़ती है जो महेन्द्र को ईरानी के कारण भुगतनी पड़ी।

एक साधारण जीवन की अत्यन्त असाधारण कथा।

एक ही ज़िन्दगी

समरेश बसु

लगभग एक बीघा जमीन में चहारदीवारी से घिरा एकमंजिला मकान बाहर से जितना खूबसूरत दीखता है, अन्दर की शक्ल उतनी अच्छी नहीं है। दस साल के मकान को नया ही कहा जाएगा। पिछले साल नए सिरे से क्रीम रंग से पोताई करने के कारण बाहर से बदस्तूर चमचम करता रहता है। मकान की उम्र की तुलना में चारेक नारियल, दो आम, एक कटहल, एक देवदार और एक झाऊ के वृक्षों की उम्र बेशक ज्यादा ही होगी। कुछेक अमरूद और बेल के वृक्षों की उम्र पाँच साल से ज्यादा नहीं है। अन्दाज लगाया जा सकता है कि गृहस्वामी ने स्वयं अपने हाथों से इन वृक्षों को रोपा है। पूरब-दक्खिन में भी बगीचा लगाने की जो कोशिश की गई थी, इसका भी अन्दाज लगाया जा सकता है, हालांकि साफ-साफ पता चल जाता है कि उसकी अब उपेक्षा की जा रही है। लाल कनेर, टगर और गंधराज की झाड़ियां शुरू में ही लह-लहा उठी थीं, अब वे काफी फैल गई हैं और मजबूत हो गई हैं। मगर जूही और बेला की झाड़ियां मुरझा गई हैं, उनके पत्ते झड़ गए हैं और फूलने की कोई संभावना नजर नहीं आती है। उनके चारों तरफ बे-शुमार झाड़-झंखाड़ उग आए हैं। लेकिन लाल कनेर की टहनियों और पत्तों की फांक से फूल के गुच्छे झांक रहे हैं।

मकान जमीन की उत्तर-पच्छिम सीमा से सटकर सामने की ओर खड़ा है। दमदम जैसे अंचल में घर के सामने इस प्रकार का चौड़ा रास्ता कि जिससे गाड़ी आ जा सके, किसी जमाने में संभवतः वीरान और सुनसान ही रहता था। लेकिन देश के बंटवारे के बाद कलकत्ते की आखिरी सरहद या वृहत्तर कलकत्ते में इसकी कल्पना करना मुश्किल

है। साइकिल रिक्शा, ठेलागाड़ी और मोटर गाड़ियाँ अनवरत चलती रहती हैं। लोगों के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं। फिर भी इस एक-मंजिले मकान के आसपास अब भी कुछ परती जमीन और बगीचे इधर-उधर बिखरे हुए हैं। साथ ही साथ दो बड़ी-बड़ी झीलें और कुछेक तालाब हैं। उनके आसपास ही कुछ नए-पुराने मकान हैं। यही वजह है कि मकान के अन्दर निर्जनता मँड़राती रहती है। हालाँकि एक किलोमीटर आगे बढ़ा जाए तो विस्थापितों की कॉलोनी, घनी आबादी वाले मुहल्ले और तमाम मकान एक-दूसरे से सटे हुए मिलेंगे। वहाँ निर्जनता की कोई निशानी नहीं है।

मकान के सामने एक बड़ा सा फाटक है। फाटक से जाते ही जमाने पहले का गाड़ी जाने लायक ईंट का बना रास्ता मिलता है, जो बाएँ मुड़कर मकान के पिछवाड़े उत्तर दिशा की ओर चला गया है। वहाँ दो गाड़ियाँ रखने लायक एक बड़ा-सा गैरेज है। लेकिन गाड़ी नहीं है। गैरेज के बाहर, पेड़ के तले छाँह में तीन आस्ट्रेलियाई गाएँ, जो देखने में सचमुच ही बहुत ही सुन्दर हैं, बँधी हैं। वे खड़ी-खड़ी पागुर कर रही हैं, कान हिला रही हैं और दुम हिला-हिलाकर मक्खियाँ भगा रही हैं। गृहस्वामी महेन्द्र सरकार स्वयं तीनों गायों के नजदीक खड़ा है और नीम की दातून से दाँत रगड़ रहा है।

अभी सुबह के साढ़े छः बजे हैं। एक अधेड़ विधवा खटाल यानी गैरेज साफ कर रही है। नारियल के एक दरख्त के नीचे महेन्द्र की पत्नी सुरबाला मिट्टी की नाँद में गायों की सानी तैयार कर रही है। महेन्द्र दाँत रगड़ते हुए चारों ओर निगरानी रख रहा है और बीच-बीच में पेशानी पर बल लिए, कान खड़ाकर सुन रहा है कि घर के अन्दर उसके दोनों लड़के किन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए आपस में झगड़ रहे हैं। बड़ा लड़का सतीश पच्चीस साल का है। उसके बाद है एक लड़की—नन्दिनी, (असल में लड़की का नाम था नन्दरानी। इस तरह का नाम चूंकि आजकल चालू नहीं है, इसलिए लड़की ने जैसे ही

ग्यारहवाँ दर्जा पास किया, अपना नाम बदलकर रख लिया नन्दिनी। महेन्द्र इन मामलों में बाहर से बिलकुल उदासीन रहता है, मन ही मन हँसता है और सिर हिलाकर हामी भरता है। बात तो सही है! नन्दरानी से नन्दिनी सुनने में अच्छा लगता है। लेकिन वह जबान से कुछ नहीं कहता है।) जो तेईस साल की है। पिछले साल उसकी शादी हुई है और उसी वजह से मकान में रंग-रोगन कराना पड़ा था। उसके बाद जो लड़का है उसकी उम्र है इक्कीस साल। नाम है सतीश। तीन संतानों के जन्म लेने के बाद ही सरकारी किरानी महेन्द्र जन्म-निरोध के लिए जी-जान से लग गया था। मगर वह मन ही मन हँसता है और एक गीत गुनगुनाता है—नहीं भुवन का भार तुम्हारे हाथ।···हाथ में भार होता तो इस दुनिया में बहुत-सी बातें होतीं साथ ही साथ सतीश के जन्म के ग्यारह साल बाद, सुरबाला एक और बच्चे को पैदा ही नहीं करती। जन्म-निरोध के तमाम कायदे-कानून को अँगूठा दिखाकर, सुरबाला जब ग्यारह बरसों के बाद फिर गर्भवती हुई तो महेन्द्र के आश्चर्य की तुलना में सुरबाला को कहीं अधिक बोझ का अहसास हुआ था। क्योंकि देह और मन से वह इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। इच्छा या आकांक्षा तो दूर की बात, नई सन्तान को गर्भ में धारण करने के प्रति उसमें तीव्र वैराग्य और वितृष्णा का भाव था।

फिर भी जब सुरबाला को गर्भ रह गया तो उसने ऊब और खीझ के साथ महेन्द्र को असावधानी के लिए कोसा था और क्लिनिक जाकर झंझटों से मुक्त होना चाहा था। लेकिन ग्यारह साल के दरमियान महेन्द्र के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आ गया था। कॉलोनी के पास डेढ़ कट्ठा जमीन पर डेढ़ अदद कमरे का उसका जो मकान था, उसके बदले अपने निवास के लिए, नया मकान बनवाने के लिए, उसने एक बीघा जमीन खरीद ली थी। तब वह चारेक जन-संकुल बस-रूटों की बसों का मालिक हो चुका था। दो प्रेस बिठा लिए थे, उनमें से एक खासा अच्छा बड़ा था। कलकत्ते में कुछेक जो होसियारी फैक्टरियाँ हैं,

उनमें से एक बड़ी होसियारी फैक्टरी का वह मालिक हो चुका था। इसके अलावा कागज के व्यवसाय का कारोबार भी उसने बहुत फैला लिया था।

कैसे यह सब अनहोनी घटनाएँ घटित हुईं, यह बाद की बात है, क्योंकि तुम्हें यह अच्छी तरह मालूम है कि, 'नहीं भुवन का भार तुम्हारे हाथ।' घटना घटित हुई थी, महेन्द्र ने उसे शुभ क्षण में कार्य के रूप में परिणत किया था। हालाँकि गरमी के दिनों में उसके बदन से अधमैली शर्ट, आठ हाथवाली मोटी धोती, पैरों से सस्ती मोटे रबर की चप्पलें और हाथ से कपड़े का एक छोटा-सा थैला कोई हटा नहीं सका है। सरदियों के दिन में उसके बदन पर सूत और ऊन मिली एक चादर या फुटपाथ से खरीदा हुआ एक स्वेटर रहता है। पाँवों में कैनविस के फीते-बँधे जूते। अब भी वह सब उसी तरह रह गया है। दफ्तर के सह-कर्मियों के साथ वह जिस बेचारगी और विनम्रता के साथ पहले पेश [illegible] था, उस व्यवहार में अब भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। [illegible] सेक्रेटरी या अफसरों के सामने अब भी वह हाथ जोड़कर, अत्यन्त व्यस्तता के साथ 'हाँ सर, कहिए सर' के अलावा दूसरी बातें नहीं करता। खटने के मामले में, इस पचपन साल की उम्र में भी, कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकता। ऑफिस के कर्मचारी उससे संतुष्ट हैं। अपने 'महेनदा' से वे सिर्फ दावत की माँग करते रहते हैं। ऊपरवाले साहब भी बीच-बीच में महेन्द्र के सामने अपने शौक और ख्वाहिश का ऐलान करते हैं। कुछ विशेष नहीं, एक-दो बोतल विलायती शराब, चन्दन नगर का पानी-भरा सन्देश, बागबाजार का रसगुल्ला। इसके अलावा तीज-त्योहार के मौके पर मेमसाहब के लिए बनारसी साड़ी।

महेन्द्र किसी प्रकार की आनाकानी नहीं करता। कारण, उसके जीवन के परिवर्तन के साथ ही यह सब अनिवार्य और स्वाभाविक जैसा हो गया है। क्योंकि वही एक बात—'नहीं भुवन का भार तुम्हारे हाथ।'

…तमाम बातें एक-दूसरी से जुड़ी हुई हैं। अतः 'देगा और लेगा।' इस राइटर्स के महान कलकत्ता के तौर पर।…दौलत पैदा करना कोई मामूली बात नही है। महेन्द्र जानता है, इसमें मिलावट विहीन सुख नही है। पीड़ा का भी कोई अन्त नही। तल्खी और अपमान भी बरदाश्त करना पड़ता है। फिर भी 'हे मन ! करो समर्पण। उसे समझ कर अपना।'…

इस मामले में महेन्द्र की कोई गलती न थी और न ही है। वह एहसान फरामोश भी नहीं है। राइटर्स इमारत को वह मन्दिर समझता है, अपने अफसरों को देव-प्रतिमा। पूजा करने और मान-मनौती में वह गलती नहीं करता है। उसके डेढ़ कट्ठे जमीन पर खड़े टाली के मकान की जिन्दगी में, कुछेक सौ रुपये तनख्वाह के हालात में, अविश्वसनीय परिवर्तन आ जाने के बावजूद, महेन्द्र सरकार बाहर से जैसा था, वैसा ही है। यहाँ तक कि सुरबाला में भी, ढेरों जेवरात, साड़ी और दौलत रहने के कारण, सजने-सँवरने के मामले में थोड़ा-बहुत बदलाव आ गया है। कान के दोनों हीरे देखने लायक हैं। गले का हार काफी वजनी है। अभी गाय को सानी लगाने के समय, उसकी वजनी-निखालिस सोने की चूड़ियाँ कलाई के ऊपर चढ़ी हुई हैं। हालांकि यह सब मामूली बात है। लेकिन महेन्द्र ने अपनी पुरानी कलाई घड़ी को, जिसकी संख्या और सुइयाँ धुँधली पड़ गई हैं, अब तक नहीं त्यागा है। लड़के और सुरबाला कपड़े-लत्ते और साज-सज्जा के बारे में शिकायत करते हैं तो महेन्द्र हँसता है और कहता है, "यह सब मेरा युनिफार्म है। लोग मुझे वैरागी कह सकते हैं। सो कहें, मैं किसी की आँख में चकाचौंध पैदा करना नहीं चाहता। मेरे मन में इन सब चीजों की ख्वाहिश नहीं है, बल्कि शान्ति है। यह सब मैं छोड़ नहीं सकता।"

इतना जरूर है कि बाल-बच्चे यह सब नहीं मानते। अखबार के हर रोज के नए-नए विज्ञापनों की तरह रफ्ता-रफ्ता उनके कपड़े-लत्ते में बदलाव आता गया है। मगर गाड़ी ? उहुँ, वह नहीं हो सकती।

फ्रिज, टेलीफोन ? वह सब भी नहीं। वह सब रहेगा सरकार एण्ड सन्स ऑटोमोबाइल एण्ड अदर कन्सर्न के दफ्तर में। फिलहाल टेलीविजन की माँग की जा रही है। नहीं, महेन्द्र हामी नहीं भर रहा है। इससे तो अच्छा है कि टेलीविजन का एक शोरूम खोल दिया जाए। उसके लिए बल्कि कोशिश की जा सकती है। लेकिन घर में बैठकर सिनेमा देखना ? नहीं, यह सब नहीं चलेगा। बाहर-बाहर सिनेमा-थियेटर क्या कुछ कम देख रहे हो ?

सुरबाला इन मामलों में आम तौर से पति का ही साथ देती है। बाल-बच्चों की निगाह में बाप मक्खीचूस और रुचिहीन है—रुपया-पैसा रहने के बावजूद भले आदमी की तरह जीवन जीना नहीं चाहता। महेन्द्र को यह बात मालूम है। वह हँसता है और मन ही मन कहता है, "जाओ, जो बकना है, बको। तुम लोगों की इच्छा से न तो कुछ हो रहा है और न होगा। मैं मर जाऊँगा तो फिर जो मर्जी हो, करना। मैं मरूँगा तो तुम लोगों को 'डेथटैक्स' भी नहीं देना होगा और इसका मैंने इन्तजाम कर लिया है। मर जाऊँगा तो बात तुम लोगों की समझ में आएगी। तब हाँ, अपने परिवार के लिए (पत्नी को वह मन ही मन 'परिवार' ही कहता है और जबान से 'सुरो' कहकर पुकारता है।) भी मैंने पुख्ता इन्तजाम कर दिया है। किसी के सामने उसे हाथ फैलाना नहीं होगा।"

बहरहाल, सुरबाला की ऊब और क्लिनिक जाकर फारिग होने की बात पर लौटा जाए। उसकी इच्छा का पता चलने पर महेन्द्र ने कहा था, "सुरो, एक बार सोचकर देखो। हम अवश्य ही बर्थ कंट्रोल करते आये हैं, मगर जो पेट में आ गया था, उसे कभी नष्ट नहीं करना पड़ा था।"

"सो होने दो," सुरबाला ने कहा था, "पहले कभी नष्ट नहीं करना पड़ा था, इसका मानी यह नहीं कि अभी नष्ट नहीं करूँ। ग्यारह

बरसों के बाद, इस उम्र में मैं नये बाल-बच्चों
कर पाऊँगी।"

महेन्द्र अपनी निरीह भंगिमा में हँस पड़ा।
उसने तुरन्त अपनी और सुरबाला की उम्र का हि
उस समय उसका छियालीसवाँ चल रहा था। सुरबाला का चालीसवाँ। उसने कहा था, "सुरो, तुम्हारी कोई खास उम्र नहीं हुई है, मात्र चालीस की हो।"

"चालीस साल की उम्र तुम्हें मात्र ही लगती है?" सुरबाला ने खीझ भरे स्वर में कहा था। उसके बाद तनिक वैराग्य और लज्जा भरे स्वर में कहा था, "ग्यारह वर्ष बाद अचानक बच्चा होने से लोग-बाग क्या कहेंगे?"

महेन्द्र के चेहरे पर वही हँसी तिर आई थी। कहा था, "बच्चा होगा तुम्हें, इसके लिए मैं अन्यथा नहीं सोच रहा हूँ। फिर लोग-बाग अन्यथा सोचेंगे ही क्यों? और अगर सोचें तो भी क्या बिगड़ता है? तुम्हारी उम्र में तो कितनी ही औरतें बच्चा पैदा करती हैं। इसमें दूसरे को अन्यथा सोचने की कौन-सी बात है?"

"दूसरे की बात जाने दो।" सुरबाला ने हालांकि जरा झुंझलाहट के साथ कहा था मगर दूसरे ही क्षण विस्मयपूर्ण आँखों से ताकते हुए पूछा था, "तुम्हें एकाएक इस उम्र में बाप बनने का शौक क्यों हुआ? तुम्हारे इस रुझान की बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं थी।"

महेन्द्र की निरीह हँसी जरा और चौड़ी हो गई थी। कहा था, "सुरो, मेरा तो कहना यही है कि नहीं भुवन का भार तुम्हारे हाथ। मैं कहता हूँ, यानी रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कहना है। एक व्यक्ति जब आ गया है तो उसे फेंक क्यों दूँ? इसके अलावा एक बार सोचकर देखो सुरो, हमारे सुदिन में आ रहा है और मेरा चेहरा देखना चाहता है।"

सुरबाला ने तुरन्त झुंझलाकर कुछ कहना चाहा था लेकिन

फ्रिज. हरे की ओर ताककर चुप हो गई थी। गर्भ-धारण के संस्कार ने उसके मन की दिशा बदल दी थी और उसके मन में एक नई संभावना का विचार भी उत्पन्न हुआ था। महेन्द्र के चेहरे की ओर देखकर उसने मानो उसके भावों को पढ़ लिया था—गर्भ के नए भ्रूण में सुदिन की नई संभावना सौभाग्य के रूप में आ रही है। सुरबाला के रुष्ट और ऊबभरे चेहरे पर आहिस्ता-आहिस्ता हँसी तिर आई थी, आँखें भी खुशी से दमक उठी थीं और क्षण-भर में ही चालीस वर्ष की, चतुर्थ बार गर्भिणी नारी ने सलज्ज हंसी हँसते हुए कहा था, "मन की बात साफ-साफ क्यों नहीं कहते ? मैंने क्या इतना कुछ सोचा था।" और उसने अपने मुँह में साड़ी की कोर थाम ली थी।

महेन्द्र ने कहा था, "फिर भी हकीकत यही है कि मैंने असावधानी से काम नहीं लिया था, सुरो। इसका मतलब समझीं ? सावधानी की ... कहीं न कहीं कोई काट है, अपने काम के सिलसिले में यह बात मैं ... तरह समझ रहा हूँ। इसीलिए तो कह रहा हूँ, इतनी सावधानी ...तने के बावजूद जब एक व्यक्ति आ रहा है तो इसमें निश्चय ही ...त का हाथ है।"

"समझ गई, समझ गई।" सुरबाला पति को खामोशकर, उठकर खड़ी हो गई थी और होंठ काटकर हँसती हुई बोली थी, "पंजाबियों की दुकान से चार किस्म का अचार लेते आना, मेरे मुँह में बड़ी ही अरुचि पैदा हो गई है।" यह कहकर वह सामने से चली गई थी।

महेन्द्र हँस दिया था। इस नये मकान की नींव डालने के बाद जब दो कमरे करीब-करीब तैयार हो चुके थे तो इसी मकान के एक कमरे में नीतू अर्थात् नीतिश का जन्म हुआ था और महेन्द्र की बात सच साबित हुई थी। उसके किसी कारोबार में मन्दी नहीं आई थी बल्कि तेजी के तौर पर सरकार एण्ड सन्स ऑटमबाइल का नया कारोबार—तमाम भारत के परिवहन साधन—चार अदद लेलैण्ड हैवी ट्रक चालू हो गई थी। एक नया बुक-बाइंडिंग कारखाना खुल गया था जिसमें कल-

कत्ते की नामी-दामी पत्र-पत्रिकाओं और प्रकाशकों का काम होता है। सिर्फ वहीं से आजकल साल में कुल लाभ अढ़ाई लाख रुपया होता है। कागज की कटिंग से वाइंडिंग कारखाने के औरत मर्द श्रमिक कर्मचारियों के पूजा के तीन महीने का बोनस, घर का कपड़ा-लत्ता और लोक-लौकिकता का खर्चा निकल आता है। पिछले साल लड़की की शादी के समय सगे-संबंधियों को इस घर में टिकाकर आमिप-निरामिष हर तरह का खाना खिलाया था। इसके अलावा कलकत्ते के एक होटल में लगभग तीन सौ व्यक्तियों को साहबी खाना और पेय पदार्थ की दावत दी थी। उसके लिए अंग्रेजी में अलग से कार्ड छपवाये गये थे। शादी में कुल मिलाकर एक लाख तीस हजार रुपये खर्च हुए थे। आयकर विभाग को खर्च के मद में तीस हजार रुपया दिखाया गया था। अलबत्ता यह वैसा कोई चालाकी भरा आश्चर्यजनक काम नहीं था। लोग बेवकूफ नहीं हैं, वे सब कुछ समझते हैं।

लेकिन महेन्द्र के तौर-तरीके, आचार-विचार या पोशाक में कोई फेर-बदल नहीं आया है। यहाँ तक कि होटल की दावत की रात, खाने-पीने की सामग्री और पेय पदार्थ परोसनेवाले लोगों की पोशाक महेन्द्र की पोशाक से साफ-सुथरी थी। जो लोग सम्मिलित हुए थे, उनकी बीवियों को विश्वास नहीं हुआ था। महेन्द्र के दोनों लड़के, सतीश-मतीश तथा कारोबार से जुड़े कुछ शुभचिन्तकों ने सबका स्वागत-सत्कार किया था। अंग्रेजी कार्ड में हालांकि छपा हुआ था—मिस्टर एण्ड मिसेज महेन्द्र सरकार कॉरडिअली इनवाइट यू', लेकिन सुरबाला वहाँ मौजूद नहीं थी। तब हाँ, लड़की और दामाद मौजूद थे। लड़की के बैठने के लिए एक खास आसन का इन्तजाम किया गया था।

अभी साढ़े छः बजे महेन्द्र नीम की दातून से दाँत रगड़ रहा है सुरबाला गायों के लिए सानी तैयार कर रही है। एक अधेड़ नौ

गैरेज यानी खटाल साफ कर रही है। महेन्द्र समीप ही खड़ा होकर यह सब देख रहा है और बीच-बीच में पेशानी पर बल लाकर घर के अन्दर से तिरकर आती मती और सतु को—यानी मतीश और सतीश को—जो झगड़ते हुए आपस में ऊँची आवाज में तर्क कर रहे हैं, बातें सुन रहा है।

कुछ देर पहले महेन्द्र गायों की ओर से नजर हटाकर, पूरब के नारियल और झाऊ की फाँक से झिलमिलाते रक्तिम सूरज और धूप की ओर ताक रहा था। लेकिन चैत की शुरुआत में सूर्य का रंग अधिक देर तक रक्तिम नहीं रहता। देखते ही देखते आग के भभकते सफेद गोले जैसा हो जाता है और पल-पल दिन चढ़ने लगता है। अभी सुबह के साढ़े छः से अधिक समय नहीं हुआ है। लेकिन लगता है, वेला काफी ढल चुकी है।

महेन्द्र को यह समय बड़ा ही सुहाना लगता है। दिन-भर की तरह-तरह की चिन्ता और घबराहट, एक शब्द में जिन्हें तनाव कहा जाता है, और जिस तनाव को अपने साथ ले वह रात में सोने जाता है और उसे कभी गहरी नींद नहीं आती, उसकी सारी ग्लानि और बेचैनी सवेरे आँख खुलते ही दूर हो जाती है। बगीचे में बया और बुलबुल की कोई कमी नहीं है। चैत की भोर में, अब भी कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। इस समय हवा ठण्डी रहती है और फर्र-फर्र चलती रहती है। हवा में वैसा कोई पागलपन नहीं रहता। काली आँखों वाली विशालकाय रंगीन आस्ट्रेलियाई गायों की ओर ताकने पर मन की गहराई में एक प्रकार के सुख और व्यथा आस-पास खड़े होकर पेंग मारते रहते हैं। व्यथा क्यों है, महेन्द्र को यह मालूम नहीं। इतना ही समझ में आता है कि गायों की ओर ताकते ही उसे अपने बचपन की याद आ जाती है। हालांकि आस्ट्रेलियाई गायों की बात न तो वह उन दिनों सोच सकता था, न उनके चेहरे की कल्पना कर सकता था और न जानता था कि ये आश्चर्यकारक सुन्दर प्राणी उसके जीवन में कब

आयेंगे। बल्कि इसके बदले उसकी आँखों के सामने पूर्व बंग के उस गाँव का दृश्य उमड़ आता था जहाँ उसकी माँ छोटी-छोटी सफेद दो-तीन दुबली-पतली गायों का दूध अपने हाथ से दुहकर उन्हें खाना खिलाती और चरवाहे के हाथ सौंप देती। आस-पास के और कई घरों की गायों का झुण्ड ले, इकहरा, लंबे-लंबे रूखे बालों वाला चरवाहा नंगे बदन, हाथ में लाठी थामे उन्हें दलदल भूमि के किनारे के मैदान में चराने ले जाता। बाबूजी हाथ में नारियल का हुक्का थामे, आँखों पर ऐनक चढ़ाए, ओसारे पर बैठे-बैठे बन्दर हाट से लाये गए चार-पाँच दिनों के बासी कलकत्ते के अखबार पढ़ते रहते थे। महेन्द्र और उसका भाई ओसारे के एक छोर पर बैठ सिर हिला-हिलाकर स्कूल का सबक पढ़ते रहते थे। उम्र से बड़ी बहन तब तालाब के किनारे होती थी। दादी बुड़बुड़ाकर दीदी को डाँटती। क्योंकि दीदी अकेली नहीं होती थी, आस-पास की और भी बहू-बेटियों के साथ सुबह से तालाब के किनारे पानी के खेल की महफिल गुलजार करने लगती थी। उनकी हँसी और बातचीत का कोई ओर-छोर नहीं था। जितनी ही पानी की कलकल आवाज होती उनकी खिलखिलाहट और धींगामस्ती की मात्रा उतनी ही बढ़ने लगती थी।

बाबूजी एक पाठशाला के शिक्षक थे। थोड़ी-बहुत जमीन थी, दो छोटे-छोटे तालाब, पुश्तैनी मकान। जायदाद के नाम पर और कोई चीज उनके पास न थी। फिर भी लगता है, बचपन बढ़िया खान-पान, पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद में बीता है। महेन्द्र से दो वर्ष बड़े भैया ने हाई स्कूल से बदस्तूर मैट्रिक पास किया था। महेन्द्र ने दो साल बाद। उसके बाद ही कलकत्ते की चिन्ता आ गई। इतना जरूर है कि कुछ दिनों तक राजनीति की ओर भी उसका रुझान था। और वह रुझान गुप्त सशस्त्र विद्रोह की ओर ही अधिक था। परन्तु पिताजी गाँधी के पक्के भक्त थे। महेन्द्र को याद है, बाबूजी बीच-बीच में अंग्रेजी में कहा करते थे—हि इज फादर ऑफ द नेशन। बड़ा भाई नरेन्द्र कहता—

हथियारों का मुकाबला हथियारों से करना होगा । महेन्द्र को भैय। गा। वात पर ही आस्था थी ।

अब महेन्द्र को मालूम है, राजनीति एक तरह का पेशा है । कच्ची उम्र में उसके लिए जो शौक था, जीवन जीने की आवश्यकता के कारण वह शौक कुछ ही दिनों में खत्म हो गया । कलकत्ते का रास्ता शुरू में बड़े भाई ने ही दिखाया था । उसके बाद महेन्द्र आया था । लड़ाई उस समय हालाँकि शुरू हो गई थी मगर देश विभाजन की बात वाकई सोची भी नहीं गई थी । भैया को बैंक में नौकरी मिल गई थी । महेन्द्र को शुरू में क्लाइव स्ट्रीट के एक विलायती फर्म में नौकरी मिली । उसके बाद सरकारी नौकरी । कम्पनी की नौकरी का मूल्य पुराने चावल के मानिन्द था ।

बड़ा भाई नरेन्द्र अब भी बैंक में नौकरी करता है । यादवपुर में उसने मकान बनवाया है । शुरू में भाई की हालत महेन्द्र से कहीं अच्छी थी । पक्का मकान भी उसने महेन्द्र से पहले बनवा लिया था । उन दिनों बड़ा भाई महेन्द्र से स्नेह करता था, आने-जाने का सिल-सिला भी था । उसके बाद महेन्द्र ने जब तरक्की करना शुरू किया, बड़ा भाई धीरे-धीरे दूर हटता गया । अब सरोकार रखना तो दूर की बात, महेन्द्र की लकड़ी की शादी में बड़ा भाई, भाभी और उनके बाल-बच्चे शामिल नहीं हुए । भैया साफ-साफ कहता है, "मेहन तो चोर है । धोखाधड़ी से दौलत पैदा की है । उस दौलत को ज्यादा दिनों तक भोग नहीं सकेगा ।"

सुरबाला शुरू में गुस्से से उबल पड़ती थी । महेन्द्र उसे शान्त करता, "उफ्, बकने दो । सच्चाई तो यही है कि मैंने धोखाधड़ी नहीं की है । मौके से लाभ उठाया है । अब भैया अगर सोचते हैं, मैं फरेबी हूँ तो उनसे झगड़ा करना कोई मानी नहीं रखता ।"

लेकिन नन्दिनी की शादी में भैया-भाभी का न आना महेन्द्र के हृदय को भी व्यथित कर गया था । आदमी की ईर्ष्या और कटुता के अनुभवों

से वह गुजर चुका है। फिर भी अपने सगे भाई और भाभी का हृदय इतनी ईर्ष्या और द्वेष से भर जाएगा, इसका उसे अनुमान नहीं था। वह स्वयं सुरबाला के साथ गया था और उन्हें निमंत्रित कर आया था। उन लोगों के पूर्व बंग के रिवाज के अनुसार एक सप्ताह पहले से ही घर में आकर रहने को कह आया था। भैया-भाभी के चेहरे की मुस्कराहट और सहमति से कुछ समझ में नहीं आया था। इसका तो मतलब यही निकलता है कि महेन्द्र के लिए अब भी इस दुनिया का बहुत-कुछ सीखना बाकी रह गया है। हालाँकि उसके तमाम कारोबार, उसके दो लड़कों के अतिरिक्त एक अत्यन्त कुशल एकाउन्टेन्ट और मोटी तनख्वाह पाने-वाले कम से कम सात ऊँचे ओहदे के लोग चला रहे हैं, लेकिन फिर भी हर जगह उसकी सजग और सतर्क दृष्टि रहती है। किसी भी तरह उसकी आँखों को धोखा नहीं दिया जा सकता है। अफसर तुल्य कर्मचारी और निपुण एकाउन्टेन्ट में से हरेक की आँखों की भाषा और हँसी को वह अच्छी तरह पहचानता है। कौन क्या गड़बड़ी कर रहा है, रुपया कहाँ चलान हो रहा है, राइटर्स के मामूली किरानी की आँखों को इन मामलों में धोखा नहीं दिया जा सकता है। थोड़ी-बहुत चोरी हर आदमी करता है। उसके लड़के भी करते हैं। जहाँ भी नकद रुपये का लेन-देन होता है, वहीं कुछ न कुछ इधर-उधर होता है। लेकिन उसकी भी एक सीमा है। बस उतना ही होना चाहिए कि अखरे नहीं। हिसाब में दो पैसे की गड़बड़ी की है, ले जाओ। लेकिन सीमा-अतिक्रमण करने की कोशिश करोगे तो रास्ता बन्द कर दिया जाएगा।

उस दृष्टि से देखा जाए तो महेन्द्र लोगों का चरित्र अच्छी तरह समझता है। सरकार के उच्च पदाधिकारियों की राई-रत्ती वह जब कि समझ लेता है तो फिर अपने कर्मचारी का चरित्र समझना कौन-सी बड़ी बात है? उसकी निरीह सादगी के अन्तराल में एक कठिन शक्ति सक्रिय रहती है, यह बात उसके सभी कर्मचारियों को मालूम है। इसका मतलब यह नहीं कि महेन्द्र सबको हमेशा अविश्वास की निगाह से देखता

है। जीवन के अनुभवों से उसे यह अहसास हुआ है कि दुनिया में हर कदम पर सब पर अविश्वास नहीं किया जा सकता है। ऐसा वह करता भी नहीं। उसके लड़कों के अलावा भी कई ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर वह विश्वास करता है। उन लोगों को मालूम है कि कलकत्ते में उसके कई मकान हैं, बहुमंजिली इमारतों में कहाँ-कहाँ उन्होंने फ्लैट खरीदे हैं, सुन्दरवन के किस इलाके में कितनी जमीन है। यहाँ तक कि दो नम्बर के नकद रुपये का हिसाब भी उन्हें मालूम है। उनकी आँखों में धूल नहीं झोंकी जा सकती बल्कि उनके सहयोग की आवश्यकता ही रहती है। लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं कि महेन्द्र ने उन रुपयों को कहाँ रखा है। दोनों लड़कों को भी इसकी जानकारी नहीं है। महेन्द्र उन रुपयों को बैंक के वोल्ट या घर में नहीं रखता। इसकी जानकारी सिर्फ उसे ही है। सुरबाला को भी उसने इसकी मोटे तौर पर जानकारी दे दी है।

महेन्द्र ने नीम की दातून से दाँत रगड़ते-रगड़ते भौंह सिकोड़कर एक बार घर की ओर ताका। उसकी दीर्घकालीन निरीह मुख-मुद्रा पर क्रोध की झलकजरा भी नहीं आती है, हालाँकि उसके अन्दर क्रोध, घृणा इत्यादि का वास है। उसके पचपन साल के मुटापा बढ़े औसत लम्बे कद के शरीर में निरीह भाव है। सिर के बालों का रंग धूसर है और वे पतले हो गए हैं। काठी सख्त या मजबूत नहीं है, मगर दुर्बल या बीमार जैसी भी नहीं। जीवन जीने की छाप उसके जिस्म या चेहरे पर इस कदर है कि अपनी उम्र से अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा ही बूढ़ा दीखता है। खड़े होने की भंगिमा तनकर खड़े होने जैसी नहीं है, कंधा जरा ऊपर की ओर झुका रहता है। नाक-नक्श देखने से लगता है, किसी जमाने में देखने में अच्छा ही रहा होगा। आँखें अब भी बड़ी-बड़ी हैं और बीमारी की कहीं छाप नहीं है। नाक तीखी नहीं, मगर खड़ी है। सारे दांत अब भी मौजूद हैं, फिर भी जब-जब मौसम में परिवर्तन आते हैं तो कई बरसों से दांत की जड़ें सूज जाती हैं और तकलीफ देती हैं। साल में कम से कम दो बार दांत के डॉक्टर के पास जाना पड़ता है।

आजकल बीच-बीच में रक्त-चाप भी बढ़ जाता है। उसके लिए भी जाँच करानी पड़ती है, दवा खानी पड़ती है। डॉक्टर एक ही बात की तारीफ करता है और वह यह कि महेन्द्र किसी प्रकार के नशे का सेवन नहीं करता। कभी वह चार-पाँच बरसों तक सिगरेट पीता रहा, उसके बाद एक साल तक सुंघनी और पान का सेवन करता रहा। अब कुछ भी इस्तेमाल नहीं करता। बड़े नशे का सवाल पैदा ही नहीं होता। फिर भी महेन्द्र के चलने-फिरने के तौर-तरीके में तीव्रता का भाव नहीं है। भले ही पाँव घसीट कर चलने जैसा भाव नहीं है मगर मंथरता और धीरता अवश्य रहती है। मानो उम्र के बोझ से थोड़ा-बहुत झुक गया हो। हालाँकि ऐसा होना नहीं चाहिए था। दरअसल यह सब जीवन जीने की लम्बे अरसे की विशेष भंगिमा और अभिव्यक्ति है।

महेन्द्र ने आँख घुमाकर सुरबाला की ओर देखा। सुरबाला भूसा, आटा, चना, रात के भात का माँड़ और मशीन से कटे पुआल के छोटे-छोटे टुकड़ों को आपस में मिलाकर तीनों नाँदों में बराबर-बराबर रख रही है। तीनों गाएँ उसी ओर ताक रही हैं।

महेन्द्र की तुलना में सुरबाला नाटी है पर उसकी काठी अब भी मजबूत है। कान और ललाट के पास के कुछ बालों में सफेदी आ गई है मगर ज्यादातर बाल काले ही हैं। चेहरे का लावण्य अभी बिलकुल मलिन नहीं हुआ है, आँखों के नीचे और ललाट पर कुछ सलवटें पड़ गई हैं। काले रंग की होने के बावजूद किसी जमाने में सुरबाला अनायास ही आँखों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। कलकत्ते में नौकरी करने के दौरान, देश के बँटवारे के पूर्व, देस जाकर महेन्द्र ने विवाह-रात्रि में पहले-पहल सुरबाला को देखा था। लड़की की पसन्दगी उसके पिता ने की थी। उसके पिता का कहना था, दरअसल माँ काली ही लक्ष्मी हैं। सरस्वती भी वे ही हैं। सुरबाला सचमुच ही लक्ष्मी है और इस सम्बन्ध में महेन्द्र को कोई सन्देह नहीं है। बड़े भाई नरेन्द्र की शादी महेन्द्र की शादी के चार साल पहले हुई थी। देश-विभाजन के पहले ही

माँ का देहान्त हो चुका था। बाबूजी जिन्दा थे। कलकत्ता आने पर शुरू में वे बड़े भाई के घर में टिके थे। तब बड़े भाई का यादवपुर में पक्का मकान बन चुका था। महेन्द्र का दमदम रेल-लाइन के इस पार डेढ़ कट्ठे जमीन पर मिट्टी की दीवार और टाली के छाजन का मकान था। एकाध वर्ष बाद जाने क्या हुआ कि बाबूजी महेन्द्र के पास चले आए। बाबूजी ने यद्यपि मुँह खोलकर कुछ नहीं बताया, फिर भी महेन्द्र का अनुमान था कि भाभी के बर्ताव से बाबूजी के मन में तकलीफ पहुँची है। वह स्वयं भी डरता था कि सुरबाला टाली के उस मकान में बाबूजी के साथ अमन-चैन से रह पाएगी या नहीं।

महेन्द्र सुरबाला की ओर ताककर अनमनेपन में डूब गया था। उसने फिर सुरबाला की ओर गौर से देखा। सुरबाला अभी तीनों गायों के लिए अलग-अलग बनी नाँदों में सानी रख रही है। खाना खाने के पहले गाएं सुरबाला के गाल और माथे को सूँघकर चाट रही हैं। सुरबाला कह रही है, "लाड़ बाद में करना, पहले खाना खा लो।"

विदेशी गाएँ सुरबाला की हर बात समझ जाती हैं। गाय पालने का शौक सुरबाला को ही था। लेकिन तब इन विदेशी गायों के बारे में सोचा भी नहीं था। महेन्द्र को उसके विभागीय सेक्रेटरी साहब ने इस बात की सलाह दी थी। यह सुनकर कि वह गाय खरीदना चाहता है, उन्होंने कहा था, "देखो महेन्द्र, गाय पालना है तो फिर आस्ट्रेलियाई गाएँ ही खरीदो। अच्छी तरह लालन-पालन करोगे तो ज्यादा दूध ही नहीं मिलेगा, घर की शोभा भी बढ़ेगी। बड़े-बड़े मारवाड़ी आजकल वही गाय पालते हैं। सो घर की शक्ल जितनी ही साहबीनुमा क्यों न हो मगर गाय का लालन-पालन करना वे ही जानते हैं। न्यू अलीपुर जैसी जगह के तमाम पैलेसों में आजकल उसी किस्म की गाएँ पाली जाती हैं। लक्ष्मी की दया से तुम्हारे पास पैसे का अभाव नहीं है। अगर तुम कहो तो मैं खुद हरिणघाटा की डेयरी से बातचीत कर इसका इन्तजाम करा दूँ। हरेक की कीमत तकरीबन हजार रुपया लगेगी। हमें भी बीच-बीच

मैं तुम्हारे घर की गाय के दूध का घी, और सन्देश चखने को मिलेगा।"

महेन्द्र को बात जँच गई थी। घर आकर सुरबाला से कहा तो वह राजी हो गई। खूबसूरत, बड़े-बड़े डील के अच्छे बछड़ों को देखकर उसे खुशी हुई थी। उनके गर्भाने का जब वक्त आता था तो उन्हें बेलगछिया के एक मुसलमान के झोंपड़े में ले जाना पड़ता था। उसका एकमात्र कारोबार था तीन भिन्न-भिन्न नस्लों के सांड़ों से गायों को गर्भवती कराना। उसके आस्ट्रेलियाई सांड़ को देखकर महेन्द्र का कलेजा कांप उठा था। मटियाले और काले रंग से मिला-जुला उसका शरीर जितना विशाल था, आंखें भी उसी तरह सिंदूर जैसी लाल-लाल थीं। भय से गाएं भी जमीन पर बैठ गई थीं। उसके बाद सांड़ के मालिक उस मुसलमान ने बांस का मचान बनाकर गायों को खड़ी कर उसमें बांध दिया था। तब सांड़ ने अपना काम किया था। महेन्द्र ने सोचा था, कहीं गायों की मौत न हो जाए।

अब सोचता है तो हँसने का मन करता है। गायों की मौत नहीं हुई थी, बल्कि उन्होंने अच्छी तरह ही गर्भ-धारण किया था। उस समय सुरबाला ने गायों का भरपूर सेवा-यत्न किया था। बछड़ा जनने के वक्त खुद ही धाय का काम किया था। उस समय सुरो का चेहरा देखने लायक था। घर में गाएं न लाई जातीं तो सुरो के उस चेहरे और चरित्र का पता ही नहीं चलता। सुरो पर निगाह जाते ही उसे बचपन के समय मां के द्वारा गो-सेवा की बात याद आ जाती है। सुरो मां की तरह ही अहलेस्सुबह जगकर दूध दुहती है। इसके लिए एक गैर बंगाली ग्वाले के साथ इन्तजाम किया गया है। वह भी उसी समय आता है और दूध लेकर चला जाता है। घर के लिए भी थोड़ा-बहुत रख लिया जाता है।

महेन्द्र भी पौ फटने के पहले ही सुरबाला के साथ जग जाता है और ... दातून से मुंह धोता है ... सुरबाला को काम ... देख रहा है और ... रहा है, सुरबाला

के अन्दर एक गुण है और वह यह कि गृहस्थी के हर काम-काज में अपने आपको ढाल लेना। असुविधा भी होती है तो आसानी से इसका अहसास नहीं होने देती है। मसलन अभी देखकर कौन कहेगा कि इस स्त्री के पास कम से कम एक सौ रत्ती सोने के जड़ाऊ गहने हैं? इसी तरह उसने बाबूजी की सेवा मृत्यु के आखिरी दिन तक डेढ़ कट्ठे की माटी-टाली के मकान में की थी। बाबूजी शान्ति के साथ ही मरे थे। बशर्त्ते मृत्यु को यदि शान्ति कहा जाए। भले ही बीमारी की तकलीफ तो दूर नहीं की जा सकती है।

महेन्द्र ने मुग्ध आँखों से सुरबाला की ओर ताका। संतानधारण की क्षमता अब उसकी पत्नी में न रही। महेन्द्र में भी अब कोई खास काम-वासना नहीं है। उसमें कभी भी काम-वासना की अधिकता न थी। अब उनका दांपत्य जीवन बहुत कुछ आस-पास बैठकर सुख-दुःख, हिसाब-किताब, हाट-बाजार, खान-पान, ज्वर-बुखार इत्यादि की चर्चा तक सीमित रह गया है। सुरबाला अब भी अपने हाथों से रसोई र पति और बाल-बच्चों को खिलाती है। घर पर काम-धाम लिए दो से अधिक आदमी नहीं रखे हैं। अधेड़ विधवा सरला का काम कर रही है और एक पन्द्रह-सोलह साल का लड़का र के अन्दर चूल्हा सुलगाकर दूध गरम कर रहा है।

इसी बीच गैरज के पीछे बछड़ों ने रँभाना शुरू कर दिया है। सुरबाला ने जल्दी-जल्दी नादों में हाथ चलाते हुए तेज आवाज में कहा, "जाती हूँ भैया, तुम लोगों को छोड़ देती हूँ।" और वह सीधी खड़ी हो गई। कमर ऐंठ गई है। सीधी खड़ी हो वह कुछ लहमों तक खड़ी ही रही और फिर गैरेज के पिछवाड़े की ओर चली गई। देखते न देखते तीन रंग-बिरंगे बछड़े दौड़ते हुए आए, अपनी-अपनी माँ के थनों में सिर मारकर चूचुक से दूध पीने लगे। क्षण-भर के लिए सानी खाना भूलकर गायों ने गरदन घुमाई और माथा झुकाकर बछड़ों को चाटा।

महेन्द्र ने देखा, सुरबाला गैरेज के पिछवाड़े से निकल सामने आई।

तभी उसके कानों में नये सिरे से फिर मतो और सती के झगड़े के शब्द आए। उसकी भौंहों पर बल पड़ गए, लेकिन उसने सुरबाला से कहा, "तुम कमर के दर्द की बावत बता रही थी। आज सरला ही सानी-पानी करती तो अच्छा रहता।"

"उम्र ढल रही है, अब बहुत-कुछ होगा।" सुरबाला बोली, "ऐसा हो तो भी काम पड़ा हुआ नहीं रहने दिया जा सकता है। केवल सानी-पानी की ही बात नहीं है, दुहेगा कौन ?" सुरबाला चेहरे पर मुसकराहट लिए नल की ओर चली गई। महेन्द्र भी उसके पीछे हो लिया और बोला, "जिस ग्वाले का गोपाल या कुछ ऐसा ही नाम है, उसने कहा था कि वह दुह दिया करेगा।"

ग्वाला यानी जो दूध ले जाता है। सुरबाला ने नल के छोटे से चबूतरे पर खड़ी हो जैसे ही उसकी टोंटी खोली, पानी बाहर निकल आया। बगीचे के काम के लिए ही किसी जमाने में नल लगाया गया था—नल की टोंटी में पाईप लगाकर बगीचे को सींचने के लिए। वह मुँह-हाथ धोते-धोते बोली, "गोपाल नहीं, महावीर। सो मैं दुहने में जब एकदम असमर्थ हो जाऊँगी तो महावीर दुह दिया करेगा।"

सरला गैरेज की खटाल की सफाई करते-करते बोली, "थन में जो-सो आदमी हाथ लगाए तो गाय दूध देना नहीं चाहती। देती है तो भी उसकी तादाद कम हो जाती है। सभी क्या हर गाय को दुह सकता है?"

महेन्द्र का चेहरा सरला की ओर था। उसके बाद सुरबाला की ओर ताका। मुँह के कड़ुवे थूक को थूककर कहा, "हाँ, इस तरह की बात सुनने को मिली है। जाना-पहचाना ग्वाला न हो तो गाय पहले की तरह दूध देना नहीं चाहती। लेकिन थन में दूध रहेगा तो गाय उसे अपनी इच्छा से कहाँ रखे रहेगी?"

सुरबाला ने महेन्द्र की ओर ताका। उसकी आँखों में एक रहस्यभरी आभा खेल गई, उसके बाद वह हँस पड़ी। महेन्द्र इस हँसी और आँखों की दृष्टि से अपरिचित नहीं है। इससे सुरबाला का [illegible] परि-

ह्रास प्रमाणित होता है जो सबके सामने कहा नहीं जा सकता। महेन्द्र आगे बढ़कर सुरबाला के पास चला आया और बोला, "तुम कुछ कहना चाहती थीं ?"

सुरबाला ने सरला की ओर एकबार देखते हुए मद्धिम स्वर में कहा, "औरत क्या अपने आपको हर मर्द को सौंप देती है ? उसमें भी भावना की बात रहती है।"

अविश्वसनीय धन उपार्जन करनेवाले निरीह महेन्द्र की झुकी आँखों में संशय और जिज्ञासा का भाव कौंध उठा। बोला, "भावना ?"

"हां; तुमने सुना नहीं है कि गाय-बछड़े में प्रेम रहे तो वह जंगल में जाकर भी दूध देती है।" सुरबाला ने कहा, "सारा दूध प्राप्त करना हो तो प्रेम की आवश्यकता पड़ती है वरना थन में भरा हुआ दूध रहने पर भी गाय उसे बाहर निकालना नहीं चाहती।" यह कहकर अपने कहने के अन्दाज में बदलाव लाकर बोली, "लो, मुंह धोलो, मैं जाकर रसोई का इन्तजाम करूँ।"

महेन्द्र के चेहरे से संशय का भाव पूरी तरह दूर नहीं हुआ, हालांकि भावना की बात का उसने बहुत-कुछ अनुमान लगा लिया। हर औरत को जिस तरह हर मर्द सुखी नहीं कर सकता, उसी तरह जो-सो व्यक्ति हर गाय को दुह नहीं सकता। उसके बाद उसने भौंहों को सिकोड़ कर कहा, "तुम्हारे दोनों लड़के रात बीतते न बीतते किसलिए झगड़ना शुरू कर देते हैं ?"

"झगड़े की बात वे ही जानें। सुरबाला ने निर्विकार स्वर में कहा, "इसीलिए तो तुमसे कहती हूँ कि इन लोगों की शादी करा दो।"

सुरबाला यह बात बहुत बार कह चुकी है। घर की ओर जाती सुरबाला की ओर ताकते हुए महेन्द्र ने कहा, "शादी करा देने से ही उनका झगड़ा खत्म हो जायेगा ?"

"झगड़ा खत्म नहीं होगा।" सुरबाला घर के पिछवाड़े के दरवाजे

की ओर जाती हुई बोली, "तब शायद वे अपनी-अपनी पत्नियों से ही झगड़ा करेंगे।"

बाप रे! वह तो और भी भयंकर बात होगी। उस समय घर में टिकना भी मुश्किल हो जाएगा। लेकिन असली तथ्य क्या यही है? महेन्द्र के मन की जटिलता और अधिक गहरी है। उसकी आँखों के सामने बड़े भाई नरेन्द्र का चेहरा तिर उठा। शादी के पहले जब दोनों व्यक्ति मेस में रहते थे उस समय भैया महेन्द्र से हर वक्त डाँट-फटकार के स्वर में बातचीत करता था। महेन्द्र को हालाँकि मन ही मन ऊब का अहसास होता था मगर वह जबान से कुछ नहीं कहता। तभी से उसके चरित्र में खामोशी और निरीहता का भाव आ गया था। इसका मतलब यह नहीं कि वह अन्दर-अन्दर निर्विकार था। उसके बाद जब भैया की शादी हो गई तो महायुद्ध की समाप्ति के पहले ही वह अपने लिए अलग से किराये का मकान ले वहाँ चला गया। झगड़ा-टंटा नहीं हुआ था। एक अनिवार्य घटना की तरह ही भैया महेन्द्र को मेस में रखकर, किराये का मकान ले देश से भाभी को ले आया था। महेन्द्र ने सोचा था, भैया अब उसे घर पर बुला लेगा। भैया ने ऐसा कभी नहीं कहा। भाभी को ले आने के बाद, महीने में एक बार, रविवार को अपने घर पर खाना खिलाने बुलाता था। शुरू में महेन्द्र ने भैया के आचरण को, अनायास ही अलगाव के तौर पर स्वीकार नहीं किया था। मन ही मन उसे विस्मय हुआ था, अभिमान हुआ था और तकलीफ का भी अहसास हुआ था। लेकिन यह सब बात कभी उसने किसी को नहीं बताई। निर्विकार भले ही न हो मगर निरीह भाव से गृहस्थी के स्वरूप को पहचानने की कोशिश की थी।

घर के अन्दर मनी और सतु की आवाज बन्द हो गई। महेन्द्र समझ गया, सुरबाला ने जाकर बीच-बचाव किया है। नल की टोंटी खोल उसने कुल्ला किया। मसूड़े के दाँत से दातून को बीच से चीरकर काफी देर तक आवाज करते हुए जीभ छीलता रहा। उसके बाद मुंह

प्रमाणित होता है जो सबके सामने कहा नहीं जा सकता। महेन्द्र
ो बढ़कर सुरबाला के पास चला आया और बोला, "तुम कुछ कहना
हती थीं?"

सुरबाला ने सरला की ओर एकबार देखते हुए मद्धिम स्वर में कहा,
"औरत क्या अपने आपको हर मर्द को सौंप देती है? उसमें भी भावना
की बात रहती है।"

अविश्वसनीय धन उपार्जन करनेवाले निरीह महेन्द्र की झुकी आँखों
में संशय और जिज्ञासा का भाव कौंध उठा। बोला, "भावना?"

"हाँ; तुमने सुना नहीं है कि गाय-बछड़े में प्रेम रहे तो वह जंगल
में जाकर भी दूध देती है।" सुरबाला ने कहा, "सारा दूध प्राप्त करना
हो तो प्रेम की आवश्यकता पड़ती है वरना थन में भरा हुआ दूध रहने
पर भी गाय उसे बाहर निकालना नहीं चाहती।" यह कहकर अपने
ने के अन्दाज में बदलाव लाकर बोली, "लो, मुँह धोलो, मैं जाकर
ोई का इन्तजाम करूँ।"

महेन्द्र के चेहरे से संशय का भाव पूरी तरह दूर नहीं हुआ, हालांकि
भावना की बात का उसने बहुत-कुछ अनुमान लगा लिया। हर औरत
को जिस तरह हर मर्द सुखी नहीं कर सकता, उसी तरह जो-सो व्यक्ति
हर गाय को दुह नहीं सकता। उसके बाद उसने भौंहों को सिको
कर कहा, "तुम्हारे दोनों लड़के रात बीतते न बीतते किसलिए झ
ड़ना शुरू कर देते हैं?"

"झगड़े की बात वे ही जानें। सुरबाला ने निर्विकार स्वर में
"इसीलिए तो तुमसे कहती हूँ कि इन लोगों की शादी करा दो।"

सुरबाला यह बात बहुत बार कह चुकी है। घर की ओर
सुरबाला की ओर ताकते हुए महेन्द्र ने कहा, "शादी करा देने
उनका झगड़ा खत्म हो जायेगा?"

"झगड़ा खत्म नहीं होगा।" सुरबाला घर के पिछवाड़े के

की ओर जाती हुई बोली, "तब शायद वे अपनी-अपनी पत्नियों से ही झगड़ा करेंगे।"

बाप रे! वह तो और भी भयंकर बात होगी। उस समय घर में टिकना भी मुश्किल हो जाएगा। लेकिन असली तथ्य क्या यही है? महेन्द्र के मन की जटिलता और अधिक गहरी है। उसकी आंखों के सामने बड़े भाई नरेन्द्र का चेहरा तिर उठा। शादी के पहले जब दोनों व्यक्ति मेस में रहते थे उस समय भैया महेन्द्र से हर वक्त डांट-फटकार के स्वर में बातचीत करता था। महेन्द्र को हालांकि मन ही मन ऊब का अहसास होता था मगर वह जबान से कुछ नहीं कहता। तभी से उसके चरित्र में खामोशी और निरीहता का भाव आ गया था। इसका मतलब यह नहीं कि वह अन्दर-अन्दर निर्विकार था। उसके बाद जब भैया की शादी हो गई तो महायुद्ध की समाप्ति के पहले ही वह अपने लिए अलग से किराये का मकान ले वहाँ चला गया। झगड़ा-टंटा नहीं हुआ था। एक अनिवार्य घटना की तरह ही भैया महेन्द्र को मेस में रखकर, किराये का मकान ले देश से भाभी को ले आया था। महेन्द्र ने सोचा था, भैया अब उसे घर पर बुला लेगा। भैया ने ऐसा कभी नहीं कहा। भाभी को ले आने के बाद, महीने में एक बार, रविवार को अपने घर पर खाना खिलाने बुलाता था। शुरू में महेन्द्र ने भैया के आचरण को, अनायास ही अलगाव के तौर पर स्वीकार नहीं किया था। मन ही मन उसे विस्मय हुआ था, अभिमान हुआ था और तकलीफ का भी अहसास हुआ था। लेकिन यह सब बात कभी उसने किसी को नहीं बताई। निर्विकार भले ही न हो मगर निरीह भाव से गृहस्थी के स्वरूप को पहचानने की कोशिश की थी।

घर के अन्दर मती और सतु की आवाज बन्द हो गई। महेन्द्र समझ गया, सुरबाला ने जाकर बीच-बचाव किया है। नल की टोंटी खोल उसने कुल्ला किया। मसूड़े के दाँत से दातून को बीच से चीरकर काफी देर तक आवाज करते हुए जीभ छीलता रहा। उसके बाद मुँह

ते-धोते उसके अन्दर एक जिज्ञासा उठी, बाबूजी ने क्या कभी सोचा
। कि भैया उससे अलग हो जायेगा ? महेन्द्र-नरेन्द्र की गृहस्थी अलग-
अलग हो जायेगी ?

महेन्द्र ने झुककर लुङ्गी से मुँह पोंछा और मन ही मन इसका उत्तर
दिया, बाबूजी ने यद्यपि दोनों लड़कों के अलग होने की बात नहीं सोची
होगी, पर इसे दुनिया की एक स्वाभाविक घटना के तौर पर ही
स्वीकार लिया था। माँ इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर सकी थी।
क्योंकि बाबूजी ने महेन्द्र को पत्र लिखा था : नरेन्द्र ने अलग से किराये
का मकान ले लिया है और बहू को अपने साथ ले गया है। मेस में अब
तुम अकेले हो। इससे तुम्हारी माँ बहुत ही व्याकुल रहती है। तुम
सब कुछ पर गौर करते हुए सावधानी से रहना। कलकत्ता शहर में
हो, इसीलिए ऐसा कह रहा हूँ। इतने दिनों तक तुम दोनों भाई एक
साथ थे, अब अलग-अलग हो जाने से तुम्हारे और नरू (नरेन्द्र) दोनो
के लिए विशेष सावधानी से रहने की आवश्यकता है। इत्यादि
इत्यादि। बाबूजी ने माँ की बेकली के बारे में लिखा था, किसी त
का निजी मनोभाव प्रकट नहीं किया था, सिर्फ अकेले में सावधा
बरतने की सलाह दी थी। इसका अर्थ यही है कि बाबूजी ने इस वि
को दुनिया की अनिवार्य घटना के तौर पर मान लिया था।

घर के अन्दर जाने के पहले महेन्द्र ने एकबार गायों की ओर दे
दरअसल वह गायों को नहीं देख रहा था, एक निष्ठुर संभावना के
में सोच रहा था। मतो-सतु का यह झगड़ा असल में भविष्य में
अलगाव का ही संकेत है। छोटा लड़का दस साल का नीतू अभी
दर्जे में पढ़ता है। भविष्य में, हो सकता है वह भी अपने भ
अलग हो जाए। या फिर बड़े भाई ही उसे अलग कर दें।
छाती के श्वास में भारीपन आ गया। यह सब बात सोचते
उदास हो जाता है। मन भले ही उदास हो जाए मगर दुनिय
तौर-तरीके पर ही चलेगी। जैसा कि उसके साथ हालात

हैं तो बस एक ही । महेन्द्र और उसके भैया [illegible] हैं । अपने-अपने तरीके से दुनिया में प्रतिष्ठित हो गए हैं । [illegible] आए तो उनके लड़कों के हाथ में प्रचुर पैसा है । यह सोचने से भी डर लगता है कि भविष्य में उनके लड़के धन-संपत्ति के बंटवारे के लिए कहीं आपस में मारपीट और मुकदमाबाजी न करने लगें। इतना जरूर है कि महेन्द्र ने धन-संपत्ति के मामले में होने वाले विरोध और विवाद के सारे रास्ते ही बन्द कर दिए हैं। इस बीच वह अपने वकील से इस संबंध में बातचीत कर चुका है।

महेन्द्र पिछवाड़े के दरवाजे से घर के अन्दर आया।

घर का बाहरी हिस्सा जितना चमक-दमक भरा है, अन्दरूनी हिस्सा उतना नहीं है। घर के सामने बहुत बड़े होटल जैसा एक कमरा है, अन्दर आने के समय, बीच के दरवाजे से प्रवेश करते वक्त, गलियारे के दोनों तरफ आमने-सामने तीन-तीन छोटे कमरे हैं। उसके बाद एक किनारे रसोई और भोजन का कमरा। दूसरी ओर बाथरूम। गलियारा घर के पिछवाड़े के दरवाजे तक चला गया है। तमाम कमरों के अन्दरूनी हिस्से में प्लास्टिक इमलसन पेंट किया गया है, किसी में लाल, किसी में नीला और किसी में क्रीम। फर्श और छतों में अजीब तरह के रंग-बिरंगे मोजाइक किए गए हैं। देखते ही समझ में आ जाता है कि पूरी योजना में रुचिहीनता की छाप है, पैसे की शाहखर्ची है। कमरों के अन्दर दीवारों के प्लास्टिक पेन्ट गन्दे हैं, जगह-जगह हाथ की छाप है और तरह-तरह की लकीरें खिंची हुई हैं। हर कमरे में पलंग और बिस्तर है मगर कोई साफ-सुथरा नहीं है। सब कुछ अस्त-व्यस्त बिखरा है। हालाँकि अलमारी, लकड़ी की अरगनी, शेल्फ, ड्रेसिंग टेबल, [illegible] नहीं है?

महेन्द्र बेशक यह सब पसन्द नहीं करता था। [illegible]

पसन्द नहीं था कि बाहर के कमरे को सोफा सेट से सजाया जाए। सजाने से हुआ ही क्या ? तमाम असबाब गर्द-गुबार से भरे हैं। सुरबाला का सारा समय दोनों वक्त की रसोई पकाने और पति-बाल-बच्चों को खिलाने मे ही निकल जाता है। बाकी जो कुछ करने को होता है सरला और पद्रह-सोलह साल का मदन करते हैं। इतना बड़ा मकान, इतने सारे कमरे, इसलिए करीने से सजाकर रखना उनके द्वारा नहीं हो पाता है। ऐसा संभव होता यदि उस प्रकार कोई उनका निर्देशन करता। सुरबाला मे भले हो बहुत सारे गुण हैं लेकिन घर को सहेजकर रखने का उसमे रुचिबोध नहीं है।

इतना जरूर है कि महेन्द्र के मन में इन बातों के संबंध में कभी कोई सवाल पैदा नहीं हुआ। भोजन-कक्ष में मेज है। लेकिन वह एक किनारे पीढ़ा बिछाकर काँसे के थाल में भात खाता है। गलियारे की दहलीज के आमने-सामने के कमरों में से दाहिने ओर के आखिरी कमरे में वह और सुरबाला रहते हैं। दोनों के पलंग बिस्तर अलग-अलग हैं। सुरबाला के बड़े पलंग पर नीतू अब भी माँ के साथ सोता है। आमने-सामने के दो कमरों में मती और सतु रहते हैं। मदन रसोईघर के एक किनारे सोता है। सरला सवेरे आती है और शाम को घर वापस चली जाती है।

दोमंजिले की सीढ़ी के पास वाले कमरे में लक्ष्मी, काली इत्यादि के पट रखे हुए हैं। उस कमरे को सुरबाला स्वयं ही साफ-सुथरा रखती है। पति और लड़के जब घर से बाहर निकल जाते हैं तो नहा-धोकर, देवता को जल अर्पित करती है। संध्यावेला में रोशनी जलाती है, धूप-दीप बालती है, शख बजाती है और प्रत्येक बृहस्पतिवार को लक्ष्मी की पूजा करती है, शनि, सत्यनारायण आदि के माहात्म्य की पोथी पढ़ती है।

महेन्द्र ने पिछवाड़े के दरवाजे से घर के अन्दर घुसते हुए देखा, सुरबाला रसोई घर में जा चुकी है। उसने अपने कमरे के भीतर जाकर देखा, पूरब की खिड़कियां बन्द हैं। सुरबाला के पलंग पर अब तक

मच्छरदानी टँगी है। नीतू गहरी नींद में खोया है। महेन्द्र ने मच्छरदानी खोलते-खोलते आवाज दी, "नीतू, अरे नीतू, उठ, काफी वेला हो चुकी है। आँख-मुँह धोकर पढ़ने बैठ जा।"

नीतू ने अँगड़ाई ले, बाबूजी की ओर देखा और उसके बाद उठकर खड़ा हो गया। महेन्द्र ने खुद ही मच्छरदानी को पलंग की पाटी पर रख दिया। नीतू कमरे से बाहर निकल गया। महेन्द्र सवेरे नींद से जगते ही अपनी मच्छरदानी सहेजकर रख देता है। कमरे में असबाव नाम मात्र का ही है। स्टील की एक आलमारी। एक किनारे एक छोटी-सी गोल मेज और कुर्सी। दोनों खिड़कियों के बीच पुराने जमाने की एक ड्रेसिंग टेबुल। किसी तरह की सजावट नहीं। कई दराजवाली छोटे पाये की मेज पर एक आईना। सामने बैठने के लिए कोई तिपाई भी नहीं।

महेन्द्र ने पहले खिड़कियाँ खोलीं। कमरे में रोशनी और हवा आने लगी। चालू पंखे का स्विच बन्दकर, ड्रेसिंग टेबुल की दराज खोल, लकड़ी का एक छोटा-सा बक्सा और एक अण्डाकार आईना बाहर निकाले। कमरे के दूसरे किनारे मेज पर आईना और बक्से को रखकर, बक्से से ऐलूमिनियम का एक कटोरा, दाढ़ी बनाने का साबुन, ब्रश और सेफ्टी रेजर निकाले। पिछले दिन का ब्लेड धो-पोंछकर रखा हुआ है। ऐलूमिनियम के कटोरे को अपने साथ ले, कमरे के बाहर बाथरूम जाकर पानी ले आया और कुर्सी पर बैठ गया। ब्रश से चेहरे पर जैसे ही साबुन लगा रहा था कि अचानक मोटर साइकिल की घरघराहट सुनाई पड़ी। समूचा मकान जैसे काँप उठा।

काँपना स्वाभाविक है। दोनों मोटर साइकिलें बाथरूम के बगल वाले खाली कमरे में रखी रहती हैं। सुरबाला की बात पर दोनों लड़कों के लिए यह आफ़त की पुड़िया उसे खरीदनी पड़ी है। लड़के मोटर खरीदने की जिद कर रहे थे। महेन्द्र राजी नहीं हुआ। दोनों लड़कों के लिए दो मोटर साइकिलें उसे खरीद देनी पड़ीं। कारण? कारण यह

कि लड़कों को काम की वजह से बहुत-सी जगहों का चक्कर लगाना पड़ता है, वे व्यस्त रहते हैं और वक्त पर उन्हें आना-जाना पड़ता है। बस-ट्राम पर चढ़कर इतने बड़े कारोबार का हर जगह निगरानी करना मुमकिन नहीं है। इसलिए सुरबाला ने कहा था, "मोटर गाड़ी की जरूरत नहीं है, उन दोनों को तुम दो मोटर साइकिल खरीद दो। हर रोज तकाजा करते-करते मेरा दिमाग चाट रहे हैं।"

महेन्द्र भी बेशक महसूस करता है, मती और सतु को काम के सिल-सिले में कलकत्ते की बहुत सारी जगहों का चक्कर लगाना पड़ता है— बैङ्क से बैङ्कशाल कोर्ट तक टैक्सी से भी यह काम किया जा सकता है। लड़कों का तर्क था, उसमें खर्च अधिक पड़ता है। इसमें अविश्वास करने लायक कोई बात नहीं है। महेन्द्र टैक्सी पर भी नहीं चढ़ता है। उसके चलने-फिरने का तरीका अलग किस्म का है। लड़कों के लिए ऐसा करना मुमकिन नहीं है। पिता की तरह समय की पाबन्दी का पालन करना और नपे-तुले कदमों से चलना उनके लिए संभव नहीं है। दो मोटर साइकिल खरीद देना यों कोई मुश्किल बात नहीं, मगर खर्च का सिलसिला एकबार बढ़ जाए तो फिर उस पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता। वह बढ़ता ही जाता है। इसके अलावा कलकत्ते की जो हालत है, कब क्या दुर्घटना हो जाए, यह भी सोचने की बात है।

मोटर साइकिल की आवाज से खीझकर महेन्द्र ने चेहरे पर साबुन लगाया। हर रोज, लगभग इसी वक्त, मती और सतु दाढ़ी बनाने और स्नान करने के पूर्व, दो चक्केवाली दोनों गाड़ियों की जाँच-पड़ताल करते हैं। उनकी आवाज हालाँकि बर्दाश्त के बाहर है, फिर भी बर्दाश्त करना पड़ता है और वह जल्दी-जल्दी दाढ़ी बनाने का काम खत्म कर लेता है। गुसलखाने में जाकर देह-हाथ-पैर सिर में तेल लगाता है, नल की टोंटी के पास बाल्टी रख, मग से पानी ढालते हुए जल्दी-जल्दी स्नान कर लेता है। अंगोछे से बदन पोंछ, पहनी हुई धोती को उतार, अंगोछा लपेटे ही कमरे के अन्दर चला आता है। अलगनी पर रखा अण्डरवियर

पहनता है, उस पर धोती। चुन्नट के अगले हिस्से को कमर में खोंस लेता है। अलगनी के सामने ही रैक पर से अधबाँही कुरता उतारकर पहनता है। ड्रेसिंग टेबल के पास जा, एक तरह से घुटनों के बल बैठकर, बालों पर कंघी कर माँग निकालता है। उसके बाद कमरे से बाहर आ, बाथरूम के निकट से होते हुए दोमंजिले की सीढ़ियाँ चढ़ता है और पूजा-घर में जाता है। उसने न तो किसी को गुरु बनाया है और न ही गुरु मंत्र लिया है। संध्या आह्निक पूजा-पाठ का झमेला उसके साथ नहीं है। फिर भी वह नहाने के बाद एक बार पूजा घर में जाकर देवता के पटों के सामने खड़ा होता है, आँख मूँदकर, हाथ जोड़कर प्रणाम करता है और मन ही मन कहता है, "दुःख-विपत्ति से रक्षा करो, शत्रु का विनाश करो।"

इस वक्त उसकी आंखों के सामने गणेशचन्द्र एवेन्यू के दफ्तर का कमरा तिर आता है। राइटर्स के दफ्तर के कमरे, सेक्रेटरी और अफसरों के चेहरे, विभिन्न व्यावसायिक प्रतिष्ठान—जिनसे उसका लेन-देन का हिसाब चलता है—साथ ही होसियारी फैक्टरी, प्रेस, बाइंडिंग कारखाना वगैरह। उसके बाद वह नीचे उतरकर सीधे भोजन-कक्ष में जाता है।

सुरबाला भी तैयार रहती है। तब हाँ, दाल-भात-भुजिया पीढ़े के सामने परोसकर कहती है, "जरा धीरे-धीरे खाओ, अभी समय है। मछली का झोल अभी तुरन्त नीचे उतारना है।"

महेन्द्र के सामने सब कुछ तसवीर की नाईं तिर आता है। मोटर साइकिल की जांच-पड़ताल मतो कर रहा था। सतु इस बीच बाजार से सामान लेकर आ चुका है। अब गुसलखाने में पहले जाने के सन्दर्भ में दोनों में फिर चख-चुख होगा। यह रोजमर्रा की वारदात है। नीतू बाहर के कमरे में चिल्ला-चिल्लाकर पढ़ रहा है। सिर के ऊपर पंखा न चलता होता तो गरम खाना मुँह के अन्दर रखना मुश्किल था। फिर भी खाना खाकर उसने हाथ-मुँह धोया, स्टील की आलमारी खोलकर

घड़ी देखी—आठ बजकर बीस मिनट। घड़ी में चाबी दे उसे बायें हाथ की कलाई में बांधा और कपड़े की एक छोटी थैली को खींचकर बाहर निकाला। हाथ में ले उसके अन्दर झाँककर देखा उसके अन्दर अलग-अलग गुच्छे में तरह-तरह की माप की चाबियाँ हैं। इसके अलावा एक खाता, एक कलम, तीन चेक-बहियाँ। थैले को बाएँ हाथ की मुट्ठी में डाल कुहनी से दवा लिया। अन्दर के एक ढक्कन को खोल, तीन-चार रुपये की रेजगारी सामने की जेब के अन्दर बनी जेब में डालते हुए, आलमारी बन्द कर उसमें ताला लगा दिया। अलगनी के पास से छाता ले, घर से बाहर आ, रसोईघर के दरवाजे पर खड़ा होकर बोला, "सुरो, लो चावी रख लो।"

"सुरबाला उठकर आई और कमरे की आलमारी की चाबी ले ली। महेन्द्र बोला, "चलता हूँ।"

"जाओ।" सुरबाला फिर चूल्हे की तरफ चली गई।

महेन्द्र ने हर कमरे में झाँककर देखा—मती और सतु दोनों ड्रेसिंग टेबुल के सामने खड़े हो, मूछों को ज्यों का त्यों रखते हुए, दाढ़ी बना रहे हैं। महेन्द्र ने दोनों से सिर्फ इतना ही कहा, "मैं चल रहा हूँ। सब काम ठीक से करना। तीसरे पहर फिर मुलाकात होगी।"

मती-सतु दोनों ने हामी भरी। महेन्द्र जैसे ही बाहर के कमरे में आया, नीतू पढ़ाई छोड़कर उछल पड़ा। महेन्द्र के चेहरे पर हलकी मुसकराहट तिर आई। सामने की अन्दरूनी जेब से एक रुपया निकाल नीतू के हाथ में थमाते हुए कहा, "फालतू चीज में खर्च मत करना।"

"आप तो वस हर रोज एक ही बात दोहराते रहते हैं।" नीतू ने होंठ लटकाकर लाड़ भरे स्वर में कहा, "मेरे लिए साइकिल खरीद देने की बात थी, उसका क्या हुआ?"

महेन्द्र दरवाजे की ओर कदम बढ़ाते हुए बोला, "यह तो तुम्हारी माँ ने कहा है। हाथ-पैर से जरा लम्बे हो जाओ, फिर तुम्हारी माँ ही खरीद देगी।"

"हाथ-पैर से जरा और लंबा हो जाऊँगा तो मोटर साइकिल ही चलाऊँगा।" नीतू ने कहा, "मेरे जैसे कितने ही लड़के साइकिल चलाते हैं। उन्हीं की साइकिल चलाकर मैंने सीखा है।"

महेन्द्र दरवाजे की सिटकनी खोलते-खोलते बोला, "हो जाएगा, इतनी जल्दीबाजी क्यों? ले, दरवाजा बन्द कर दे।" वह देहरी की सीढ़ियाँ तयकर नीचे उतर गया।

नीतू बाप के पीछे-पीछे उतरकर आया और बोला, "ओह बाबूजी, आपसे एक बात कहना भूल गया था। हम लोगों के स्कूल के पास एक कार्निवल हो रहा है, वहाँ बहुत ही अच्छी आइसक्रीम मिलती है। दो आइसक्रीम की कीमत कम से कम चार रुपया लगता है।"

"कार्निवल क्या चीज है?" महेन्द्र ने पूछा।

नीतू ने कहा, "मेला।"

"दो आइसक्रीम लेकर क्या होगा?"

"मेरा एक दोस्त और मैं खाएँगे।"

"चार रुपया बहुत ही ज्यादा कीमत है।" यह कहते हुए अन्दर की जेब से और तीन रुपये निकालकर देते हुए कहा, "इतनी कीमती चीज खाने की जरूरत ही क्या है? दोस्त को खिलाने की जरूरत ही क्या है?"

"यह सब बात आपकी समझ में नहीं आयेगी बाबूजी, क्योंकि आपके तो कोई दोस्त-मित्र नहीं हैं।" नीतू मुड़कर घर के अन्दर चला गया।

महेन्द्र फाटक के पल्लों को खोलते हुए नीतू की ही बात दोहराने लगा, "आपके तो दोस्त-मित्र नहीं हैं।"

फाटक के बाहर जाकर पल्लों को खींचकर बन्द कर दिया, गली-कूचों से जाते हुए उसे एक ही बात बार-बार याद आने लगी, "आपके तो दोस्त-मित्र नहीं हैं।" वह बहुत सारे चेहरे को यादकर सोचने की कोशिश करने लगा। सचमुच उसका कोई दोस्त-मित्र नहीं है। इस

बात पर उसने कभी विचार नहीं किया था। आज एकाएक नीतू की बात सुन, बहुत सोचने-विचारने पर भी याद नहीं कर सका कि दुनिया में उसका मित्र कौन है—वास्तव में मित्र कहने से जो बात समझ में आती है। मसलन मती-सतु के भी बहुत से दोस्त-मित्र हैं जिन्हें व्याव-सायिक स्थानों में देखने से महेन्द्र को खीझ होती है। यहां तक कि आस-पास के मुहल्लों के किसी-किसी घर की महिला भी सुरबाला से गपशप करने आती है, और सुरबाला कहती है, वे लोग उसकी सहेली तुल्य हैं। लेकिन महेन्द्र के साथ यह बात नहीं है। आश्चर्य की बात है! क्यों नहीं है? किस तरह दोस्ती की जाती है? किससे की जाती है? और दोस्ती करने से लाभ ही क्या है?

महेन्द्र के मस्तिष्क में यह बात चक्कर काटने लगी और वह गली-कूचों का चक्कर लगाता हुआ बड़ी सड़क पर चला आया। बड़ी सड़क पर इस बीच यान-वाहन और लोगों की भीड़ उमड़ आई है। वह एक बस-स्टैण्ड की भीड़ से दूर हटकर, खाली स्थान पर खड़ा हो गया। कलाई उठाकर घड़ी देखी, आठ बजकर चालीस मिनट। दिमाग में दोस्त की भावना चक्कर काट रही है। याद आया, क्लाइव स्ट्रीट के कम्पनी के दफ्तर में काम करने के समय, सुकुमार नामक एक युवक से उसकी काफी घनिष्ठता हो गई थी। उसके साथ कई दिन टॉकी और थियेटर देखे थे। बड़ा भाई नरेन्द्र सुकुमार को जरा भी पसन्द न करता था। वह बड़ा ही खुशमिजाज और जिन्दा दिल था। वह भैया को भी साथी बनाना चाहता था मगर भैया रूखेपन के साथ जाहिर कर देता था कि उसे यह सब पसन्द नहीं। महेन्द्र को अलग से डाँटता था कि वह सुकुमार से अधिक घनिष्ठता न बढ़ाये। इसका नतीजा यह हुआ कि सुकुमार से मिलने-जुलने के लिए उसे बड़े भाई को धोखा देना पड़ता था। कई महीने के बाद अलबत्ता महेन्द्र ने महसूस किया था कि सुकु-मार जिम्मेदारी से कतराने वाला खुशमिजाज किस्म का आदमी है।

क्योंकि महेन्द्र को बगैर जताये उसे वह [illegible] ले गया था।

महेन्द्र को सिर्फ बेचैनी का ही अहसास नहीं हुआ, उसे डर भी लगा था। फिर भी सुकुमार में एक खास तरह का आकर्षण था। वह बुलाता तो उसका जवाब दिये बगैर रहा नहीं जाता था। लेकिन महेन्द्र फिर कभी उसके साथ वर्जित मुहल्ले में नहीं गया। बहुत अनुरोध करने पर भी शराब नहीं पी। तब हाँ, यह भी सच है कि सुकुमार का मन उदार था और वह दिल-दरिया किस्म का आदमी था। महेन्द्र ने उससे कभी एक भी पैसे की मांग न की थी। महेन्द्र नहीं मानता कि उसे सरकारी नौकरी न मिली होती तो वह सुकुमार के साथ बहुत दूर कहीं चला गया होता। अलहदा जगह नौकरी मिलने के कारण ही वे एक-दूसरे से अलग हो गये थे।

महेन्द्र को यह भी याद आया कि बड़े भाई की शादी और उनसे अलग होने के दरमियान राइटर्स के कुछ लोगों से उसकी घनिष्ठता हुई थी। लेकिन उसी समय परमिट-लाइसेंस वगैरह बातें उसके दिमाग में आईं और उसके अन्दर [illegible] तरह की आकांक्षाएँ जग उठीं। शादी के बाद सेक्रेटरी और अफसरों को छोड़कर किसी से भी उसका घनिष्ठ रूप में लेन-देन नहीं बढ़ा। हालांकि उस घनिष्ठता की प्रकृति और ही तरह की थी। उसमें कुछ लेन-देन और आपसी सहमति की बात थी। सही मानों में शुरू से वह उच्च पदाधिकारियों के एजेन्ट के तौर पर ही अलग-अलग नामों से लाइसेंस और परमिट का इन्तजाम करता था और फिर धीरे-धीरे अपने दूसरे-दूसरे व्यवसायों को बढ़ा लिया। महेन्द्र के चेहरे पर हल्की-सी मुसकराहट तिर आई। नहीं, दोस्त कहना ठीक नहीं है। उसका भी दोस्त था, आज भी है। और वह है मुरवाला। महेन्द्र ने उससे कुछ भी छिपाकर नहीं रखा है। गोपनीय भी, जो कुछ भी गोपनीय बात हो सकती है उन दोनों के बीच ही थी और आज भी है।

मुसाफिरों से ठसाठस भरी एक गाड़ी बस-स्टैण्ड पर आकर खड़ी हुई। महेन्द्र ने चकित दृष्टि से एक बार बस के नम्बर और ड्राइवर को देखा। ड्राइवर ने वहीं से अपने माथे पर हाथ रखकर प्रणाम किया। महेन्द्र ने अपने सिर को झटका। ठसाठस भरी रहने के बावजूद वह बस यात्रियों को लादे ही स्टैण्ड से महेन्द्र के सामने आकर खड़ी हुई। ड्राइवर ने झट से सामने वाली बाईं तरफ का दरवाजा खोल दिया। महेन्द्र भी अविलंब हाथ बढ़ाकर खिड़की की सलाख को थामे अन्दर घुस गया और दरवाजे को बन्द कर दिया। वह ड्राइवर की बगलवाली छोटी सीट पर बैठ गया।

"यह सब क्या हो रहा है? स्टैण्ड से बाहर आकर ड्राइवर की बगल में आदमी क्यों बैठाया जा रहा है?" मुसाफिरों की जमात के कुछ लोग तल्खी भरी आवाज में चिल्ला उठे।

"भाई साहब के लिए क्या महीने-भर के लिए यही बन्दोबस्त है?" किसी-किसी ने टिटकारी दी और आवाज कसी। कन्डक्टर बगैर कुछ जवाब दिये, बैग झनकारते हुए पैसा लेकर टिकट देने लगा। महेन्द्र के प्रति उसी प्रकार टिटकारी, व्यंग्य, आक्रोश और बेइंसाफी के खिलाफ चिल्लाने का दौर चलता रहा।

महेन्द्र खामोशी ओढ़े सामने की ओर ताकता रहा। बस जोरों से चल रही है। क्या कहा जाए। लोग-बाग उसे हर रोज इस तरह चढ़ते देखकर भी जब यह नहीं समझ पाते कि किसी खास वजह से ही उसे सामने की सीट पर बैठाया जाता है, तो वह क्या कह सकता है! क्योंकि, चिल्लाकर उन्हें यह नहीं बताया जा सकता कि इस रूट की दो बसों का वही मालिक है और यह गाड़ी उसी की है। कहा जाए तो मुसाफिरों की जमात जनतांत्रिक अधिकार की चर्चा करने लगेगी, और इसके चलते निश्चित रूपेण झमेला बढ़ेगा। इससे तो अच्छा यही है कि टिटकारी और गाली-गलौज की परवाह ही न की जाये।

इस समय महेन्द्र की तीन रूटों में छह बसें चलती हैं। सारी बसें

डलहौसी से अलग-अलग जगहों में आती-जाती हैं। अत: वह ठीक समय पर, सिंडिकेट के नियम और समय के मुताबिक, अपनी बस के सामने की सीट पर बैठकर यात्रा करता है। उसके लड़कों के लिए इस व्यवस्था से तालमेल रखते हुए चलना नामुमकिन है।

दस बजने में जब दस मिनट बाकी थे, महेन्द्र दफ्तर पहुँचा। दो-चार-सिक्युरिटी के आदमी, दो-चार प्यून और बेयरों के अलावा अब तक कोई नहीं आया है। महेन्द्र के दफ्तर के विभागीय बड़े बाबू की कुर्सी खाली है। हाजिरी-बही उसके डेस्क में बन्द है और वहाँ ताला लगा है। लेकिन उसका काम रुका नहीं रहता है। सेक्रेटरी साहब साढे दस तक ही आ धमकेंगे। शुरू में उन्हें कौन-कौन सी फाइलें देनी हैं, उन्हें वह सहेजना शुरू कर देता है।

वह उनमें से हरेक फाइल को, जिन पर 'कॉन्फिडेन्शल' और 'टॉप सिक्रेट' का चिह्न दिया हुआ है, अपनी आलमारी का ताला खोलकर बाहर निकालता है और उनके अन्दर के कागजात देखता है। हस्ताक्षर करने के स्थान पर कलम से निशान लगा देता है। जो सब सन्देहजनक पत्र या नोटिस लगते हैं उन्हें अलग कर रख देता है और मन ही मन कैफियत का विवरण भी तय कर लेता है।

एक बार महेन्द्र को दफ्तर के बड़े बाबू का पद देने की भी चर्चा चली थी। बड़े बाबू के काम से भी उसका काम अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसका पता इसी से चल जाता है कि बड़े बाबू की मेज के अलावा सिर्फ उसी की मेज पर टेलीफोन है। इसके अलावा उसके लिए एक निजी आलमारी भी है। दरअसल इस कमरे में उसे बहुत ही कम समय रहना पड़ता है। ज्यादा से ज्यादा वक्त उसे सेक्रेटरी के बगल वाले छोटे से कमरे में बिताना पड़ता है जिससे कि पुकार सुनते ही उपलब्ध हो सके। मंत्री भी किसी कारणवश बुला सकते हैं। महेन्द्र के बिना वे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाते हैं। बीच-बीच में सेक्रेटरी के साथ उसे भी मंत्री के कमरे में जाना पड़ता है।

महेन्द्र के लिए काम ही सब कुछ है। वह दफ्तर की दलबन्दी में नहीं रहता। यह काम हालांकि बड़ा ही कठिन है, फिर भी वह ताल-मेल बिठाकर चलता है। जो जितने ही चन्दे की माँग करता है, दे देता है। किसी प्रकार के झगड़े-टंटे में नहीं रहता। सबके बीच रहकर भी वह जैसे सबसे अलग-थलग है। सेक्रेटरी और उनके सहयोगी अफसरों के अलावा उसका किसी के साथ कोई काम नहीं रहता। वह कैन्टिन में खाने नहीं जाता। टिफिन नहीं लेता है। खुद सेक्रेटरी साहब का ऑर्डर है, तबीयत ठीक न रहने के कारण सवेरे दस से दो बजे तक लगातार काम करने के बाद उसे छुट्टी मिल जाती है। महेन्द्र के सह-कर्मियों ने भी इस तथ्य को स्वीकार लिया है। क्योंकि उनकी भी निगाह में महेन्द्र निरीह, कमजोर और दुर्बल है, लेकिन काम से जी चुरानेवाला आदमी नहीं। बहुतेरे लोग उसे क्षमा-घृणा की दृष्टि से देखते हैं, लेकिन उसका व्यवसाय और रुपये पैसे की बात बहुतों को परीकथा जैसी लगती है। यही वजह है कि बहुत से लोग उसे सन्देह की नजर से देखते हैं और तरह-तरह की फरमाइश करते हैं। ऑफिस में उसके पैसे से मिठाई खाना तो लगा ही रहता है, इसके अलावा बहुत से लोग मुहल्ले की पूजा, उत्सव इत्यादि के लिए बारहों महीने कुछ न कुछ वसूलते ही रहते हैं।

महेन्द्र दुर्बल मनुष्य की भंगिमा में हंसता है, असहाय की तरह दान करता है और कहता है, "आप लोग मेरे बारे में जैसा सोचते हैं, वैसा नहीं हूँ। यकीन कीजिये, मेरा अपना कुछ भी नहीं है, सब कुछ परिवार का है।"

महेन्द्र के असली रक्षक सेक्रेटरी, मंत्री के पी० ए० तथा अन्यान्य अफसर हैं जो अचानक ही बीच-बीच में कुछ रुपये की माँग कर बैठते हैं या मुसकराते हुए पार्क स्ट्रीट का खाली और सजा-सजाया फ्लैट एक-दो दिन के लिये माँग लेते हैं।

आज काम खत्म होने के बाद स्वयं सेक्रेटरी ने ही महेन्द्र से पार्क

स्ट्रीट के फ्लैट की चाबी दो दिन के लिये माँग ली। आमतौर से छुट्टी के दिन के पहले फ्लैट की चाबी की ज्यादा खोज-पड़ताल होती है। लेकिन इस सप्ताह की कार्यावधि में कोई छुट्टी नहीं है। फिर भी महेन्द्र ने व्यस्तता के साथ सेक्रेटरी के हाथ में चाबी थमाते हुए कृतज्ञता के साथ कहा, "लीजिये सर, पिछले सप्ताह चक्रवर्ती साहब ने चाबी ली थी, मकान की हालत कैसी है, मालूम नहीं।"

"आपको यह सब सोचना नहीं है, मैं सारा इन्तजाम कर लूँगा।" सेक्रेटरी ने चाबी जेब में डाल ली।

दरअसल महेन्द्र को तमाम खबरें मालूम हैं। डुप्लिकेट चाबी से वह बहुत बार फ्लैट के अन्दर जाकर देख चुका है। ड्राइंगरूम में शीशे का गिलास टूटा पड़ा है। मेज पर शराब की बोतल। प्लेट में अनखाये खाद्य-पदार्थ का ढेर। सोने के कमरे में सिगरेट के टुकड़े इधर-उधर बिखरे हुए, गिलास में बची हुई शराब, छोड़ा गया लिपस्टिक तथा और भी बहुत सारी औरतों के द्वारा इस्तेमाल में लाई गई छोटी-मोटी वस्तुएँ। एक बार तो एक जड़ीदार नेकलेस भी बिस्तर पर पड़ा हुआ मिला था और एक बार एक कीमती साड़ी। इतना जरूर है कि सब कुछ उसने ठीक ठिकाने पर पहुँचा दिया था। घर की हालत देखकर उसे दुःख होता है। कोई-कोई फ्रिज खुला ही छोड़कर चल देता है। लगातार कई दिनों तक बत्ती जलती रहती है। डर लगता है, कहीं किसी दिन कोई पाइप गैस खुला रखकर न चल दे। महेन्द्र हर वक्त डुप्लिकेट चाबी से फ्लैट खोलकर उसे आदमी से साफ-सुथरा कराता है। बिस्तर को सहेज देता है। तरह-तरह की खुशबुओं का उसे पता चलता है, बहुतेरी रमणियों के विलासपूर्ण अंग-प्रसाधनों का स्पर्श कमरों में बिखरा है।

मगर वह इन सब बातों के संदर्भ में अधिक सोचता नहीं है। समय होते ही सेक्रेटरी साहब को नमस्कार कर बाहर निकल आया। यहाँ से गणेश एवेन्यू तक पैदल ही जाता है। वहाँ 'सरकार एण्ड सन्स अटर्

वाइल्स एण्ड ट्रांसपोर्ट एण्ड अदर कन्सर्न्स प्राइवेट लिमिटेड' है। वहाँ वह जैसे ही पहुँचता है उसके जैसे मामूली किरानी पर नजर पड़ते ही सभी घबरा उठते हैं। महेन्द्र में किसी तरह की घबराहट नहीं दीख पड़ती। उसके लिए अन्दर के कमरे के एक कोने में एक छोटी मेज और कुर्सी पड़ी रहती है। दो डिरेक्टर—मती और सतु—के अतिरिक्त और दो आदमी सामने वाले ऑफिस के कमरे में बैठते हैं। एकाउन्टेन्ट का कमरा अन्दर है। बस और लॉरी का व्यवसाय इसी ऑफिस से परिचालित होता है। किस-किस मार्ग में कौन-कौन-सी बसें कितने मुसाफिरों को लादकर गई हैं, कितनी कीमत के कितने टिकट बिके हैं, उसका हिसाब यहीं मिलता है। दूर-दराज जाने वाली भारी ट्रकें कहाँ कौन-सा माल लेकर गईं और कौन कहाँ से आई है और कितनी रकम मिली है, उसका भी हिसाब-किताब यहीं रहता है। इसके साथ ही सब कुछ का हिसाब-किताब है—मरम्मत, दुर्घटना, गैरकानूनी पार्किङ्ग और तरह-तरह के हानि-नुकसान का। महेन्द्र का आदेश है, सब कुछ लिखित रूप में रखना है। जबानी तौर पर कोई हिसाब-किताब नहीं रह सकता है। शुरू के दिनों में वैसी ही व्यवस्था थी। महेन्द्र ने हरेक कागज और खाते को गौर से देखा। इस काम में पाँच बज गये। इस बीच वह कुछेक टिप्पणियाँ कर चुका है। एक मार्ग में टिकट-बिक्री का सिलसिला धीरे-धीरे कम होता जा रहा है, हालांकि उस मार्ग में अब भी सरकारी बस नहीं चलती है। एक दूर-दराज जाने वाली ट्रक में सिर्फ आधे माल की ही लदाई हुई है। इस तरह का ऑर्डर फिर कभी नहीं लिया जाये, इस बात की उसने हिदायत की। क्योंकि इतना रुपया देकर भारी ट्रक से कोई इतना कम माल चलान नहीं करता। यह सब संदेहजनक व्यवसाय है। कुछ खरीदे गये गाड़ी के पार्ट्स की कीमत बाजार की कीमत से मिल नहीं रही है। उसके बाद ढेर सारे चेक आए। महेन्द्र ने तमाम चेकों को देखा और अपने थैले से खाता निकालकर प्रत्येक चेक की राशि और विवरण दर्ज कर लिए। कुछेक

कागजात पर हस्ताक्षर किये और एक गिलास पानी पीकर बाहर निकल आया।

महेन्द्र गणेशचन्द्र एवेन्यू से पैदल चलता हुआ सेन्ट्रल एवेन्यू के मोड़ पर आया। आगे बढ़कर ट्रैफिक के बायें खड़ा हो गया। कलाई उठाकर घड़ी की ओर देखा, पांच मिनट में ही मुसाफिरों से लदी एक प्राइवेट बस आई और सवेरे की तरह ही वह बस के आगे, ड्राइवर की बगल में, *बैठ गया और फिर बाकायदा गाली-गलौज की शुरुआत हो* गई। वह विवेकानन्द रोड के मोड़ पर उतरा। वहाँ से पैदल बड़े प्रेस के अंदर आया। वहाँ भी पहले जैसा ही दृश्य है। सभी व्यस्त हो उठे। महेन्द्र ने अपनी जगह पर बैठ सारे कागज-पत्तर, ऑर्डर, चेक, प्रेस का हिसाब और काम की रफ्तार पर नजर दौड़ाई। यहाँ कुछेक दो नंबर *के कारोबार हैं। तमाम कारोबार में दो नंबर का काम चलता है।*

प्रेस में एक घंटा बिताकर, माणिकतल्ला के मोड़ पर आकर खड़ा हुआ। कलाई घड़ी पर नजर दौड़ाते ही मुसाफिरों से लदी एक प्राइवेट बस आकर खड़ी हुई। पहले की तरह ही वह अगली सीट पर बैठ गया और फिर व्यंग्य और गाली-गलौज का सिलसिला चल पड़ा। *श्याम बाजार मोड़ के अगले पड़ाव पर नीचे उतरा। वहाँ से पैदल चलता* हुआ एक गली के अन्दर होसियारी फैक्टरी में आया। यहाँ सौ में नब्बे प्रतिशत महिलाएँ कार्यरत हैं। फैक्टरी का नाम है 'होसियारी एस'। 'एस' बड़े अक्षर में लिखा है। यहाँ सिर्फ हिसाब-किताब ही नहीं [illegible] पड़ती है, बल्कि महिलाओं की तरह-तरह की शिकायतें भी [illegible] *पड़ती हैं। महेन्द्र एकमात्र मैनेजर हरिपद मुखर्जी से बातें करता है [illegible]* साफ-साफ कहता है, "जो सब सूअर की औलाद महिला[illegible] से बुरा सलूक करते हैं, उन्हें एक घंटे के नोटिस पर भगा दें।"

वह यह सब महिलाओं और मुजरिमों को सुनाकर [illegible] कहता है क्योंकि महिलाओं की ओर से यही अभियोग सबसे अधिक [illegible] है। इतना जरूर है कि कारखाने की तमाम औरतें दूध की [illegible]

यह बात भी महेन्द्र अच्छी तरह जानता है और महिलाओं को सुनाते हुए कहता है, कारखाना काम की जगह है न कि बदमाशी की जगह। यहाँ जो लोग गन्दी हरकत करें उन्हें उनका बकाया चुकाकर तत्क्षण विदा कर दें !"

महेन्द्र ने महिलाओं के संदर्भ में यद्यपि किसी गन्दे शब्द का इस्तेमाल न किया परन्तु बदचलन मर्द कर्मचारियों के प्रति 'सूअर की औलाद' का उच्चारण उसके जैसे निरीह व्यक्ति के मुँह से बड़ा ही बेमानी जैसा लगा। स्वाभाविक तौर पर वह किसी तरह के गाली-गलौज करने का अभ्यस्त नहीं है और न ही उसके गाली-गलौज से किसी प्रकार का आक्रोश टपकता है। उसकी धारण है, इन स्थानों में इस तरह की थोड़ी-बहुत बातें की जा सकती हैं। लेकिन मन ही मन उसे बेचैनी का अहसास होता है। उसे मालूम है, हर जगह मेहनतकश लोगों के बीच भले-बुरे होते हैं और वह किसी के चरित्र में फेर-बदल नहीं ला सकता। फिर भी उसे कुछ न कुछ कहना पड़ता है, खासकर शिकायत सुनने पर।

होसियारी फैक्टरी का मैनेजर हरिपद मुखर्जी मोटे तौर पर ईमानदार है। इतना जरूर है कि ईमानदारी का पैमाना प्राप्य राशि पर निर्भर करता है। यहाँ आमतौर से बनियान, मोजा, औरतों का ब्रेसियर, उभय लिंग की पेंट्री और जंघिया होते हैं। उत्पादन के लिये जितनी तादाद में धागा मिलता है, उत्पादित सामग्री के हिसाब में गड़बड़ी करनी पड़ती है। और वह गड़बड़ी इस पर निर्भर करती है कि कितने माल पर 'एस' स्टैम्प दिया जाता है और कितने पर नहीं दिया जाता है। स्टैम्प दिये हुए माल का हिसाब सरकार को देना पड़ता है और बगैर स्टैम्प के माल के खरीददार अलहदा हैं। कारोबार के लिये दो नंबर का मामला यों भी अनिवार्य हुआ करता है और किसी व्यवसायी के लिये उसे अनदेखाकर चलना नामुमकिन है। इस दो नंबर में मैनेजर को थोड़ी-बहुत हिस्सेदारी मिलती है और उसकी ईमानदारी का

पैमाना यही है। यानी उस हिसाब से बाहर वह हाथ नहीं लगाता है।

होसियारी के लगभग डेढ घंटे के काम को निवटाने के बाद महेन्द्र अपने थैले को कुहनी से लटकाये बाहर निकल आया। अब उसके लिये कलाईघड़ी की ओर निगाह दौड़ाना जरूरी नहीं है। श्याम बाजार के पाँचवें घुमाव के नुक्कड़ पर आकर वह दक्खिन की ओर जाने वाली ट्राम के पड़ाव पर खड़ा हो गया। इस वक्त उसे सावधान रहना पड़ता है। उसके थैले में प्रेस, होसियारी, अटमबाइल्स एण्ड अदर कन्सर्न की मोटी रकम रहती है। जहाँ तक हो सके लोगों की भीड़ भाड़ में रहता है। वह चाहे तो टैक्सी में बैठ आराम से जिल्दसाजी के कारखाने में जा सकता है। लेकिन जाना नहीं। नकद पैसे जब थैली में रखता है तो हर जगह एक ऐसा व्यक्ति गवाह रहता है, जो अगर न बताये तो किसी दूसरे के लिए यह जानना मुमकिन नही है।

ट्राम निश्चित समय पर आई। एसप्लेनेड जाने वाली ट्राम में इस वक्त कोई खास भीड़ नहीं रहती है। महेन्द्र ट्राम में बैठ दोबारा मिर्जापुर के मोड़ पर चला आया। नीचे उतर, पैदल चलता हुआ एक टेढ़ी-मेढ़ी गली से जिल्दसाजी के कारखाने में पहुँचा। यहाँ काम दो पाली चलता है—सवेरे छः बजे से रात दस बजे तक। पूजा के पहले तीन पाली भी काम चलाना पड़ता है। जिल्दसाजी के कारखाने में भी कुछ लड़कियाँ काम करती हैं।

महेन्द्र के लिए यहाँ भी अलग से एक छोटा-सा कमरा है। नंगा मेज और कुरसी के अलावा इस कमरे में कुछ नही है, केवल कारखाने की खास गंध को छोड़कर। मेज पर कुछेक कागज-पत्तर वगैरा। यहाँ जो मैनेजर है वह कभी बाइडिंग कारखाने के यूनियन का सिक्रेटरी था। किसी जमाने में कुख्यात गुण्डे के रूप में भी उसका नाम था। महेन्द्र ने उसे पालतू बना लिया है और वही जिल्दसाजी कारखाने का मैनेजर है। नाम है सुधीरदत्त। तब हाँ, अधीनता स्वीकार करने के पीछे

शर्त्तें हैं। दोनों के लेन-देन में ये शर्त्तें अमल में लाई जाती हैं और दूसरों को इस बात की जानकारी नहीं है। इसके अलावा इस मुहल्ले में इस तरह का जमा-जमाया जिल्दसाजी का कारखाना सुधीर जैसे दादा किस्म के आदमी के अतिरिक्त दूसरे के लिए चलाना मुमकिन नहीं है। बाहर आसपास के बरामदे पर तरह-तरह के गिरहों के बरामदेबाज बैठे रहते हैं। प्रत्येक व्यवसायी से उन्हें तरह-तरह की प्राप्यराशि प्राप्त होती है और उस प्राप्यराशि का हिसाब-किताब और लेन-देन सुधीर ही करता है। कई बार महेन्द्र पर आक्रमण हुआ तो उसकी समझ में आ गया कि सुधीर के बिना उसका काम-धाम चल नहीं सकता। क्योंकि बरामदेबाज जेब में हाथ लगाना भी गुनाह नहीं मानते हैं।

महेन्द्र ने जैसे ही छोटे कमरे में प्रवेश किया, उसके पीछे-पीछे सुधीर भी दाखिल हुआ। लगभग पैंतालीस मिनट तक प्राप्यराशि और काम का हिसाब-किताब चलता रहा। एकमात्र इसी कारोबार में सुरवाला का नाम है—सुरवाला बाइंडर्स प्राइवेट लिमिटेड। यहाँ बदस्तूर दो नंबर का काम चलता है। महेन्द्र ने खाता निकालकर हिसाब दर्ज कर लिया। चेकों को बैंक में जमा करने को रखा। नकद राशि थैले में रखी। उसके खाते में बेशक असली और दो नंबर दोनों तरह के कारो-बार का हिसाब रहता है और यही खाता उसके तमाम कारोबारों के लाखों रुपये का एक गोपनीय दर्पण भी है। एकमात्र इस खाते को खोलते ही उसकी आँखों के सामने तमाम आय-व्यय की तसवीर स्पष्ट हो उठती है।

यहाँ से निकलने के बाद महेन्द्र ने पुनः कलाई घड़ी की ओर निगाह दौड़ाई। पड़ाव पर एक बस आकर रुकी। कुछ ही मिनटों के दर-मियान एक प्राइवेट बस आई, मुसाफिरों से लदी-फँदी और महेन्द्र बदस्तूर सामने की सीट पर आसीन हो गया। आवाज कसने और गाली-गलौज करने की रफ्तार पहले की तरह ही चली। बस माणिक-

तल्ला के नुक्कड़ से मुड़कर सी० आई० टी० रोड की ओर दौड़ने लगी। समय का विशेष ध्यान रखना ही पड़ता है।

महेन्द्र इस समय मन ही मन जरा अधिक चंचल हो उठता है। बस सी० आई० टी० रोड के एक बगैर पड़ाववाले स्थान में खड़ी हुई। महेन्द्र नीचे उतर पड़ा। सामने ही एक बहुमंजिली इमारत है। किसी की नजर उस पर नहीं पड़ती है हालांकि दरवान उसे अच्छी तरह पहचानता है। वह लिफ्ट से आठवीं माला पहुँचता है, थैले से झटपट चाबी निकाल एक दरवाजे को खोलता है। अन्दर जाकर अभ्यस्त हाथों से बत्ती जलाता है। एक विशाल कोठरी, स्टील की एक आलमारी, संलग्न गुसलखाना। एक बन्द खिड़की के पास एक चौकी, उस पर मामूली बिस्तर। ऊपर सिलिंग फैन। महेन्द्र ने दरवाजा बन्दकर दिया और गुसलखाने के दरवाजे को खोलकर देखा। उसके बाद दरवाजे को बन्दकर आलमारी के पास लौट आया। स्टील की आलमारी को खोल, झुककर बैठ गया। जो चीज बन्द चेम्बर जैसी लगी, उसे दोनों हाथों से उठाकर फर्श पर रखा। नीचे का स्टील का ढक्कन बाहर निकल आया। उसके नीचे और कुछ हो सकता है, ऐसा संभव नहीं लगता। लेकिन महेन्द्र ने एक चाबी आलमारी के नीचे घुमाकर अत्यन्त अभ्यस्त हाथों से एक खास स्थान में चाबी को जैसे ही घुमाया, स्टील का ढक्कन एक किनारे जरा सा सरक गया। वहाँ केवल सौ-सौ रुपये की गड्डियाँ हैं। इसके बाद उसने कपड़े के थैले से एक सौ रुपये के बारह नोट उस चेम्बर के अन्दर डाल दिए। चाबी घुमाते ही स्टील का ढक्कन पुनः बन्द हो गया। कहीं कोई फांक नहीं रही। फर्श पर रखे चाबी लगे चेम्बर को उठाकर सिलसिलेवार बिठा दिया और चाबी से दूसरा चेम्बर खोला। लगभग पाँच-सात सौ रुपये के नोट वहाँ बिखरे हैं। एकबार सरसरी निगाह से देखकर बन्द कर दिया। उसके बाद आलमारी के पल्ले को चाबी लगाकर बन्द कर दिया।

यह सारा काम कुछ ही मिनटों में खत्म हो गया। महेन्द्र को पसीना

शर्त्तें हैं। दोनों के लेन-देन में ये शर्त्तें अमल में लाई जाती हैं और दूसरों को इस बात की जानकारी नहीं है। इसके अलावा इस मुहल्ले में इस तरह का जमा-जमाया जिल्दसाजी का कारखाना सुधीर जैसे दादा किस्म के आदमी के अतिरिक्त दूसरे के लिए चलाना मुमकिन नहीं है। वाहर आसपास के वरामदे पर तरह-तरह के गिरहों के बरामदेवाज वैठे रहते हैं। प्रत्येक व्यवसायी से उन्हें तरह-तरह की प्राप्यराशि प्राप्त होती है और उस प्राप्यराशि का हिसाब-किताव और लेन-देन सुधीर ही करता है। कई बार महेन्द्र पर आक्रमण हुआ तो उसकी समझ में आ गया कि सुधीर के बिना उसका काम-धाम चल नहीं सकता। क्योंकि वरामदेबाज जेब में हाथ लगाना भी गुनाह नहीं मानते हैं।

महेन्द्र ने जैसे ही छोटे कमरे में प्रवेश किया, उसके पीछे-पीछे सुधीर भी दाखिल हुआ। लगभग पैंतालीस मिनट तक प्राप्यराशि और काम का हिसाब-किताव चलता रहा। एकमात्र इसी कारोबार में सुरबाला का नाम है—सुरवाला वाइंडर्स प्राइवेट लिमिटेड। यहाँ बदस्तूर दो नंवर का काम चलता है। महेन्द्र ने खाता निकालकर हिसाव दर्ज कर लिया। चेकों को वैंक में जमा करने को रखा। नकद राशि थैले में रखी। उसके खाते में वेशक असली और दो नंबर दोनों तरह के कारो-वार का हिसाव रहता है और यही खाता उसके तमाम कारोबारों के लाखों रुपये का एक गोपनीय दर्पण भी है। एकमात्र इस खाते को खोलते ही उसकी आँखों के सामने तमाम आय-व्यय की तसवीर स्पष्ट हो उठती है।

यहाँ से निकलने के वाद महेन्द्र ने पुनः कलाई घड़ी की ओर निगाह दौड़ाई। पड़ाव पर एक वस आकर रुकी। कुछ ही मिनटों के दर-मियान एक प्राइवेट वस आई, मुसाफिरों से लदी-फँदी और महेन्द्र वदस्तूर सामने की सीट पर आसीन हो गया। आवाज कसने और गाली-गलौज करने की रफ्तार पहले की तरह ही चली। बस माणिक-

तल्ला के नुक्कड़ से मुड़कर सी० आई० टी० रोड की ओर दौड़ने लगी। समय का विशेष ध्यान रखना ही पड़ता है।

महेन्द्र इस समय मन ही मन जरा अधिक चंचल हो उठता है। बस सी० आई० टी० रोड के एक बगैर पड़ाववाले स्थान में खड़ी हुई। महेन्द्र नीचे उतर पड़ा। सामने ही एक बहुमंजिली इमारत है। किसी की नजर उस पर नहीं पड़ती है हालांकि दरवान उसे अच्छी तरह पहचानता है। वह लिफ्ट से आठवीं माला पहुँचता है, थैले से झटपट चाबी निकाल एक दरवाजे को खोलता है। अन्दर जाकर अभ्यस्त हाथों से बत्ती जलाता है। एक विशाल कोठरी, स्टील की एक आलमारी, संलग्न गुसलखाना। एक बन्द खिड़की के पास एक चौकी, उस पर मामूली बिस्तर। ऊपर सिलिंग फैन। महेन्द्र ने दरवाजा बन्दकर दिया और गुसलखाने के दरवाजे को खोलकर देखा। उसके बाद दरवाजे को बन्दकर आलमारी के पास लौट आया। स्टील की आलमारी को खोल, झुककर बैठ गया। जो चीज बन्द चेम्बर जैसी लगी, उसे दोनों हाथों से उठाकर फर्श पर रखा। नीचे का स्टील का ढक्कन बाहर निकल आया। उसके नीचे और कुछ हो सकता है, ऐसा संभव नहीं लगता। लेकिन महेन्द्र ने एक चाबी आलमारी के नीचे घुमाकर अत्यन्त अभ्यस्त हाथों से एक खास स्थान में चाबी को जैसे ही घुमाया, स्टील का ढक्कन एक किनारे जरा सा सरक गया। वहाँ केवल सौ-सौ रुपये की गड्डियाँ हैं। इसके बाद उसने कपड़े के थैले से एक सौ रुपये के बारह नोट उस चेम्बर के अन्दर डाल दिए। चाबी घुमाते ही स्टील का ढक्कन पुनः बन्द हो गया। कहीं कोई फाँक नहीं रही। फर्श पर रखे चाबी लगे चेम्बर को उठाकर सिलसिलेवार बिठा दिया और चाबी से दूसरा चेम्बर खोला। लगभग पाँच-सात सौ रुपये के नोट वहाँ बिखरे हैं। एकबार सरसरी निगाह से देखकर बन्द कर दिया। उसके बाद आलमारी के पल्ले को चाबी लगाकर बन्द कर दिया।

यह सारा काम कुछ ही मिनटों में खत्म हो गया। महेन्द्र को पसीना

छूटने लगा। एक यही ऐसा वक्त है जब उसके जैसा निरीह आदमी भी बेचैन और उत्कंठित दीख पड़ता है। उसके चेहरे की अभिव्यक्ति में जैसे एक चौर्यवृत्ति का भाव स्पष्ट हो उठता है। लेकिन वह पंखे को चालू नहीं करता। जल्दी से बत्ती बुझाकर कोठरी के बाहर चला आया और दरवाजे को जैसे ही खींचा कि इएल लॉक अपने आप बन्द हो गया। महेन्द्र लिफ्ट के पास जाकर खड़ा हुआ। बटन दबाया। थोड़ी ही देर में लिफ्ट चला आया। वह ऊपर गया। फिर नीचे उतरा। लिफ्ट में उसके साथ और दो व्यक्ति थे। मगर उसे कोई पह-चानता नहीं था।

महेन्द्र जैसे ही नीचे आया, दरबान ने उसे सलाम किया और सामने खड़ा हो गया। महेन्द्र ने कुरते की अन्दरूनी पॉकेट से दो रुपये का नोट निकालकर उसे दिया। दरवान ने सलाम बजाते हुए पूछा, "इस रविवार को माँजी को साथ लेकर आ रहे हैं न बाबूजी ?"

महेन्द्र हर रविवार को दोपहर के भोजन के बाद सुरबाला के इस एक कमरे के फ्लैट में आता है और शाम तक का वक्त यहीं ारता है। दरवान की यह दृढ़ धारणा है कि सुरबाला महेन्द्र की पत्नी नहीं है—छुट्टी के दिन कुछेक घण्टे गुजारने लिए उसकी वह संगिनी मात्र है और इसी मकसद से यहाँ एक कमरेवाला यह फ्लैट रखे हुए है। इतना जरूर है कि वह पत्नी का परिचय पत्नी कहकर ही देता है। तमाम इमारत की जो लोग देख-रेख करते हैं वे विश्वास करते हैं और न भी करते हैं। इसके लिए कोई माथापच्ची नहीं करता। क्योंकि किसी-किसी फ्लैट में व्यभिचार का भी कारोबार चलता है, लेकिन इसके बारे में भी कोई कुछ नहीं बोलता। इस तरह के स्थानों में जिन्दगी जीने में यही सुविधा है।

महेन्द्र ने फिर घड़ी पर नजर दौड़ाई और बस के पड़ाव पर आकर खड़ा हो गया। वह जिस नंबर की बस से आया था, वही फिर दमदम के चिड़िया मोड़, श्याम बाजार, माणिकतल्ला होती हुई लौटती है।

बँधा-बँधाया वक्त है। कुछ ही मिनटों में बस आ गई और ड्राइवर ने बदस्तूर सामने का दरवाजा खोल दिया। महेन्द्र जैसे ही सवार हुआ, बस चलने लगी। जब दमदम के चिड़िया मोड़ पर उतरा उस समय रात के साढ़े आठ बज रहे थे। गली से होते हुए जब घर लौटा, सुबह से अब तक बारह घण्टे बीत चुके थे उसे मालूम है, सतु और मति अब तक नहीं लौटे होंगे। कभी दस के पहले लौटते भी नहीं हैं। महेन्द्र सरकार, राइटर्स के किरानी का दिन-भर का जीवन इसी प्रकार व्यतीत होता है। यही हर रोज का सिलसिला है।

फाटक से होते हुए अन्दर जाने पर महेन्द्र को कभी चौखट में लगी घण्टी नहीं बजानी पड़ती है। रोजमर्रा की तरह सुरबाला दरवाजा खोलकर खड़ी थी। महेन्द्र ने घर की रोशनी में एक बार सुरबाला की ओर देखा और फिर अन्दर की ओर कदम बढ़ाते हुए बोला, "नीतू कहाँ है?"

"नीतू आज अन्दर के कमरे में पढ़ रहा है।' सुरबाला ने दरवाजा बन्द करते हुए कहा।

महेन्द्र को मालूम है कि बीच-बीच में नीतू बाहरी कमरे के बजाय अन्दर के कमरे में बैठकर पढ़ता है। खासकर उस रोज जब प्राइवेट ट्यूटर पढ़ाने नहीं आता। अकेले बाहरी कमरे में बैठकर पढ़ना नीतू को अच्छा नहीं लगता। यानी उसे डर लगता है।

अभी महेन्द्र के थैले में लगभग पचीस-तीस रुपये थे। उसने सारा पैसा सुरबाला को दे दिया, अगले दिन के गृहस्थी का खर्च चलाने के लिए। पाँच-सात रुपये वह अपने लिए रख लेता है। आलमारी खोल, कपड़े के थैले को अन्दर रखा। कुछ ही मिनटों के दरमियान कपड़े-लत्ते उतार, सिर, पीठ और छाती के अलावा सारे अंगों को पानी से धो, शरीर पोंछ, लुंगी पहन, भोजन के कमरे में गया। खाना खाने के पहले नीतू को पुकारा, "अभी खाना खाओगे?"

"नहीं, मैं बाद में खाऊँगा।" नीतू ने किताब से नजर न हटाते हुए जवाब दिया।

महेन्द्र ने भोजन-कक्ष में आकर देखा, सुरबाला ने पीढ़ा बिछाकर, गिलास रखकर थाली में भोजन परोस दिया है। महेन्द्र बिना कुछ बोले खाने बैठ गया। रात में वह भात नहीं खाता। चारेक रोटी, मछली, सब्जी और बताशा डाले हुए गरम दूध में और दो रोटी। जब वह रोटी, मछली, सब्जी खत्म कर दूध में रोटी-बताशे मिला रहा था, सुरबाला बोली, "सिलीगुड़ी से इरानी ने चिट्ठी भेजी है।"

सिलीगुड़ी से इरानी ने ? महेन्द्र ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा, "वह कौन है ?"

सुरबाला बोली, "भूल गए ? हम लोगों की नन्दु की शादी के बाद एक बार रविवार को एक वक्त के लिए आ चुकी है। मेरी चाची की वही लड़की जिसका अच्छा नाम है रत्ना।"

महेन्द्र दूध में रोटी मिलाते हुए इरानी यानी रत्ना को याद करने की कोशिश कर रहा था और वह याद भी आ गई। उसकी आँखों के सामने छब्बीस-सत्ताईस साल की एक लड़की तिर आई। गोरा-चिट्टा कहने से जो बात समझ में आती है, वैसी न रहने पर भी गोरी है। काली-काली आँखें, नाक खड़ी, मगर तीखी नहीं। चेहरा लंबोतरा और मिट्टी की मूरत जैसा दीप्त और आकर्षक। मिट्टी की मूरत से तुलना इसलिए की गई क्योंकि मूरत के शरीर के गढ़न में जिस प्रकार की दीप्ति और अल्हड़पन रहता है, इरानी भी वैसी ही है। वह हँसमुख है, थोड़ी-बहुत शोख भी। महेन्द्र को बहनोई के नाते 'जमाई बाबू' कहकर संबोधित नहीं करती, 'महेनदा' कहकर पुकारती है। नन्दिनी की शादी के मौके पर महेन्द्र ने उसे सिलीगुड़ी के रिश्तेदारों के साथ देखा था। और एक बार थोड़ी देर के लिए इसी मकान में मुलाकात हुई थी। एक दोपहर को खाना खाकर चली गई थी। किसी जरूरी काम से कलकत्ता आई थी।

"याद नहीं आ रहा ?" सुरबाला ने कहा, वही—।"

महेन्द्र ने टोका, "हाँ, याद आ गया। तुम्हारे दूर के रिश्ते के चाचा···मृत्यु हो चुकी है। शायद नाम था अक्षय मित्तिर—तुम्हारी उसी विधवा चाची की लड़की है न ?"

"बाप रे! तुम्हें तो खानदान तक का याद है।" सुरबाला ने हँसते हुए कहा।

महेन्द्र ने मुसकराते हुए दूध से भीगी रोटी मुंह में डाली और उसे यह भी याद आया कि इरानी पुकारू नामवाली उस लड़की की काली आँखों का कटाक्ष पुरुषों के हृदय में सहज ही बिजली की कौंध पैदा कर देती है। भोजन चबाते-चबाते बोला, "खानदान का भी याद आ गया। नन्दिनी की शादी के समय ही तो तुम्हारी उस चाची जी से जान-पहचान हुई। उसके पहले तो उन लोगों को देखा तक नहीं था।"

"हाँ, रिश्ता तो बहुत दूर का है।" सुरबाला ने कहा, "मेरी अपनी चाची नहीं है, चाची की बहन लगती है। मौसी कहना ही अच्छा रहता, मगर हम चाची जी ही कहकर पुकारते आए हैं।"

महेन्द्र खाना खाते-खाते बोला, "हाँ-हाँ, वह लड़की किसी बैंक में काम करती है न ?"

"हाँ, और इसीलिए खत लिखा है।"

महेन्द्र की पेशानी पर सलवटें उभर आईं, आँखों में जिज्ञासा का भाव, "क्या ?"

"इरानी का तबादला कलकत्ते के हेड ऑफिस में हो गया है।" सुरबाला ने कहा, "तुम खाकर उठोगे और खत देखोगे तो बात तुम्हारी समझ में आ जायेगी।"

महेन्द्र का मन बेचैन हो उठा। क्षण-भर में ही उसके मन में एक अनुमान जग पड़ा और रत्ना यानी इरानी का चेहरा उसकी आँखों के सामने तिर आया। हाँ, इरानी नाम से बंगालियों को जैसे एक जंगली, दुष्कर्म में प्रवृत्त, चेहरे की याद आ जाती है, यह इरानी भी बहुत-कुछ

वैसी ही है । खाते-खाते महेन्द्र को इरानी की हास-परिहास से भरपूर बातें और मुसकराहट याद आने लगी । बातचीत वह फर्राटे से करती है, शरमीली लड़की नहीं है । लेकिन यही उसके आकर्षण का कारण है। महेन्द्र ने बड़े कटोरे को उठाकर दूध पी लिया और उठकर खड़ा हो गया । गुसलखाना जाकर हाथ-मुंह धोया और अँगोछे से पोंछा । सुरबाला ने एक लिफाफा उसकी ओर बढ़ा दिया । लिफाफा हाथ में ले महेन्द्र ने पढ़ते हुए नीतू की ओर ताका और बाहर के कमरे की ओर चला गया । सुरबाला उसके पीछे-पीछे हो ली । महेन्द्र ने स्विच दबाकर बत्ती जलायी और लिफाफे से खत को बाहर निकाला । इस उम्र में भी वह बगैर चश्मे का लिखने-पढ़ने का थोड़ा-बहुत काम कर लेता है। तब हाँ, काम ज्यादा होता है तो ऐसा कर नहीं पाता । खत को बाहर निकाल, उसे आँखों से काफी कुछ दूरी पर रख, पढ़ने लगा, "सुरादी, प्रणाम । एक खास जरूरत की वजह से तुम्हारे पास यह खत भेज रही हूँ । मेरी जरूरत को तुम लोग किस रूप में लोगे, पता नहीं; फिर भी भाग्य की परीक्षा करने के निमित्त लिख रही हूँ। बहुत दिनों तक ... स्सिल में नौकरी कर चुकी । अब मेरा तबादला कलकत्ते के मुख्यालय में हो रहा है । कहा जा सकता है कि तबादले की इच्छा मुझे भी थी । माँ की जरा भी सहमति न थी । बड़े भैया या भाइयों की भी नहीं । लेकिन जब नौकरी ही करनी है तो हमेशा के लिए यहाँ क्यों पड़ी रहूँ ? अब बात यह है कि कलकत्ता जाते ही कोई मकान या लड़कियों के किसी होस्टल में सीट मिल जाए, यह बड़ी ही मुश्किल बात है । कम से कम तीन महीने के लिए तुम और महेनदा मुझे अपने घर में टिकने दो तो मैं निश्चिन्तता की साँस ले सकूं । वरना मैं तबादले का आदेश नहीं ले पाऊंगी । अन्यथा मत मानना, तुम लोगों के पास टिकने पर मेरा खर्च तुम्हीं लोगों को वहन करना होगा । कलकत्ता के मुख्यालय में जाने का मतलब है मेरी तरक्की । जब अलग रहूँगी तो अपना खर्च खुद चलाऊँगी ।

"अब इस मुद्दे पर तुम और महेनदा बातचीत कर जो तय करोगी, वही होगा। तब हाँ, तुम्हारी सहमति मिल जाने पर मुझे बेहद प्रसन्नता होगी, इतना जो जानती ही होगी।" इतनी दूर तक पढ़ने के बाद बाकी कुशल-मंगल आदि की मामूली बातें पढ़ने की जरूरत महेन्द्र ने महसूस नहीं की। खत को मोड़कर लिफाफे के अन्दर डाल दिया और सुरबाला की ओर कदम बढ़ाते हुए उसके चेहरे की ओर ताका।

सुरबाला महेन्द्र के चेहरे पर आँखें टिकाए थी। खत अपने हाथ में लेती हुई बोली, "कहो, क्या जवाब दिया जाए?"

महेन्द्र की आँखों के सामने इरानी का चेहरा तैर रहा था। उसके मन में दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ टकरा रही थीं। किसी नारी के संबंध में दोनों प्रतिक्रियाएँ उसके जीवन में पहली बार आई थीं। एक सूक्ष्म प्रसन्नता और भय के टकराव से उसका मन थरथरा रहा था। इतना जरूर है कि उसके निरीह चेहरे पर किसी प्रकार की अभिव्यक्ति जाहिर नहीं हुई। उसके जीवन की एक विशेष भंगिमा है। वह एक विशेष ढर्रे पर चलता है। किसी औरत के बारे में सोचने की उसे फुर्सत नहीं है, सिर्फ होसियारी और जिल्दसाजी के कारखाने की औरतों को छोड़कर। उस सोच का प्रवाह भी भिन्न है, उसका प्रभाव उसके मन में कोई हलचल नहीं जगाता। उसके जीवन में, इस लिहाज से, नारी के रूप में एकमात्र सुरबाला ही है। मगर इरानी में एक ऐसा कशिश है दुनिया के तमाम पुरुषों को भयभीत कर सकता है। महेन्द्र इस चीज को महसूस कर रहा है। लेकिन वह भयभीत नहीं हुआ था। आज इस क्षण भयभीत होने का कारण यही है कि इरानी इस मकान में टिकना चाहती है। उसने निरीह भाव से सुरबाला से कहा, "इस सम्बन्ध में मैं क्या कहूँ, सुरो? जिस मुद्दे पर कभी सोचा नहीं, उसके सम्बन्ध में तत्काल क्या कुछ कहा जा सकता है?"

"सो तो ठीक ही कह रहे हो।" सुरबाला ने कहा, "अभी तुरन्त

तुम्हें कुछ कहना नहीं है। दो-चार दिन सोच लो, फिर जो तय करने का होगा, करना।"

महेन्द्र ने कहा, "तुम्हारी बहन की उम्र भी कुछ कम नहीं है। देखने में भी कोई बुरी नहीं है। घरवालों की ओर से शादी-ब्याह के बारे में सोचा क्यों नहीं जा रहा है ?"

"सोचने से ही हो जाएगा ?" सुरबाला ने हँसते हुए कहा, "पढ़ी-लिखी लड़की है, नौकरी कर रही है। उधर गृहस्थी का भी भार संभालना पड़ता है। मुझे मालूम है, इरानी के घरवालों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। अभी घरवालों की ओर से ही शादी कराने का कोई आग्रह नहीं है, क्योंकि उन्हें मालूम है, शादी होते ही लड़की से मिलनेवाला पैसा बन्द हो जाएगा। इसके अलावा, नौकरी पेशा लड़की का शादी कराना चाहे भी तो क्या वह तैयार होगी ?"

महेन्द्र ने सिर झटकते हुए कहा, "सो तो ठीक ही कह रही हो। तब हां, मेरे विचार में एक खास उम्र की दहलीज पर आते ही लड़कियों की शादी कर देना अच्छा रहता है। लड़की का मतलब है माथे का बहुत बड़ा बोझा।"

"तुम्हें तो वह फिक्र करना ही नहीं है।" सुरबाला मुसकराते हुई बोली, "एक ही थी और उसकी वक्त पर ही शादी करके निश्चिन्तता की सांस ले रहे हो।"

महेन्द्र ने मुसकराते हुए कहा, "और तुम निश्चिन्तता की साँस नहीं ले रही हो ? मैं अकेले ही ?"

"ऐसा कैसे कहूँ, मैं भी निश्चिन्तता की साँस ले रही हूँ।" सुरबाला ने कहा, "लड़की की शादी की उम्र हो जाए तो माँ-बाप को चिन्ता होगी ही। तब हां, इरानी की बात अलग है। उम्र हो गई है, नौकरी कर रही है। उसके बारे में उन्हीं लोगों को चिन्ता करनी है। कलकत्ते में इस तरह की हजारों लड़कियां देखी हैं जो अपने पैरों पर खड़ी होकर उपार्जन करती है और मौज-मस्ती में रहती हैं।"

महेन्द्र सुरबाला के चेहरे की ओर देखकर मुसकराया बोला, "यह तो मैं भी देख रहा हूँ। लेकिन वे लोग क्या सचमुच ही मौज-मस्ती में रहती हैं?"

"मैं तुम्हारे कारखाने की लड़कियों के बारे में बातें नहीं कर रही हूँ।" सुरबाला नाक सिकोड़ कर बोली, "वे लोग कितने मौज-मस्ती में हैं, ईश्वर ही जाने।"

महेन्द्र के निरीह चेहरे पर उदास हँसी तिर आई; बोला, "बात सही है, सुरो। तुम्हारी बहन इरानी की तरह वे लोग शिक्षित नहीं हैं, बैंक या दफ्तर में काम नहीं करतीं। उनमें से कुछ अपना नाम भी नहीं लिख पाती हैं। अँगूठे की छाप देकर वेतन लेती हैं। जब कारखाने में आती हैं और वहाँ से बाहर जाती हैं तो उनका पहरावा दूसरी ही तरह का होता है। देखने से लगता है, लड़कियाँ खुशहाल हैं। इरानी जैसी लड़कियों की बात ही अलग है, लेकिन मौज-मस्ती में रहना किसे कहते हैं, सुरो?"

सुरबाला तत्काल कोई उत्तर नहीं दे सकी। महेन्द्र की जिज्ञासा का सही-सही अर्थ समझने के लिए उसकी आँखों की ओर खोजी निगाहों से ताका। महेन्द्र के निरीह मुख और आँखों की पुतलियों में हलकी हँसी तिर आई। सुरबाला बोली, "क्या कह रहे हो, समझ नहीं पाई, जरा खोलकर कहो।"

महेन्द्र की आँखों की पुतलियों का अबूझ हास स्पष्ट हो उठा; बोला, "सीधी बात ही कह रहा हूँ। लड़कियाँ अगर पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़ी होती हैं तो यह बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन इतना ही क्या सब कुछ है? उसे क्या खुशहाल रहना कहा जाएगा? तुम्हीं लोगों का तो कहना है, शरीर और मन का भी कुछ धर्म हुआ करता है। इतना जरूर है कि यह सब बात मेरी समझ में नहीं आती। लेकिन उसका इन्तजाम कैसे किया जाए?"

सुरबाला की चिन्तित धुँधली आँखों में प्रकाश खेल गया। बोली

"अब तुम्हारी बात समझ में आई। मैंने इतना कुछ सोचकर मौज-मस्ती में रहने की बात नहीं कही थी। आजकल की नौकरी पेशा लड़कियों को देखने से लगता है कि बिलकुल बेपरवाह हैं, रंगीन तितलियों की तरह उड़ती रहती हैं। मानो, बहुत ही सुखी हों, किसी तरह की कोई चिन्ता नहीं। तुम्हें क्या ऐसा नहीं लगता ?"

महेन्द्र ने कहा, "बाहर से देखने से ऐसा ही लगता है। अन्दरूनी बातें कौन जाहिर करती है ?"

"इरानी के बारे में हमें इतनी माथापच्ची करने की जरूरत ही क्या है ?" सुरबाला ने कहा, "उसकी अन्दरूनी बातें जानने की हमें जरूरत ही क्या है ?"

महेन्द्र ने कहा, "कोई जरूरत नहीं। अपना खाकर पराये की परेशानी मोल लेने से फायदा ही क्या ? तब हाँ, मैं पुराने खयाल का आदमी हूँ, लड़कियों की शादी वक्त पर करना, गृहस्थी चलाना, यही सब बात साफ-साफ मेरी समझ में आती है। नौकरी पेशा लड़कियों की मानसिकता मेरी समझ में नहीं आती और न ही समझने की कोशिश करता हूँ।"

"फिर क्या इरानी को तुमने नकार दिया ?" सुरबाला के चेहरे पर आश्चर्य और हताशा का भाव तिर आता है।

महेन्द्र ने हँसकर कहा, "नकार क्यों दूँ ? मैं तो बस यही कहना चाहता था कि औरतों की मानसिकता मेरी समझ में नहीं आती। जवाब क्या देना है, तुम्हीं सोचकर तय कर लो।"

"मेरे अकेले सोचने से नहीं होगा।" सुरबाला बोली, "तुम्हीं असली आदमी हो, तुम जो तय करोगे, वही होगा।"

महेन्द्र ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, यह बात ठीक नहीं सुरो। मैं चाहे लाख करूँ, मगर गृहस्थी दरअसल तुम्हारी ही है और मैं यह जानता हूँ। मैं तो रात में खाने और सोने आता हूँ, रात बीतने पर फिर खा-पीकर बाहर निकल जाता हूँ। इरानी को क्या जवाब देना है,

इसकी जिम्मेदारी मुझसे बढ़कर तुम्हारी ही है।"

"तुमने मुझे चिन्ता में डाल दिया।" सुरबाला बोली, "जाहिर है कि मेरे बाल-बच्चे बड़े हो चुके हैं, उनकी राय भी जानना जरूरी है।"

महेन्द्र के चेहरे के भाव में कोई परिवर्तन नहीं आया; बोला, "तुम्हारे लड़कों के आने में अब भी देर है। मैं जाकर सो रहता हूँ। अब तुम जाकर नोटू को खाना दे दो।" यह कहकर अन्दर जाने के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोला, "तब हाँ, किसी के बारे में मैं नए सिरे से माथा-पच्ची नहीं कर सकता। मैं अपनी ही चिन्ता से परेशान हूँ।"

सुरबाला के चेहरे पर निराशा का भाव तिर आया। महेन्द्र के पीछे-पीछे जाती हुई बोली, "तुम्हारी राय के बगैर कुछ होना नामुमकिन है।"

महेन्द्र उस तरफ मुंह किए बगैर बोला, "तुम लोगों को जो करना हो, करो; मेरी राय उचित समय पर मिल जाएगी।"

सुरबाला के चेहरे पर निराशा के साथ बेचैनी की छाया उतर आई।

तीसरे दिन रात के समय खाना खाकर उठने के बाद सुरबाला ने तनिक उत्कण्ठा के स्वर में पूछा, "क्यों, इरानी के बारे में कुछ सोचा-विचारा?"

"तुमने कुछ सोचा है?" महेन्द्र ने प्रश्न के बदले प्रश्न किया।

सुरबाला बोली, "मैं मती और सतु से बातें कर चुकी हूँ। वे लोग असहमत नहीं हैं।"

"उन लोगों की बातें अहमियत नहीं रखतीं, असली बात तुम्हारी ही होगी।" महेन्द्र ने कहा, "गृहस्थी के बारे में उन्हें जानकारी है ही कितनी? या जिम्मेदारी का अहसास ही कितना है?"

सुरबाला ने महेन्द्र के निस्पृह चेहरे की ओर एक बार ताका।

उसकी आँखों में दुविधा है लेकिन व्यग्रता भी। महेन्द्र की अनिच्छा का भाव साफ-साफ जाहिर नहीं हो रहा। इसी ने सुरबाला को चिन्ता में डाल दिया है। उसकी गृहस्थी में इस तरह की घटना का यह प्रथम सूत्रपात है। सुरबाला के मायके के किसी रिश्तेदार ने इस तरह का प्रस्ताव इसके पहले नहीं रखा है। महेन्द्र के रिश्तेदारों के बारे में यही कहा जा सकता है कि वे लोग इस घर से बहुत ही कम संपर्क रखे हुए हैं। सुरबाला हालाँकि मन ही मन किसी निष्कर्ष पर पहुँच चुकी है लेकिन महेन्द्र के निस्पृह चेहरे को देखकर वह बिना बोले नहीं रह सकी, "तुम्हारा हाव-भाव देखकर मुझे कुछ कहने का साहस नहीं हो रहा है।"

"साहस न हो पाने का कारण क्या है?" महेन्द्र अपने चेहरे पर स्वाभाविक हँसी लाकर बोला, "मैंने तो तुम्हीं पर सारी जिम्मेदारी सौंप दी है। तुम जो कहोगी, वही होगा।"

सुरबाला के चेहरे पर गंभीरता उतर आई; बोली, "फिर यही कहो न, कि तुम नहीं चाहते। ऐसी हालत में मैं इरानी को आने के बारे में नहीं लिख सकती। मैं तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं करूँगी।"

महेन्द्र ने कहा, "किसने कहा कि मेरी इच्छा नहीं है? मैं तुम्हारी राय मानकर ही चलना चाहता हूँ, असली बात यही है। इसमें तुम्हारे लिए चेहरा लटकाने की कौन-सी बात है?"

सुरबाला ने महेन्द्र की आँखों की ओर देखा। महेन्द्र भी उसी की ओर ताक रहा था। वह सुरबाला के गंभीर और अभिमान से आहत आँखों की ओर ताकते हुए हँसकर बोला, "गुस्से में क्यों आ रही हो, सुरो। अपने मन की बात साफ-साफ कहो न।"

सुरबाला जैसे थोड़ी-बहुत प्रसन्न हो गई; बोली, "मेरे मन की बात यही है कि जब वह हम लोगों का सहारा चाह रही है तो फिर देना ही चाहिए। तीन महीने से ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। दो दिन सोचकर देखा, कलकत्ते में सचमुच उन लोगों का कोई नहीं है। होता तो और कुछ कह देती। मगर...।"

"समझ गया।" महेन्द्र हाथ उठाकर सुरबाला की बात के बीच में ही बोल उठा, "लड़कों ने क्या कहा, यह कहने की जरूरत नहीं। तुम्हारी इच्छा है तो इरानी को आने के बारे में लिख दो।"

सुरबाला फिर भी महेन्द्र के चेहरे की ओर दुविधापूर्ण दृष्टि से ताकती रही। महेन्द्र ने कहा, "क्या हुआ? अब तो इसमें कोई दूसरी बात नहीं है।"

"नहीं है, यह सही है, लेकिन फिर भी है।" सुरबाला बोली, "मुझे तो तुम्हारी राय के बारे में लिखना है। केवल अपनी राय जाहिर कर आने को लिखने से काम नहीं चलेगा। अपनी राय तुमने अब तक जाहिर नहीं की है।"

महेन्द्र ने मुसकराते हुए कहा, "इसके बाद भी अलग से अपनी राय जाहिर करूँ? इसमें रखा ही क्या है? तुम्हारी राय ही मेरी राय है। मैं तो सहमति प्रकट कर ही रहा हूँ। जाओ, अब नीतू को खाना दे आओ और मेरी मच्छरदानी लगा दो, मैं लेटना चाहता हूँ।"

सुरबाला बोली, "तुम्हें एक बारगी न पहचानती होऊँ, ऐसी बात नहीं है। फिर भी तुमने स्पष्ट तौर पर कुछ नहीं बताया।"

"इसके बाद भी स्पष्ट कहने को क्या बाकी रह जाता है?" महेन्द्र बोला, "तुम्हारी इच्छा है और मेरी भी असहमति नहीं है। इसके अलावा इससे मेरा सरोकार ही क्या है?"

सुरबाला ने मुसकराते हुए कहा, "मुझ पर तुम इतना भरोसा करते हो, पहले यह नहीं जानती थी।"

"किसी-किसी चीज के बारे में तुम पर भरोसा करने के अलावा मेरे लिए ही क्या उपाय है?" महेन्द्र बोला, "खासकर वैसे मामले में जहाँ मैं खुद कुछ नहीं कर सकता। अपनी राय देकर मैं निश्चिन्त हो गया, बाकी सारा कुछ तुम्हें देखना है।"

बात और आगे न बढ़ाकर सुरबाला ने नीतू को खाना दे और फिर मच्छरदानी लगा दी। बत्ती बुझाकर महेन्द्र लेट

भर मेहनत करने के बाद बिस्तर पर लेटते ही उसकी आँखों में नींद उतर आती हो, ऐसी बात नहीं। उसके मस्तिष्क को इस वक्त तरह-तरह की चिन्ताएँ जकड़ लेती हैं। आज सुरबाला से बातें करने के बाद उसकी आँखों के सामने खास तौर से इरानी का ही चेहरा तिर आया। वह क्या इरानी को दो दिनों से बिलकुल भूल चुका था ? नहीं, भूला नहीं था।

एक मामूली किरानी, जिसके जीवन के नेपथ्य में एक विशाल व्यावसायिक जगत की धारा प्रवाहित हो रही है और जिस धारा का हर मोड़ उसे जबानी याद है, वैसे आदमी को भी इरानी के संबंध में किसी सिद्धान्त पर पहुँचने में असुविधा हो रही है। असुविधा से भी अधिक बेचैनी। मौजूदा हालत में इस विषय में कोई जटिलता नहीं है। एक रिश्ते की लड़की आकर कुछ दिन ठहरेगी और इससे उसे बहुत ज्यादा असुविधा अगर न हो तो यह कोई मुश्किल बात नहीं है। बहुतेरे परिवारों में इस तरह की घटना घटित होती है। लेकिन महेन्द्र जानता है, उसके स्वयं के जीवन और परिवार से दसियों परिवार की तुलना नहीं की जा सकती। वह सिर्फ एक कार्य निवृत्ति के समीप पहुँचने वाला किरानी होता तो सारा मामला अत्यन्त सहज-सरल होता। बाहरी आदमियों के लिए भी सहज होता। रिश्तेदार भले ही उसके बारे में जो चाहें कहें, मगर तथ्य की जानकारी उन्हें नहीं के बराबर है। उस दृष्टि से महेन्द्र के जीवन में एक नेपथ्य है। इसके अलावा मुंह से वह चाहे लाख कहे कि इस गृहस्थी में वह केवल रात्रिवास करता है और फिर बाहर चला जाता है, लेकिन असली तथ्य यही है कि उसका दिन के अन्त का आवर्तन-प्रत्यावर्तन यहीं होता है। अपने विशाल कारोबार और जायदाद के उथल-पुथल से अन्दर ही अन्दर वह हमेशा बेचैन और चिन्तित रहता है, स्नायुओं पर तनाव का भार रहता है। फिर भी यही उसके जीवन का नशा है और उससे छुटकारा पाने का रास्ता वह खुद भी नहीं जानता। छुटकारा मिल जाए, ऐसा उसने कभी सोचा भी नहीं

है। बल्कि सच कहा जाए तो एक तरह से अनायास ही अर्थ-संग्रह का रास्ता मिल जाने से उसने जिन्दगी के बाकी दिनों की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा है। फिर भी उसने अपने व्यवसाय-वाणिज्य और वित्त का एक मात्र स्वयं की प्राप्ति के तौर पर दावा नहीं किया है। लगता है, कहीं न कहीं कोई छिद्र या धोखाधड़ी रह गई है, जिसके कारण सोलहो आने प्राप्ति के तौर पर उन वस्तुओं का दावा नहीं किया जा सकता। यदि ऐसा संभव होता तो उसका जीवन जीने का ढर्रा और ही तरह का होता। यही वजह है कि वह निरीह-निर्दोष है, नितान्त जीवन जीने को ग्लानि लेकर ही जिन्दा है। अपने कपड़े-लत्ते और आचार-विचार से वह यही साबित करना चाहता है। और इन सब कारणों से अपनी एक सत्ता की ओर, जो उपेक्षित-सी पड़ी है, न उसने कभी ताका है और न ही उसे पहचानता है।

महेन्द्र के मनोजगत के इन पहलुओं पर गौर करने पर उसे एक शब्द में घर-गृहस्थी में उलझे रहनेवाला प्राणी नहीं कहा जा सकता। बल्कि लुटेरा भी जिस तरह किसी खास वक्त निश्चिन्त आश्रय की तलाश करता है, गृहस्थी उसके लिए वैसी ही है। इस दृष्टि से इस गृहस्थी में एक बाहरी लड़की को आश्रय देने से उसकी परिणति क्या हो सकती है, यह बात संकट का चेहरा ओढ़ उसके सामने खड़ा हो गया है। इसी वजह से अपना स्पष्ट विचार न जाहिर कर उसने इसकी जिम्मेदारी सुरबाला पर सौंप दी है। और, इसके साथ ही उसके मन में सूक्ष्म रूप से आकर्षक इरानी के प्रति एक प्रसन्नता और भय का मिला-जुला भाव है। हालांकि यह सूक्ष्म भावबोध उसके लिए जरा भी संकट की बात नहीं है।

सात दिन के बाद, रात साढ़े आठ बजे महेन्द्र अपना रोजमर्रा का काम खत्म कर घर लौटा है। फाटक पूरे तौर पर खोलने की

नहीं पड़ी। एक आदमी आसानी से समा जाए ऐसा एक दरवाजा, गेट के ग्रिल के पास वना हुआ है। वाहर से उसकी छिटकनी खोली जा सकती है। दिन-भर में दो वार ही वड़े फाटक को खोलने की जरूरत पड़ती है, मती और सतु जब मोटरसाइकिल लिए निकलते हैं और लौटकर आते हैं।

महेन्द्र ने अलग से बने दरवाजे के पल्ले को खोल जैसे ही अन्दर कदम रखा, उसने देखा, वाहर का दरवाजा खोले सुरबाला खड़ी नहीं है। खुली खिड़की से घर के भीतर रोशनी जलती दीख रही है। शायद नीतू पढ़ रहा है। सुरबाला रसोई घर के काम में व्यस्त है। बीच-बीच में ऐसा भी होता है। हालांकि अधिकांश दिन सुरवाला का रसोई का काम बहुत पहले ही खत्म हो चुका होता है। गृहस्थी में उसका सबसे बड़ा काम है, दोनों जून रसोई पकाना, गायों को सानी-पानी देना तथा दुहना। बाकी काम दाई-नौकर उसके हुक्म पर करते हैं। शाम हो जाती है तो सरला घर चली जाती है। मदन नामक पन्द्रह-सोलह साल के लड़के को भी सुरवाला दोनों वक्त की रसोई बनाने के बाद छुट्टी दे देती है।

महेन्द्र ने बाहरी कमरे के दरवाजे के पास पहुँचकर जैसे ही कॉलिंग वेल दबाना चाहा, दरवाजे के पल्ले अचानक खुल गए। देखा, उसकी आँखों के सामने एक मोहिनी नारी-मूर्त्ति खड़ी है, जिसके उग्र वक्षस्थल के लाल ब्लाउज के एक सिरे पर का आँचल उघड़ा हुआ है। पुष्ट, लेकिन मेदविहीन लंबे-लंबे दोनों हाथ दरवाजे पर टिके हैं। आँखों की कोर और होंठों पर मुसकराहट। जेवर-जेवरात का कहीं नामोनिशान नहीं। सिर के बाल पीछे की ओर सँभले हैं लेकिन गरदन या पीठ पर बिखरे हुए नहीं हैं। दीख नहीं रही है लेकिन हो सकता है पीछे की ओर चोटी झूल रही हो। महेन्द्र न केवल अवाक् और विह्वल है, एकाएक नारी-मूर्त्ति के सामने अपने को खड़ा पाकर उसके दिन-भर के थके-माँदे सीने में साँस भी अटक सी गई है। भूतग्रस्त व्यक्ति की तरह उसने टूटे स्वर में कहा, "कौन ?"

लहमे-भर में उस नारी-मूर्ति का क्षीण कटि प्रदेश तिरछा हो गया, उर्ध्वांग आगे बढ़ आये और सुगढ़ नितंब अत्यन्त उन्नत दीख पड़ा। खिलखिलाती हँसी की थरथराहट से पीन पयोधर काँप उठे। लेकिन महेन्द्र को लगा, उस दृश्य और शब्द से उसका जिस्म जैसे शीशे की तरह चूर-चूर हो गया। उसी स्थिति में हँसी से छलकते मृदंग जैसे शब्द उसके कानों में आए, "ए सुरादी, देखो तो सही, मुझ पर नजर पड़ते ही महेनदा ऐसे चिहुँक उठे जैसे भूत पर नजर पड़ी हो।"

इरानी की बात समाप्त होने के पहले ही महेन्द्र ने उसे पहचान लिया था। इरानी के पीछे से सुरबाला और उससे थोड़ी दूरी पर खड़ी नीतू की हँसी का रेला उसके चेहरे से आकर टकराया। सुरबाला ने कहा, "चौंकाने के खयाल से ही तो तुम तेज कदमों से दरवाजा खोलने गई थीं। दिन-भर खटने के बाद अभी वह चिन्ताओं में डूबा आ रहा है।"

"सचमुच!" इरानी ने दरवाजे से बगैर हटे कहा, "बुरा तो नहीं मान गए महेनदा? आइए, घर के अन्दर आइए।" उसने अपना दाहिना हाथ महेन्द्र की ओर बढ़ा दिया।

महेन्द्र के हृदय में तब भी इरानी की हँसी की झंकार गूँज रही थी। इरानी के स्वाभाविक कौतुक को भी उसने पर्याप्त मात्रा में हृदयंगम कर लिया है, हालांकि इरानी के मूर्ति के स्वास्थ्य और सौंदर्य की व्यग्रता से वह स्वयं को पूरे तौर पर अलग नहीं कर सका है। फिर भी अपने चरित्र की विशेषता के कारण ही इरानी के आगे बढ़े हाथ को बिना पकड़े बोला, "जानता नहीं था कि तुम आ गई हो, और दर-वाजा खोलकर खड़ी हो, इसीलिए जरा ' "। वाक्य को अधूरा छोड़ एक बार इरानी की ओर आँखें दौड़ाते हुए बोला, "लेकिन इतना भय-भीत नहीं हुआ था कि तुम्हारा हाथ थाम घर के अन्दर आऊँ।"

महेन्द्र के भोले-भाले और शान्त आचरण के परिप्रेक्ष्य में इस क्षण विशेष में इस तरह की बातें थोड़ी-बहुत विस्मयजनक थीं। इसमें

अलग हटकर खड़ी हो गई, वह घर के भीतर आया। सुरबाला महेन्द्र से बोली, "तुम्हारे बाद मती और सतु घर से बाहर निकले हैं, उसके एकाध घण्टे बाद ही इरानी पहुँची है।"

"आज पहुँचने के बारे में मैंने एक पत्र भेजा था। पत्र तुम लोगों को मिला नहीं।" इरानी ने कहा, "हालाँकि मिलता भी तो लाभ ही क्या होता ? मुझे स्यालदह से लाने के लिए कोई नहीं जाता।"

महेन्द्र इरानी की ओर ताकता हुआ उसकी बातें सुन रहा था। सिर घुमाकर सुरबाला की ओर देखा और निश्छल हंसी हँसते हुए बोला, "पत्र मिलता तो हो सकता है मती या सतु कोई जाता। घर खोजने में परेशानी तो नहीं हुई ?" उसने फिर इरानी की ओर निहारा।

"परेशानी का मतलब ?" इरानी अपनी काली आँखों की पुतलियों को नचाते हुई बोली, "दार्जलिंग मेल से आने पर आपके घर पर पहुँचने के लिए सबसे अच्छा स्टेशन है दमदम। लेकिन मुझे स्यालदह से टैक्सी किराये पर लेकर पुनः दमदम आना पड़ा।"

महेन्द्र निश्छल हँसी हंसकर बोला, "टैक्सी क्यों, बस पर भी तो आ सकती थीं।"

"रात भर ट्रेन में जगकर माल-असबास के साथ ?" इरानी बड़ी-बड़ी आँखों से सुरबाला की ओर निहारती हुई अचकचाकर बोली, "महेनदा का कहना सुन रही हो न सुरोदी। तुम लोग होते तो वैसे ही आते ?"

सुरबाला मुसकाती हुई बोली, "खैर यह सब बातें बाद में होंगी। पहले उसे कपड़ा बदलकर हाथ-मुँह धो लेने दो। कितनी देर पहले निकला है और अब वापस आया है।" महेन्द्र की तरफ मुड़कर बोली, "जाओ, तुम तैयार हो लो। मैं तुम्हारा खाना परोसने जा रही हूँ।"

महेन्द्र ने कमरे की ओर कदम बढ़ाते हुए इरानी की ओर मुड़कर देखा और कहा, "हम लोग गरीब आदमी हैं....।"

"देखिए महेनदा, "वैष्णवी विनय का प्रदर्शन नहीं कीजिए। इरानी ने भौंह नचाते हुए प्रताड़ना भरे स्वर में कहा, "मुझे क्या मालूम नहीं कि आप एक धनकुबेर हैं ?"

महेन्द्र बगैर कुछ उत्तर दिए अपने कमरे की ओर चला गया। नीनू हँस दिया, "इरानी मौसी, बाबूजी तुमसे डरते हैं।"

महेन्द्र को इरानी का स्वर सुनाई पड़ा, "हाँ, तेरे बाबूजी तो मुझसे डरेंगे ही।"

- सुरबाला ने कहा, "इरानी, मैं चलती हूँ, उसके लिए खाना परोसना है।"

महेन्द्र ने कमरे में प्रवेश कर, कुहनी में लटके थैले से स्टील की आलमारी की चाबी निकाली और थैले को अन्दर रख दिया। और-और दिन वह इस वक्त दूसरी दिन की गृहस्थी के खर्च का पैसा सुरबाला को दे दिया करता था और अपने लिए थोड़ी-सी रकम रख लिया करता था। आज न केवल परिस्थिति दूसरी तरह की है, उसके साथ ही मन के अन्दर एक तरह की वैसी बेकली भी घुमड़ रही है, जिसकी वह व्याख्या करने में असमर्थ है। कपड़ा बदलने लगा तो उसे एकाएक याद आया, दरवाजा खुला है। नन्दिनी के विवाह के कुछ दिनों के अतिरिक्त उसे यह पहली बार खयाल आया, कमरे में कपड़ा बदलना होगा तो दरवाजे को यों खुला छोड़ा नहीं जा सकता। हालांकि वह यह काम पत्नी और बाल-बच्चों की उपस्थिति में अनायास करता आया है। करने में कोई परेशानी भी नहीं थी। बात तो मामूली ही है, क्योंकि नंगा तो होना नहीं पड़ता। गरीब मध्यवर्ग या उससे भी निचले दर्जे के आदमी इसी तरह किया करते हैं। लेकिन हमेशा का यह काम महेन्द्र को नागवार गुजरा। फिर भी सुरबाला को हैरत में डालना अच्छा नहीं लगा। वह लुंगी लिए गुसलखाने में चला गया और दरवाजा बन्द कर दिया। अंगोछा वहाँ रखा ही रहता है। उसने इत्मीनान के साथ कपड़े उतारे और लुंगी पहन ली। दीवार के रैक के

एक किनारे कपड़ों को रख, नल की टोंटी खोल, हाथ-पांव, मुँह, गला, गरदन अच्छी तरह धो लिया। अंगोछे से पोंछने के वक्त वैसा काम किया जैसा कि वह आमतौर पर नहीं किया करता है। खिड़की के सामने दीवार पर टंगे शीशे के सामने जाकर खड़ा हो गया। शीशा नीचे ही एक छोटे-से शेल्फ में रखा हुआ है। मति और सतु के लिए दाढ़ी बनाने का सामान अलग है। सब कुछ अलग है और महेन्द्र के सामानों से ज्यादा कीमती है। ब्रश, ब्लेड, रेजर, क्रीम, आफटर शेव लोशन। महेन्द्र पच्चीस साल पहले जैसा करता था, अब भी वैसा ही करता है। इसके पहले ब्लेड और सेफटीरेजर के बदले उस्तरा उपयोग में लाता था। बस, इतना ही बदलाव आया है।

महेन्द्र कभी सुबह या रात के वक्त इस शीशे के सामने खड़ा नहीं होता था। आज इस क्षण कोई अदृश्य चुंबक जैसे उसे शीशे के सामने खींचकर ले आया और उसने अपने चेहरे की ओर देखा। सिर पर पतले धूसर बाल, तेल से चिकने जिन्हें कहा जाए, वैसे हीं। उसका चेहरा या शरीर कभी मांसल नहीं था। उस दृष्टि से देखा जाए तो चेहरा दुबला-पतला ही कहा जाएगा। ललाट और आँखों के गिर्द थोड़ी सलवटें पड़ गई हैं। स्वयं से दृष्टि-विनिमय होते ही वह संकुचित और शर्मिन्दा होकर मुस्करा पड़ा और गरदन हिलाते हुए अलग हट गया। रैक से कपड़े लेकर गुसलखाने के दरवाजे को खोला और अपने कमरे के अन्दर चला आया। कपड़ों को अलगनी पर रख दिया। कल सवेरे वह कौन-सी धोती और कुरता पहन कर बाहर निकलेगा, सुरबाला ही इसका इन्तजाम करके रखेगी। उसने जैसे ही मेज के पास जाकर बालों पर कंघी करना शुरू किया, इरानी कमरे के अन्दर आई। स्विच दबाकर पंखा खोलकर बोली, "इस गरमी में पंखा भी चालू नहीं करते हैं ? जोरों से भूख लगी है ?"

"जोरों से क्या, और-और दिन जैसी महसूस होती है, वैसी ही।" महेन्द्र ने बालों पर कंघी करते हुए कहा।

इरानी निकट आ, अपने इर्द-गिर्द सिर घुमाकर जैसे किसी चीज की तलाश करने लगी। महेन्द्र ने जरा हटकर पूछा, "किसी चीज की तलाश कर रही हो क्या?"

"हां। पाउडर का डब्बा कहां है?" इरानी ने कहा, "सोचा था, आपके बदन में जरा पाउडर लगा दूं।"

महेन्द्र ने आश्चर्य चकित आंखों से इरानी की ओर ताकते हुए कहा, "मैं वह सब नहीं लगाता।"

"क्यों नहीं लगाते?" इरानी कमर पर हाथ रख, जरा तिरछी होकर खड़ी हो गई, "पूरा दिन गुजार कर घर लौटने पर देह-हाथ पानी से धोने से बाद, पाउडर लगाने से तो अच्छा ही लगता है।"

महेन्द्र की आंखें इरानी की काली आंखों से टकराने के बाद जैसे ही उसके जिस्म पर आकर टिकीं, उसने आंखें हटा लीं और सरल मुस्कराहट के साथ कहा, "नहीं; वह सब मैंने कभी इस्तेमाल नहीं किया है और अब तो ऐसा सोच भी नहीं सकता।" उसने कंघी को मेज पर रख दिया। "इस जन्म में नहीं किया, अगले जन्म में देखा जाएगा।"

"क्यों? इस जन्म में आपको क्या हुआ?" इरानी छोड़नेवाली पात्री नहीं है।

महेन्द्र को इरानी की देह से एक मीठी खुशबू आती हुई महसूस हो रही है। बाहर के कमरे में ही महसूस हुई थी। शायद बालों के तेल की खुशबू है या पाउडर की या किसी और ही चीज की। उसने इरानी की ओर ताकना चाहा मगर ताका नहीं। बोला, "अब क्या, अब तो बुढ़ापा आ गया।"

"आपको बूढ़ा किसने कहा?" इरानी ने विरोध के स्वर में कहा।

महेन्द्र ने पुनः इरानी की आंखों की ओर देखा। सोचा था, व्यंग्य की हंसी से उसकी आंखें तिरछी हो गई होंगी। लेकिन वह सहज स्वर में ही बोली, "आपको देखने से पता चल जाता है कि अब भी मजबूत हैं। अगर शरीर मांसल हो जाता तो देखने मे आप चाहे जैसे लगते मगर

बूढ़े हो जाते। आपके हमउम्र लोगों को तो देखती ही रहती हूँ। अपनी मर्जी से ही वे बूढ़े हो जाते हैं।"

महेन्द्र मुसकराया और इरानी की आँखों ने उसकी दृष्टि को जैसे चुम्बक की तरह अपने जिस्म की ओर आकर्षित कर लिया। जाहिर है, उसकी काली आँखों की स्वाभाविक चमक में एक प्रकार की मादकता है। लेकिन सचमुच ही क्या वह बूढ़ा नहीं हुआ है? इरानी जैसी एक लड़की के मुंह से यह सुनना व्यंग्य जैसा ही लगता है। लेकिन उसके चेहरे पर उस व्यंग्य की निशानी नहीं है। महेन्द्र ने अनजाने ही उसके सीने से अपनी आँखें हटाकर उसकी आँखों की ओर ताका।

इरानी मुसकरा दी, सीने के आँचल को उसने क्यों खींच लिया, समझ में नहीं आया। क्योंकि उघाड़ने-ढँकने में कोई अलगाव दिखाई नहीं पड़ा। हँसती हुई बोली, "आपको मेरी बातों पर यकीन नहीं हो रहा?"

"कौन-सी बात पर?" सुरबाला ने दरवाजे के निकट से पूछा।

महेन्द्र क्या चिहुँक उठा? लेकिन उसके पहले ही उसने सरल शब्दों में उत्तर दिया, "इरानी कह रही है, मैं बूढ़ा नहीं हुआ हूँ। इतना जरूर है कि वह इस तरह का मजाक कर सकती है। चलो, चलकर खाना दो।" उसने दरवाजे की तरफ कदम बढ़ाया।

सुरबाला ने हँसकर कहा, "इरानी की निगाह ही असली निगाह है, वह जब कि कह रही है तो फिर बूढ़े नहीं हुए हो।"

"मजाक नहीं, सुरोदी", इरानी बोली, "मैं सोरिअसली कह रही हूँ। मेरी राय में उम्र कोई अहमियत नहीं रखती। असली चीज है मन। इसके अलावा महेनदा के शरीर में मुटापा नहीं आया है, एक भी दाँत नहीं टूटा है। तुमसे ही पता चला था, महेनदा को ब्लड प्रेशर की बीमारी नहीं है, ब्लड शूगर भी नहीं है। अभी भी दिन में बारह घण्टे परिश्रम करते हैं। इससे अच्छा क्या कहा जा सकता है?" यह कहते हुए उसने सुरबाला और महेन्द्र के पीछे-पीछे रसोईघर में प्रवेश किया।

महेन्द्र ने पीढा बिछाने के पहले एक बार सुरबाला की ओर देखा और उसके बाद कहा, "स्वास्थ्य ठीक रहना और बुढ़ापा आ जाना अलग-अलग बातें हैं।"

"सेहत ठीक रहे तो फिर बुढ़ापा क्या ?" इरानी ने कहा, "आपसे कम उम्र के बहुत से लोगों को मैंने बूढ़ा होते देखा है। उनकी तुलना में आप कही ज्यादा जवान हैं।"

महेन्द्र ने अचकचा कर एक बार इरानी की ओर नजर दौड़ाई और फिर सुरबाला की ओर। सुरबाला भी ताक रही थी। दोनों हँस पड़े। सुरबाला ने इरानी से कहा, "अच्छी बात है, तुम्हारे बहनोई तुम्हारे लिए अभी भी जवान है, हुआ न ?"

"महेनदा कितने बूढ़े हैं, यह बात बेशक तुम्हीं अच्छी तरह जानती होंगी।" इरानी ने सुरबाला की ओर आँख नचाते हुए हँसकर कहा, "यह बात तुमसे अधिक कोई नही जानता।"

महेन्द्र ने एक बार सुरबाला की ओर देखा। वह मन ही मन सोच रहा था, पति-पत्नी के जीवन के इस प्रकार के अनुभव का इरानी को कैसे पता चला ? उसकी तो अभी शादी भी नहीं हुई है। इसके अलावा कम उम्र में बहुतेरे लोगों को उसने बूढ़ा होते कैसे देखा ? यह सब देखने से क्या समझ में आता है ? इरानी के वास्तविक अहसास का स्वरूप क्या है ?

सुरबाला बोली, "अब मेरे जानने का समय नही रहा। वह भले ही बूढ़ा न हुआ हो, परन्तु मैं तो बेशक बूढी हो गई हूँ। अब तुम जानना चाहो तो कोशिश कर सकती हो।"

महेन्द्र के मेरुदण्ड में सिहरन दौड़ गई, उसने आँख उठाकर इरानी की ओर देखना चाहा लेकिन देख नहीं सका। निश्छल हँसी हँसते हुए कहा, "क्या कह रही हो यह सब !"

"कोशिश कर सकती हूँ, कहिए, ठीक कहा न महेनदा ?" इरानी पलकों को नचाते बोली, "आखिर में तुम्हीं मुरादी लाठी लिए मुझे

बूढ़े हो जाते। आपके हमउम्र लोगों को तो देखती ही रहती हूँ। अपनी मर्जी से ही वे बूढ़े हो जाते हैं।"

महेन्द्र मुसकराया और इरानी की आँखों ने उसकी दृष्टि को जैसे चुम्बक की तरह अपने जिस्म की ओर आकर्षित कर लिया। जाहिर है, उसकी काली आँखों की स्वाभाविक चमक में एक प्रकार की मादकता है। लेकिन सचमुच ही क्या वह बूढ़ा नहीं हुआ है? इरानी जैसी एक लड़की के मुंह से यह सुनना व्यंग्य जैसा ही लगता है। लेकिन उसके चेहरे पर उस व्यंग्य की निशानी नहीं है। महेन्द्र ने अनजाने ही उसके सीने से अपनी आँखें हटाकर उसकी आँखों की ओर ताका।

इरानी मुसकरा दी, सीने के आँचल को उसने क्यों खींच लिया, समझ में नहीं आया। क्योंकि उघाड़ने-ढँकने में कोई अलगाव दिखाई नहीं पड़ा। हँसती हुई बोली, "आपको मेरी बातों पर यकीन नहीं हो रहा?"

"कौन-सी बात पर?" सुरबाला ने दरवाजे के निकट से पूछा।

महेन्द्र क्या चिहुँक उठा? लेकिन उसके पहले ही उसने सरल शब्दों में उत्तर दिया, "इरानी कह रही है, मैं बूढ़ा नहीं हुआ हूँ। इतना जरूर है कि वह इस तरह का मजाक कर सकती है। चलो, चलकर खाना दो।" उसने दरवाजे की तरफ कदम बढ़ाया।

सुरबाला ने हँसकर कहा, "इरानी की निगाह ही असली निगाह है, वह जब कि कह रही है तो फिर बूढ़े नहीं हुए हो।"

"मजाक नहीं, सुरोदी", इरानी बोली, "मैं सीरिअसली कह रही हूँ। मेरी राय में उम्र कोई अहमियत नहीं रखती। असली चीज है मन। इसके अलावा महेनदा के शरीर में मुटापा नहीं आया है, एक भी दाँत नहीं टूटा है। तुमसे ही पता चला था, महेनदा को ब्लड प्रेशर की बीमारी नहीं है, ब्लड शूगर भी नहीं है। अभी भी दिन में बारह घण्टे परिश्रम करते हैं। इससे अच्छा क्या कहा जा सकता है?" यह कहते हुए उसने सुरबाला और महेन्द्र के पीछे-पीछे रसोईघर में प्रवेश किया।

महेन्द्र ने पीढ़ा बिछाने के पहले एक बार सुरबाला की ओर देखा और उसके बाद कहा, "स्वास्थ्य ठीक रहना और बुढ़ापा का आना अलग-अलग बातें हैं।"

"सेहत ठीक रहे तो फिर बुढ़ापा क्या?" इरानी ने कहा, "आपसे कम उम्र के बहुत से लोगों को मैंने बूढ़ा होते देखा है। उनकी तुलना में आप कहीं ज्यादा जवान हैं।"

महेन्द्र ने अचकचा कर एक बार इरानी की ओर नजर दौड़ाई और फिर सुरबाला की ओर। सुरबाला भी ताक रही थी। दोनों हँस पड़े। सुरबाला ने इरानी से कहा, "अच्छी बात है, तुम्हारे महेनदाई तुम्हारे लिए अभी भी जवान है, हुआ न?"

"महेनदा कितने बूढ़े हैं, यह बात बेशक तुम्हीं अच्छी तरह जानती होंगी।" इरानी ने सुरबाला की ओर आँख नचाते हुए हँसकर कहा, "यह बात तुमसे अधिक कोई नहीं जानता।"

महेन्द्र ने एक बार सुरबाला की ओर देखा। वह मन ही मन सोच रहा था, पति-पत्नी के जीवन के इस प्रकार के अनुभव का इरानी को कैसे पता चला? उसकी तो अभी शादी भी नहीं हुई है। उससे ज्यादा कम उम्र में बहुतेरे लोगों को उसने बूढ़ा होते कैसे देखा? यह सब देखने से क्या समझ में आता है? इरानी के वास्तविक अनुभव का स्वरूप क्या है?

सुरबाला बोली, "अब मेरे जानने का मतलब नहीं रहा। वह भले ही बूढ़ा न हुआ हो, उन्हें मैं तो बेशक बूढ़ी हो गई हूँ। अब तुम जानना चाहो तो कोशिश कर सकती हो।"

महेन्द्र के कलेजे में बिजली दौड़ गई, उसने आँख उठाकर इरानी की ओर देखना चाहा लेकिन देख नहीं सका। [illegible] हँसी हँसते हुए कहा, "क्या कह रही हो यह सब!"

"कोशिश कर सकती हूँ, लेकिन ठीक [illegible]?" इरानी पलकों को नचाते बोली, "आखिर मैं [illegible] पर हूँ।"

सुरबाला ने कहा, "बच्चे मेज पर खाते हैं। मैं भी उसी तरह खाती हूँ। वह अपनी पुरानी आदत को बरकरार रखे हुए हैं।"

इरानी ने महेन्द्र के चेहरे की ओर देखा। महेन्द्र ने भी अपनी आँखें उसकी तरफ की और फिर पलकें झुका लीं। इरानी बोली, "महेनदा का हर काम निराला है।"

महेन्द्र बगैर आँख उठाये बोला, "निराला क्यों ? जिसे जिस तरह अच्छा लगेगा, उसी तरह खाना खायेगा न। मेज पर बैठकर खाने से मुझे जड़ता घेर लेती है। मानो, इत्मीनान से खाना ही नहीं खा रहा होऊँ।"

"यह सब आपके मन का भ्रम है।"

महेन्द्र ने मुसकराकर सिर हिलाते हुए कहा, "मेज-कुरसी पर बैठ सिर्फ काम किया जा सकता है, भात नहीं खाया जा सकता।"

इरानी खिलखिलाकर हँसती हुई बोली, "आपने अजीब बात कही महेनदा। जिस तरह कि मेरी माँ कहती हैं, रोटी खाने से ऐसा लगता है जैसे बुखार आ गया हो। बगैर बुखार के कोई रोटी नहीं खाता।"

महेन्द्र ने कहा, "किसी जमाने में मुझे भी ऐसा ही महसूस होता था। बुखार आये तो रोटी, नहीं तो भात। इतना जरूर है कि अब वैसा महसूस नहीं होता। रात में रोटी नहीं मिलती है तो लगता है, खाना ही नहीं खाया है।"

"सब कुछ मन की बात है।" इरानी ने कहा, "और आदत की बात। आपका मेज पर खाना न खाना वैसी ही बात है। आप जब होटल-रेस्तराँ में खाते हैं तो क्या करते हैं ?"

महेन्द्र की आँखों में विस्मय खेल गया; बोला, "होटल-रेस्तराँ में ? मैं कभी नहीं खाता।"

इरानी पुनः खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह हँसी महेन्द्र के कलेजे में झनाक् से बज उठी और शीशे के बर्तन की तरह सब कुछ जैसे चूर-चूर हो गया। इरानी बोली, "सचमुच महेनदा, आप एक निराले

व्यक्ति हैं। किसी दिन होटल-रेस्तराँ में आपने खाना नहीं खाया है ?"

महेन्द्र बोला, "बहुत दिन पहले मेस में खाना खाता था, होटल में भी खाना खाया है मगर पत्तल बिछाकर ही। मेज-कुरसी पर बैठकर खाना नहीं खाया है।" उसने दूध में रोटी और बताशा मिलाना शुरू किया। फिर बोला, मैं जैसा था, वैसा ही हूँ।"

"बिलकुल नहीं।" इरानी ने गरदन झटकते हुए कहा, "यह सब आपकी निराली बातें हैं। आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप जैसे थे, वैसे नहीं हैं। बदन पर धोती और कुरता चढ़ाये केवल पुराने जमाने के किरानी बने हुए हैं।"

इस तरह की ठोस सच्चाई के जवाब में महेन्द्र कुछ उत्तर नहीं दे सका। खाना खाते-खाते सोचा, उसके व्यवसाय और कारोबार के संबंध में इरानी को कितनी बातें मालूम हैं ? इन सब बातों के संबंध में वह खोद-खोदकर कुछ जानना नहीं चाहती है। इतना जरूर है कि वह लुक-छिपकर व्यवसाय नहीं करता मगर ढिंढोरा भी नहीं पीटता है। फिर भी तरह-तरह के लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं। वह निस्पृह और निर्विकार रहता है। लेकिन सुरबाला से इरानी ने क्यों कहा, स्वयं को वह बूढ़ी कहती है, इसकी उसे जानकारी है और यह गलत बात है। इस बात का तात्पर्य क्या है ?

महेन्द्र ने दूध से भरे कटोरे को एक हाथ से उठाकर होंठों से लगाया। सुरबाला ने घबराकर कहा, "कटोरे को दोनों हाथ से पकड़ो वरना गिर जायेगा।"

महेन्द्र स्वयं भी यह बात जानता है। लेकिन इरानी के सामने दोनों हाथों से कटोरे को थाम होंठों से लगाने में उसे झिझक महसूस हुई। बिना कुछ उत्तर दिये एक ही हाथ से दूध भरे वजनदार कटोरे को थाम उसने दूध पी लिया और कटोरे को नीचे रख दिया। एक हलकी-सी डकार लेकर कहा, "मुझे इस बात का खयाल है।"

"सुरबाला बोली, "किसी दिन इस तरह नहीं पिया था। कटोरे

का वजन भी कोई कम नहीं है।"

महेन्द्र ने पानी का गिलास उठाकर होंठों से लगाया। इरानी बोली, "इसका मतलब समझीं सुरादी ? महेनदा सब कुछ कर सकते हैं। जान-सुनकर ही शिथिल बने रहते हैं।"

महेन्द्र ने मुसकराकर इरानी की ओर ताका। उसकी काली आँखों से आँख मिलते ही उसके कलेजे में एक लहर-सी जगी। वह आँख झुकाकर जल्दी-जल्दी उठकर खड़ा हो गया। इरानी के अधरों के कोने में क्या मुसकराहट खेल गई ? वह क्या महसूस कर रही है कि उसकी ओर देखते ही महेन्द्र के कलेजे में आँधी चलने लगती है ? ऐसा क्यों हो रहा है ? किसी भी पुरुष के लिए यह क्या अनिवार्य क्रिया है ?

सुरबाला बोली, "इरानी, तुम नीतू को खाना खाने बुला लो। तुम भी खाना खा लो। तीसरे पहर तुमने कुछ नहीं खाया है।"

"मैं अभी खाना नहीं खाऊँगी।" इरानी ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ खाना खाने बैठूँगी। नीतू को बुला देती हूँ।"

सुरबाला ने कहा, "फिर तुम एक काम करो। वह लेट गया है, तुम उसकी मच्छरदानी लगाकर खोंस दो।"

महेन्द्र के कानों में गुसलखाने में ही यह सब बात पहुँच रही थी। इरानी ने पूछा, "महेनदा, आपको अभी सोना है ?"

"दो-चार मिनट शायद बैठेगा, उसके बाद ही सो जायेगा।" सुरबाला ने कहा, "फिर सुबह होते न होते उठ जाना है।"

महेन्द्र ने गुसलखाने से कमरे के अन्दर जाते-जाते देखा, इरानी दोनों छोर की कोठरियों के बीच के रास्ते से बाहर के कमरे की ओर जा रही है। उसकी पतली कमर, पीठ और चौड़े नितंब में जैसे एक लय है। साड़ी के बन्धन और ब्लाउज के बीच का थोड़ा-सा हिस्सा खुला हुआ है। गजगामिनी जिसे कहा जाता है, वह क्या वैसी ही है ? उसके चलने के तौर-तरीके में भी एक प्रकार की अल्हड़ता है। वह अल्हड़ता मन को व्यथित नहीं करती बल्कि एक प्रकार का आवेग जरूर

जाती है। इरानी ने बाहर के दरवाजे के पास खड़ी होकर पुकारा, "नीतू, खाना खाने आ जा, सुरादी बुला रही हैं।"

महेन्द्र जल्दी-जल्दी कमरे के अन्दर चला गया। वह आज भी और-और दिनों की तरह ही थका-मांदा है। फिर भी थकावट के बीच उसे कहीं कुछ असहज जैसा लग रहा है। उसका कारण अवश्य ही इरानी की उपस्थिति है। हर पग पर उसकी उपस्थिति का इस तरह अहसास हो रहा है जैसे उसकी दैनन्दिन स्वाभाविकता में एक ठहराव आ गया हो। या फिर यह महेन्द्र के मन का विकार है? नन्दिनी की शादी के समय भी, बहुतों के बीच इरानी की उपस्थिति ने मन के अज्ञात में बार-बार उसे चौंका दिया था। लेकिन उस समय पूरा घर लोगों से भरा था। इस तरह के लगभग खाली मकान में इरानी की उपस्थिति ने जैसे एक बहुत विराट् रूप धारण कर लिया है। आश्चर्य है! महेन्द्र को वह जवान कहती है!

"क्या बात है, खड़े-खड़े क्या सोच रहे हैं?" इरानी ने कमरे के ्दर प्रवेश किया।

महेन्द्र चिहुँक उठा, "एँ?" उसके बाद हँसकर बोला, "तरह-तरह की बातें। सोच का कोई अन्त है?"

"ज्यादा सोचने से फायदा ही क्या है? एक ही तो जिन्दगी मिली है।" इरानी महेन्द्र के सामने आकर खड़ी हो गई। उसकी काली आँखों की पुतलियों और होंठों पर कौतुक की छाप है।

महेन्द्र ने देखा, इरानी के जिस्म का तीव्र अल्हड़पन जैसे उसकी छाती पर बैठने के लिए आगे बढ़ रहा है। जल्दी से आँख हटाकर बोला, "इसका मतलब? जिन्दगी कितनी होगी?" "इसका मतलब यह कि मैं कहना चाहती हूँ, जिन्दगी जब कि एक ही है तो फिर इतना सोचने से लाभ ही क्या है? इरानी ने अपने दाहिनी ओर के आँचल को ढँकने के प्रयास में उघाड़ दिया और फिर एक बार ढँकने की कोशिश की, "जो कुछ करना है, बस इसी एक जिन्दगी में कर लेना

है। अगले जन्म के लिए पोटली बांध कुछ नहीं ले जा सकिएगा। इसीलिए कहती हूँ, ज्यादा सोचिए नहीं।"

महेन्द्र यद्यपि इस तरह की कोई बात नहीं सोच रहा था, फिर भी यह बात उसके कानों में खटकी। अगले जन्म की बात उसने कभी सोची नहीं है। जिन्दगी के बारे में ही सोचा है। इस जिन्दगी का मतलब है, उसका काम-धंधा, कारोबार, रुपया-पैसा, जिन्दगी जीने का तौर-तरीका और मोटे तौर पर इस गृहस्थी की बात। इसके अलावा उसके सामने और किसी वस्तु का अस्तित्व ही नहीं है। खासकर एक ही जिन्दगी में और कुछ करने की बात उसके मन में पैदा ही नहीं हुई है, क्योंकि और कुछ के बारे में उसे कोई जानकारी नहीं है। इरानी की बात से उसके मन में संशय जगा, जिन्दगी में और कुछ करने की उसने क्या इच्छा की है? इरानी की बातों में क्या कोई गूढ़ संकेत है? महेन्द्र निरीह हँसी हँसते हुए हट गया और पंखे के स्विच को दबाते हुए बोला, "पोटली बांध ले जाने की बात मैंने नहीं सोची है। लेकिन फिर भी आदमी सोचता ही है।"

"कोई लाभ नहीं," इरानी बोली, "इससे तो अच्छा यही है कि मन जो चाहे वही करते रहना चाहिए। दिन-भर तो बहुत कुछ सोचते रहे हैं और काम करते रहे हैं, फिर अभी इतना सोचने-विचारने की कौन-सी बात है? आइये, सो रहिये, मैं आपको मच्छरदानी लगाकर खोंस देती हूँ।"

महेन्द्र ने निरीह मुसकराहट के साथ कहा, "तुमने कहा, एक ही जिन्दगी है और जो कुछ करना है, इसी जिन्दगी में कर लेना होगा। लेकिन ऐसा कहीं होता है? आदमी चाहे तो भी एक ही जिन्दगी में सब कुछ करके नहीं जा सकता है।"

"जितना कुछ कर सके, उतना कर ले।" इरानी ने दोनों हाथों को उठाकर जिस्म में लोच पैदा करते हुए कहा, "मेरा तो यही विश्वास है। जो भी इच्छाएँ हैं, पूरी कर लूंगी। तब हाँ, जितना करना

हो सकता है। अफसोस करते हुए दुनिया से विदा होने में लाभ ही क्या है ?"

महेन्द्र पलंग पर बैठकर बोला, "सभी अपने बारे में ऐसा ही सोचते हैं। अरे हाँ, तुम उस वक्त सुरो से क्या कह रही थीं ? बात ठीक से समझ में नहीं आई ?"

"कौन-सी बात ?" इरानी ने अपने हाथ पलंग के पाये पर रख दिये। महेन्द्र ने जैसे ही उसकी ओर देखा, पहली बार उसके ध्यान में आया कि इरानी के शरीर का ब्लाउज स्लीवलेस है। बगल में ढेर सारे काले रोओं का गुच्छा है और हाथ ऊपर की ओर उठाते ही उसका वक्षस्थल ज्वार की तरह ऊर्ध्वमुखी हो जाता है। महेन्द्र के कलेजे की धड़कन अकस्मात् तीव्र हो गई। जल्दी से आँख हटाते हुए वह बोला, "वही जो तुम कह रही थी कि अभी वह बूढ़ी नहीं हुई है और जो सोच रही है, वह गलत है।"

इरानी पलंग का पाया थामे हँस पड़ी और पाये की लकड़ी चर-र। उठी। बोली, "देख रही हूँ, वह बात आपको याद है, हालाँकि ...रादी ने जानना भी नहीं चाहा कि मैंने वैसा क्यों कहा था।"

"इसीलिए तो मैं जानना चाहता हूँ।" महेन्द्र की निगाह एक बार ऊपर उठी और फिर नीचे गिर गई।

इरानी अबकी जरा संकुचित सी हो गई। बोली, "यह बिलकुल औरतों की बात है, सुनकर आपको कोई लाभ नहीं होगा।"

इरानी की बातों से महेन्द्र की उत्सुकता हालाँकि बढ़ गई लेकिन उसके द्वारा न कहने की इच्छा जाहिर करने पर उसे दुख हुआ। फिर भी निरीह मुसकान मुसकराते हुए अपने पैर पलंग पर रखकर बोला, "लाभ-हानि की बात नहीं है, न कहने की बात है तो मत कहो।"

"न कहने लायक कोई बात नहीं है।" इरानी ने पलंग के पाये पर रखी मच्छरदानी को खींचा। लेकिन मच्छरदानी लगाने के बजाय आँखों में शरारत का भाव लाकर कहा, "सुरोदी की संभवतः यही

धारणा है कि बाल-बच्चे की पैदाइश बन्द होते ही औरतों के लिए सब कुछ पर बन्दिश लग जाती है। लेकिन विज्ञान आजकल बताता है कि ऐसी कोई बात नहीं, समझ रहे हैं न ? इसीलिए मैंने सुरादी से कहा था कि उसकी धारणा गलत है।"

महेन्द्र ने अचकचाई निगाहों से ताकते हुए पूछा, "इसका मतलब क्या है ? उसके बाद भी बाल-बच्चे होते हैं ?"

इरानी खिलखिलाकर हँस पड़ी और उसका सारा शरीर ही जैसे हँसी से काँप उठा। बोली, "आपको और सुरादी को अभी यह सब समझाना होगा ? खास तौर से आप जैसे आदमी को ? बाल-बच्चों की पैदाइश की बात मैंने नहीं कही है, जनाब। उसके अतिरिक्त भी सब कुछ बरकरार रहता है। बाल-बच्चे की पैदाइश बन्द हो जाने से कोई बूढ़ी नहीं हो जाती।"

महेन्द्र को मन ही मन आश्चर्य लगा। उसके और सुरबाला के दांपत्य जीवन में दैहिक मिलन अब कभी-कदा भी क्रियान्वित नहीं होता। खुद उसमें ही कोई खास इच्छा नहीं जगती। सुरबाला भी कभी इस तरह की माँग या इच्छा जाहिर नहीं करती। महेन्द्र की धारणा है, उन दोनों के जीवन का वह अध्याय समाप्त हो चुका है। लेकिन इरानी के सामने अपने आश्चर्य होने के भाव को प्रकट न कर वह धीरे-धीरे लेट गया और बोला, "यह सब बात तुम्हें मालूम कैसे हुई ?"

"कैसे मालूम हुई ?" इरानी ने मच्छरदानी को खोलकर झाड़ा और पलंग के चारों तरफ उसे फैलाते हुए कहा, "जानते हो हैं कि सुरादी जितनी मेरी उम्र नहीं है। जानकारी किताब पढ़ने से हुई है। आप क्या नहीं जानते ?"

महेन्द्र बोला, "सारी खबरों का पता हरेक व्यक्ति को नहीं रहता है। मैं किताब छापता हूँ, पढ़ता नहीं हूँ।"

इरानी ने हँसते हुए, मच्छरदानी के अन्दर अपना आधा शरीर घुसेड़ दिया और महेन्द्र के शरीर के ऊपर से अपना

मच्छरदानी खोंसने लगी। महेन्द्र को इरानी के जिस्म की एक खास किस्म की गन्ध मिली, किसी सुगन्ध से मिली-जुली पसीने की गन्ध। और वह गन्ध उसके कलेजे में धँसती गई। अब पहली बार इस बात की ओर उसका ध्यान गया कि ईरानी के जिस्म पर लाल ब्लाउज के अतिरिक्त और कोई अन्तर्वास नहीं है। इरानी के द्वारा अधोमुखी होने के कारण उसके बेल जैसे पुष्ट उरोजों का अधिकांश हिस्सा साफ-साफ दिखाई पड़ा और उसकी साँस जैसे रुद्ध हो गई—यह सोचकर कि अभी इस क्षण, हो सकता है कि उरोज द्वय उसके शरीर का स्पर्श कर लें। साँस रुद्ध होने के बावजूद उसकी छाती में रक्त की धारा तीव्रता से प्रवाहित होने लगी। उसे इरानी की साड़ी के बन्धन के ऊपर लाल ब्लाउज तक फैला उसकी देह का हिस्सा दीख पड़ा। सिर पर जोरों से पंखा चलने के बावजूद महेन्द्र पसीना-पसीना हो गया।

इरानी ने सरककर मच्छरदानी से अपना शरीर बाहर निकाल लिया और मच्छरदानी खोंसकर बोली, "हो गया न महेनदा? सुरादी की तरह मैं मच्छरदानी लगा पाती हूँ न?"

महेन्द्र ने मच्छरदानी के बाहर इरानी की ओर ताकते हुए कहा, "लगा क्यों नहीं सकोगी?"

"कह नहीं सकती।" इरानी ने हँसकर कहा, "शायद आपको पसंद नहीं आया। सुरादी की तरह सब कुछ तो मैं नहीं कर पाऊँगी।"

महेन्द्र का सम्पूर्ण शरीर और मन बिजली के आपस में जुड़े नेगेटिव और पोजेटिव तारों के मानिन्द भभक उठा। और उसके तमाम अहसासों को चकाचौंध से भर दिया। मन ही मन सोचा, इरानी का सुरादी की तरह सब कुछ न कर पाने की उक्ति का तात्पर्य क्या है? सीधे न पूछकर उसने अत्यन्त निरीह भाव से पूछा, "यह कौन-सी चीज है?"

"यह बात आप मन ही मन समझ लें।" इरानी फिक् से हँस दी और मच्छरदानी के बाहर से महेन्द्र की ओर ताकती हुई अपनी काली

आँखों से बाण चलाया, "सुरादी और मैं आपके लिए एक जैसी नहीं हैं।" यह कहकर वह दरवाजे की ओर चली गई और पूछा, "रोशनी क्या जली रहेगी, महेनदा?"

महेन्द्र की धड़कन इतनी तीव्र हो गई है कि उसे कुछ कहने में तकलीफ हो रही है। एक तरह से रुद्ध जैसे स्वर में ही कहा, "नहीं, बुझा दो।"

स्विच की एक हलकी-सी आवाज के साथ ही क्षण-भर में अँधेरा उतर आया। महेन्द्र को लगा, इरानी ने दरवाजे के पल्लों को खींचकर बन्द कर दिया। बाहर से दरवाजों को खींचा? या फिर इरानी अभी भी कमरे के अन्दर है? उसे अपनी छाती की धड़कन के अलावा और कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा है। कुछेक मिनट बीत जाने के बाद उसने इत्मीनान की साँस ली—इरानी कमरे से बाहर चली गई है।

महेन्द्र की साँसें आहिस्ता-आहिस्ता स्वाभाविक हो गईं। मगर उसके सामने इरानी के द्वारा मच्छरदानी खोंसने की तसवीर तैरने लगी। साँस हालाँकि सहज-स्वाभाविक स्थिति में आ गई परन्तु रक्त की तीव्रता में सहजता नहीं आई। अपनी इस बेकली और विकार के संबंध में मन में कोई सवाल पैदा न होने के बावजूद, एक प्रकार का विस्मय और छटपटाहट एक ही साथ उसके मन को कुरेदने लगी। रुपया-पैसा और जायदाद के अलावा और किसी वस्तु के प्रति उसमें आसक्ति हो सकती है, यह बात उसे मालूम नहीं थी। नन्दिनी के शादी के वक्त काफी भीड़-भाड़ रहने के बावजूद इरानी ने अपनी हँसी और बातों से उसके मन में एक प्रकार की चंचलता जगा दी थी। महेन्द्र ने तब देखा था, रिश्ते के तमाम पुरुष इरानी के इर्द-गिर्द मंडराने को बेचैन हैं। उसने किसी तरह की बेचैनी जाहिर नहीं की थी। उसी समय उसे महसूस हुआ था, इरानी अपने यौवन के आवेग, हास-परिहास और वाक् पटुता के कारण विश्व के तमाम पुरुषों की चिरकालीन अभिलषित रमणी है। संसार में कोई-कोई नारी यौवन और सौंदर्य के

अतिरिक्त कुछ और लेकर पैदा होती है। शायद स्वर्ग में इसी प्रकार की रमणी को उर्वशी का नाम दिया गया था।

महेन्द्र ने आँखें वन्द कर लीं और इरानी के प्रबल आकर्षण से छुटकारा पाने के लिए स्वयं को बीते दिनों में वापस ले जाना चाहा—जिन दिनों वह सेक्रेटियेट के एक साधारण किरानी से मौजूदा स्थिति में आया था। उसने कभी किसी स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखा था। वह अपनी दुनिया और अपने प्रलोभनों के बीच रहना चाहता है। नहीं चाहता कि इस उम्र में एक नई आसक्ति का लोभ उसे जकड़ ले।

सवेरे पाँच वजे से थोड़ी देर पहले ही महेन्द्र की नींद टूटी। नींद तोड़ने के लिए उसे घड़ी में अलार्म नहीं देना पड़ता है या कोई जगाए, इसकी भी नौवत नहीं आती है। सवेरे पाँच वजे के पहले उठना काफी दिनों का अभ्यास रहा है। अपने आप नींद टूट जाती है। चाय पीने की उसे आदत नहीं है। कमरे के अन्दर ही सुराही और पानी का गिलास रखा रहता है। उसने मच्छरदानी के अन्दर से देखा, बड़ी खाट पर सुरवाला नहीं है। नीतू अकेले ही सोया हुआ है। इसका अर्थ है सुरवाला गाय दुहने चली गई है।

महेन्द्र उठकर वैठ गया। शरीर में जैसे एक प्रकार का अवसाद छाया है—वैसा अवसाद जिसका अहसास उसे कभी नींद से जगने के वाद नहीं हुआ था। उसे इरानी की याद आई और अन्दाज लगाया कि वह अब भी सोई हुई ही होगी। महेन्द्र मच्छरदानी के बाहर आया और सुराही के पास जाकर गिलास में पानी ढाला और लगातार दो गिलास पानी पी गया। कमरे के अन्दर दो-चार बार इधर-उधर चहल-क़दमी करने के वाद शौचकर्म से निवृत्त होने के लिए गुसलखाने के अन्दर चला गया। वहाँ से निकलने के वाद मिट्टी के एक वर्त्तन में

पानी से भीगने के लिए रखी नीम की एक दातून को चबाते-चबाते पिछले दरवाजे से बगीचे की ओर चला गया। देखा, सुरबाला उस गैर बंगाली के बहुत बड़े टीन के पात्र में मापकर दूध ढाल रही है। इसका अर्थ है दूध दुहाने का काम खत्म हो चुका है।

इरानी को वहाँ पाकर महेन्द्र को आश्चर्य हुआ। उसने सोचा नहीं था कि इरानी इतनी जल्दी सोकर उठ जाएगी। पिछली रात के साड़ी-ब्लाउज उसके शरीर पर अब मुड़े हुए हालत में हैं, थोड़े-बहुत अस्त-व्यस्त भी। साड़ी के नीचे, पैर के पास लहंगे का कुछ हिस्सा बाहर निकला है। माथे का जूड़ा ढीला है और पेशानी के पास कुछ बाल बिखरे हैं। फिर भी वह पिछली रात के बनिस्वत ताजा दीख रही है। और उसे देखते ही महेन्द्र के सीने का नगाड़ा बज उठा। इरानी ध्यान से सुरबाला का दूध मापना देख रही है। महेन्द्र पर उसकी दृष्टि नहीं गई है। जाती भी नहीं अगर वह गैर बंगाली ग्वाला की निगाह उस पर नहीं गई होती और उसने माथे पर हाथ रख सलाम नहीं किया होता।

ग्वाले की दृष्टि का अनुसरण करते हुए इरानी ने पीछे मुड़कर देखा और महेन्द्र पर आँख जाते ही मुसकराकर कहा, "सु प्रभात, महेनदा।"

मुसकराते हुए महेन्द्र ने अपनी गरदन को झटका दिया और धीरे-धीरे आगे बढ़ आया। बोला, "इतने तड़के जग गई हो?"

"मैं सवेरे ही सोकर उठती हूँ", इरानी ने कहा, "काफी दिन चढ़े तक बिस्तर पर पड़े रहना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। इसके अलावा सुरादी का दूध दुहना देखने की तीव्र इच्छा थी। सचमुच, सुरादी इतनी एक्सपर्ट है कि लगा, निखालिस ग्वाले की बीबी है।" हँसकर बोली, "देखिये, यह मत सोचियेगा कि आपको ग्वाला क[illegible] है।"

महेन्द्र बोला, "कहोगी तो इसमें दोष ही क्या है? [illegible]

हमें ग्वाला ही कहा जा सकता है। दूध तो ग्वाले ही बेचते
महेन्द्र ने देखा, इरानी की पीठ की तरफ के ब्लाउज क
खुला है। इरानी ने महेन्द्र की दृष्टि का अनुभव करते हुए
किया। निर्विकार भाव लाकर बोली, "मैं तो यही देख रह
तरह की तीन गायें रहें तो नौकरी या कारोबार करने की
रत नहीं। सुरादी से पता चला, घर के लिए रखने पर भी
वक्त अठारह से लेकर बीस किलो दूध बेच दिया जाता है।
महेन्द्र बोला, "हाँ, यह सही बात है। तब हाँ, इस तर
पालने में भी कम खर्च नहीं है।"
"दूध से भी कम आमदनी नहीं है।" इरानी ने गरद
ताका, "खर्चे से आमदनी जरूर ही अधिक होती होगी।"
महेन्द्र ने मुसकराकर कहा, "ऐसा न हो तो इन गायों
से लाभ ही क्या ? पालना हो तो ऐसी ही गायें पालनी चाहि
खाती हैं और ज्यादा देती भी हैं।"
इरानी ने उसकी बात को किस रूप में लिया, पता नह
की पुतलियों को नचाती हुई बोली, "ऐसी बात है ! यह स
ठीक से समझते होंगे। एक बार गायों की ओर नजर
बोली, "तब हाँ, आपकी विलायती गायें देखने में सचमुच
हैं। मगर उनका विशाल चेहरा देखकर मुझे उनके ने
लगता है।"
महेन्द्र ने कहा, "देखने में हालाँकि बड़ी-बड़ी
सीधी-सादी। सींग नहीं मारती हैं।"

देखी हैं ?

देखी हैं। लेकिन महेन्द्र के जीवन से उनका कोई सरोकार नहीं है, जान-पहचान नहीं है, इसलिए उनकी ओर ध्यान देने की बात सोची ही नहीं थी। स्वयं आगे बढ़कर, जान-पहचान कर, किसी लड़की से हेल-मेल बढ़ाये, उसका चरित्र इस तरह का नहीं है। यों भी वह सावधान रहता है। अपरिचितों के बारे में उसके मन में हमेशा संदेह और दुविधा रहती है। लेकिन उस रात, उसकी रिश्तेदार परिचिता इरानी, जो केवल निकट की ही नहीं है, एक ऐसी अग्रगामी भूमिका अदा कर रही थी जिसे नकारा नहीं जा सकता। बल्कि वह और भी निकट खींच लेती है। हालांकि यही इरानी यदि राइटर्स की मुलाजिम होती उससे हर रोज मुलाकात होती, महेन्द्र उसकी ओर आँख उठाकर देखता, तो भी वह निर्विकार बना रहता। उसके प्राणों में कौंध पैदा नहीं होती, उसकी आँखों की दृष्टि चकित नहीं होती। अपरिचय की दूरी उसके लिए बहुत कुछ अस्तित्वहीन जैसी है। जिससे जान-पहचान नहीं, उसका अस्तित्व महेन्द्र के लिए नगण्य है।

इस दृष्टि से इरानी केवल निकट की ही नहीं है। उसकी बातचीत और हँसी में इस प्रकार की एक आयासहीन प्रगल्भता है, घुलने-मिलने का एक ऐसा भाव है, जैसे वह बीच में कोई अड़चन रहने देना चाहती ही नहीं। उसकी वही बात महेन्द्र को फिर याद हो आई। 'जिन्दगी जबकि एक ही है तो इसी जिन्दगी में सब कुछ कर लेना है।' दरअसल याद नहीं आई बल्कि 'जिन्दगी एक ही है' यह बात उसके दिमाग में बिंध गई है। बाहर से वह शान्त, विनीत और बुझा-बुझा जैसा दीखता है और लोगों की धारणा है, वह धर्मभीरु है। लेकिन धर्म के संदर्भ में वह माथापच्ची नहीं करता। अगले जन्म के बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं है। मौजूदा समय में उसने स्वयं को जमीन-जायदाद बढ़ाने के काम में ही समर्पित कर दिया है। मगर जिन्दगी जब कि एक ही है, मरने के वक्त पोटली बांधकर कुछ साथ लेकर नहीं जाया जा सकता—

तो यह बात नए सिरे से उसके अन्तर्मन को वेध रही है। जीवन बड़ी ही दुर्लभ वस्तु है, उसे वह इतने दिनों तक इसी रूप में सोचता रहा था। इरानी की बात के बाद से दुर्लभ जीवन की तसवीर और ही तरह की हो गई है।

महेन्द्र को जैसे एकाएक स्मरण हो आया हो, इस अन्दाज से उसने इरानी से पूछा, "बहुत-सी ऐसी चीजें हैं, जिनके बारे में तुमसे पूछ नहीं पाया हूँ। तुम लोगों के सिलीगुड़ी का हाल-चाल ठीक है न ?"

"बहुत जल्दी ही तुम्हें यह बात याद आ गई।" गुरवाला गायों की सानी तैयार करते-करते बोली, "तुम किस दुनिया में रहते हो ?"

इरानी मुसकराकर बोली, "हम लोगों का हालचाल! किसी तरह चल रहा है। माँ की तबीयत फिलहाल ठीक नहीं है।"

महेन्द्र ने पूछा, "ट्रेन में इतना लंबा सफर अकेले-अकेले किया, घर में किसी ने रोक-थाम नहीं की ?"

"क्यों करेंगे ?" काली आँखों की भौंहों को नचाती हुई इरानी बोली, "एक ही रात का तो सफर है। थ्रीटायर स्लीपर में मजे में चली आई।"

महेन्द्र बोला, "फिर भी औरत होकर अकेली ही चली आई।"

"इससे क्या आता-जाता है ?" इरानी खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली।

एकाएक तेज हवा के झोंके से उसका आँचल उड़ गया। उसने आँचल को पकड़ा पर उसे तत्क्षण सीने पर रखे बगैर बोली, "आजकल लड़कियाँ अकेली ही विलायत चली जाती हैं। और मैं सिलीगुड़ी से स्यालदह नहीं आ सकती हूँ ?"

महेन्द्र इरानी के हाथ में थमे आँचल और उसके सीने के लाल ब्लाउज की ओर ताक रहा था और उसे एक प्रकार की बेचैनी और विवशता से मिले-जुले भाव का अहसास हो रहा था। इरानी महेन्द्र की आँखों में झाँक रही थी। अचानक वह दाँतों से निचले होंठ को

काटकर एक अजीब ही तरह की ऐसी हँसी हँस दी कि महेन्द्र के पचास साल के खून में झट से आग की लपटें लहक उठीं। इरानी ने महेन्द्र की आँखों से अपनी दृष्टि हटाकर अपने वक्ष पर टिका दी और आँचल को धीरे-धीरे पीठ की ओर सरका दिया। उसके बाद सहज हो, शिकायत भरे लहजे में कहा, "महेनदा, इतना-इतना पैसा रहने के बावजूद अपने यहाँ इतनी बड़ी इमारत क्यों खड़ी की है? सेन्ट्रल या बालीगंज में मकान क्यों नहीं बनवाया?"

इरानी की बात सुनकर महेन्द्र को होश आया और उसने जरा घबराकर हँसते हुए कहा, "मेरे पास अगाध संपत्ति है, तुमसे यह किसने कहा?"

"कौन कहेगा?" इरानी ने गरदन झटकते हुए कहा, "सबको मालूम है कि आप धनकुबेर हैं। कम से कम सेन्ट्रल कलकत्ता में मकान बनाने लायक आपसे पास पैसा है।"

महेन्द्र मन ही मन हँस पड़ा। आँखों के सामने अपने एक-एक मकान और जयदाद की तसवीरें उभर आईं। मध्य कलकत्ते में उसका एक फ्लैट पच्चीस सौ स्क्वायर फीट में है, जिसमें तीन बेडरूम, ड्राइंग रूम, डाइनिंग रूम, किचेन है और किराये के तौर पर तीन हजार रुपये मिलते हैं। अठारह सौ स्क्वायर फीट का एक सजा-सजाया फ्लैट खाली पड़ा है। दफ्तर के कुछ विशिष्ट पदाधिकारियों के अतिरिक्त उसके बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं है। क्योंकि पदाधिकारीगण बीच-बीच में चाबी माँगकर ले जाते हैं। बालीगंज सर्कुलर रोड में बगीचे से घिरा एक दोमंजिला मकान है जो एक विदेशी डिप्टी कंसुलेटर को किराये पर दिया हुआ है। फर्न रोड में एक तीनमंजिला मकान है जिसमें तीन किरायेदार हैं। इसके अलावा माणिकतल्ला सी० आई० टी० रोड में एक कमरे वाला एक छोटा-सा फ्लैट है। दमदम की रेल-लाइन के पास डेढ़कट्ठा जमीन पर जो टाली का मकान था, उसकी जगह अब वहाँ एक पोख्ता दोमंजिला मकान है और वह भी किराये

पर लगा हुआ है। उसने कहा, "जोड़-जाड़कर किसी तरह साहबी मुहल्ले में शायद एक मकान बन जाए, लेकिन वहां रहेगा कौन ? हम लोग वैसे मुहल्ले में कैसे रहेंगे? इसके अलावा इस अंचल में बहुत दिनों से रह रहा हूँ, यहीं अच्छा लगता है।"

"लेकिन यहाँ से ऑफिस जाने में कितनी असुविधा होती होगी, इस पर सोचकर देखें।" इरानी ने कहा, "सेन्ट्रल में घर हो तो हर दृष्टि से सुविधा होती है। यहां से हर रोज नौकरी करने के लिए क्लाइव स्ट्रीट जाना बाकायदा एक तकलीफदेह बात है।"

महेन्द्र ने कहा, "हां, जरा दूर हो जाता है। फिर भी यहां से बहुतेरे औरत-मर्द नौकरी करने के लिए ऑफिस मुहल्ले जाते हैं। मैं भी यहां से हर रोज राइटर्स जाता हूँ।"

"आपके जाने की बात मुझे सुरादी से सुनने को मिली है।" इरानी ने होंठ बिदकाकर कहा, "कैसे आते-जाते हैं, आप ही जानें!"

महेन्द्र मुसकराया पूछा, "तुम्हें यहाँ कब ज्वाइन करना है?"

"अगले सप्ताह सोमवार को।" इरानी ने कहा, "सोचती हूँ, आज ही एकबार दफ्तर जाकर मिल-जुल आऊं। लेकिन जाने की बात सोचते ही डर लगने लगता है। गाड़ी आपने क्यों नहीं खरीदी है? ऐसा होता तो दो-तीन महीने गाड़ी पर सवार हो दफ्तर जाती।"

महेन्द्र निरीह हँसी हँसते हुए बोला, "गाड़ी रहे, यह सुनने में अच्छा लगता है, देखने में भी अच्छा लगता है मगर चालू रखना ही मुश्किल की बात है।"

"क्यों, आपके पास तो इतनी-इतनी बसें और लारियां हैं, वे सब क्या चालू हालत में नहीं हैं?" इरानी ने पूछा।

महेन्द्र का मन अशान्त हो उठा। इरानी को इतनी-सारी बातों का पता कैसे चला? उसने कहा, "हां, उन्हें चालू हालत में रखना ही पड़ता है, और उसी से महसूस किया है कि गाड़ी चालू रखना कितना कठिन काम है। बिना गाड़ी के भी तो यह जीवन···।" उसने बात पूरी

नहीं की, इरानी की ओर आँखें टिका दीं और चेहरे पर असमंजस का भाव लिए चुप हो गया।

"क्या हुआ, बिना गाड़ी के भी तो यह जीवन···?" इरानी ने जिज्ञासा की भंगिमा में वाक्य को अधूरा ही छोड़ दिया।

महेन्द्र ने कहा, "तुम्हीं तो कहती हो, जिन्दगी एक ही है, और इसी जिन्दगी में सारी साध पूरी कर लोगी।" वाक्य पूरा करने के बाद उसने चकित दृष्टि से एकबार सुरबाला की ओर देखा।

"वह बात आपको याद ही है!" इरानी ने हँसते हुए सीने के आँचल को खींचा, "मेरा तो विचार यही है। मेहनत करके खाऊँगी और जीवन का जहाँ तक उपभोग किया जा सकता है, कर लूँगी। उसके बाद मर जाने पर मेरा सब कुछ चिता में जल जाएगा।"

महेन्द्र ने पुनः सुरबाला की ओर देखा। सुरबाला बड़ी नाँद में चना, भूसा, गुड़ वगैरह मिलाकर अभी हरेक गाय को अलग-अलग खाना दे रही है। उसका ध्यान इस ओर नहीं है। घर से सतु की आवाज आ रही है। वह कोई हिन्दी गीत गा रहा है। महेन्द्र को याद आया, पिछली रात उसने सुरबाला को रुपया नहीं दिया है। सुरबाला रात में ही सतु को पैसा दे देती है, बाजार से सामान खरीदने के लिए। उसने सुरबाला से कहा, "सुरो, मैं पिछली रात तुम्हें रुपया देना भूल गया था, सतु का बाजार जाने का समय हो गया है।"

सुरबाला बगैर गरदन घुमाये बोली, "मैंने सतु को रुपया दे दिया है। जाने के पहले तुम मुझे रुपया देते जाना।"

"मैंने तय किया है महेनदा, सेन्ट्रल कलकत्ते में ही कहीं रहूँगी।" इरानी ने कहा, "तब हाँ, किराये पर मकान लेकर नहीं रह पाऊँगी। मेरे पास उतना रुपया नहीं है। लड़कियों के किसी होस्टल में टिक जाऊँगी।"

महेन्द्र मानो भूल ही गया था कि इरानी ने तीन महीने तक उन लोगों के मकान में रहने की इच्छा प्रकट की है। इसी बीच वह अपने

रहने का इन्तजाम कर लेगी। इरानी के द्वारा लिखी गई चिट्ठी उसकी आँखों के सामने तैरने लगी। तब इरानी का इस मकान में टिकने का अनुमोदन महेन्द्र नहीं कर सका था। उसके मन के किसी कोने में एक असमंजस का भाव था, हालांकि एक तरह की सूक्ष्म दुर्बलता भी थी। अभी इरानी से यह सुनकर कि वह चली जायेगी, उसे एक प्रकार के सूनेपन की उदासी ने जकड़ लिया। हालांकि इरानी के यहाँ आये अभी चौबीस घंटे भी नहीं हुए हैं। धीर, स्थिर, शान्त और दूरदर्शी महेन्द्र जीवन के संबंध में एक ठोस योजना तैयार कर चुका था। लेकिन अब उसे महसूस होता है कि वह स्वयं को कितना कम पहचानता है। उसने देखा, सुरबाला गैरेज के पीछे की ओर जा रही है। बछड़ों को लाने के लिये। महेन्द्र नीम की दातून से तब लगातार दाँतों को रगड़ रहा था। बोला, "नई जगह जाने के लिये इतनी जल्दीबाजी क्यों मचाये हुई हो। जो कुछ करना हो, सोच-समझकर ही करना चाहिये। तुम्हें कोई भगा तो नहीं रहा?"

इरानी ने सीने के आँचल को और जोर से कस लिया, उसके उरोज मानो साड़ी-ब्लाउज के बंधन को तोड़कर बाहर निकलने को छट-पटा रहे हों। उसकी काली आँखों की दृष्टि में जैसे एक छाँह पसर गई। उदास हँसी हँसती हुई बोली, "नहीं, आप भगा क्यों दीजियेगा? लेकिन जब जाना ही है तो जितनी जल्दी इन्तजाम हो सके, उतना ही अच्छा। कहिये, ठीक कह रही हूँ न?" उसकी निगाह महेन्द्र की आँखों पर टिक गई।

महेन्द्र की निगाह इरानी के सीने पर थी। आँख उठाकर उसने चेहरे की ओर देखा। दुनिया का यह एक बहुत बड़ा विस्मय कि महेन्द्र के चेहरे पर असमंजस का आवेग खेल गया। इरानी की आँखों की पलकें क्या थोड़ी मुँद गईं? उसकी आँखों की पुतलियों में क्या एक विशेष चमक उतर आई? महेन्द्र बोला, "बात तो ठीक है, मगर मेरा कहना है, तुम्हें जल्दीबाजी नहीं करनी है। मैं ही इसका पता लगा

कि तुम्हारी सुविधा के लायक कोई जगह मिलती है या नहीं। अभी तुम्हारे साथ एक ही असुविधा है और वह है आने-जाने की तकलीफ।"

"आप अगर कोई इंतजाम कर-करा दें तो फिर कहना ही क्या ?" क्षण भर में इरानी की काली आंखों में विजली खेल गई, "आप ठीक ही कह रहे हैं, यहां से ऑफिस आने-जाने में ही सबसे बड़ी असुविधा है। तब हां, मैंने सोचा है, मती या सतु की मोटरसाइकिल के पीछे बैठकर ऑफिस चली जाया करूंगी।"

यह बात सुनते ही महेन्द्र को लगा, उसके कलेजे में तीर चुभ गया और लहमे भर में यह बात उसके मस्तिष्क के प्रत्येक कोष में गूंज उठी और प्रबल आक्रोश और विद्वेष से उसका कलेजा जैसे फटने लगा। वह अपने कारोबार के स्थानों में तीखी बातें बोलता है, गुस्से में आ जाता है लेकिन वह सब जैसे उसके मुखौटे हों। थोड़ी-बहुत चोरी, हाथ की सफाई या होसियारी अथवा जिल्दसाजी कारखानों की लड़कियों के प्रति कोई-कोई हाथ बढ़ाने की कोशिश करेगा, यह सब बात उसे मालूम है। [मा]लूम होने के बावजूद वह इसका विरोध करता है, गुस्सा करता है, [गा]ली-गलौज करता है लेकिन यह सब उसके कलेजे को बेधता नहीं है। मन ही मन इन बातों को उसने स्वीकार कर लिया है। फिर भी वहाँ उसकी कोई न कोई भूमिका होनी चाहिए और वह उसी भूमिका में रंग-मंच पर उतरता है। अभी इरानी की बातों से उसका निरीह मुखौटा खुल गया। उसने गंभीर स्वर में पूछा, "यह सब कब तय हुआ है ?"

सुरबाला बछड़ों को गायों के पास खूंटे में बांध, बगीचे के नल से हाथ धोने जा रही थी। महेन्द्र का वज्र जैसा गंभीर स्वर सुनकर उसकी पेशानी पर सलवटें पड़ गईं और उसने खोजी निगाहों से महेन्द्र और इरानी की ओर देखा। इरानी महेन्द्र के स्वर से चौंक पड़ी और फटी-फटी आंखों से ताकती हुई बोली, "कल रात ही कहा था और मती-सतु राजी हो गये हैं। इतना जरूर है कि आपकी राय के बगैर कोई काम नहीं करनी है।"

महेन्द्र के तने चेहरे और आँखों में क्रोध का भाव स्पष्ट है। उसने दृढ़ता के साथ सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं, लड़कों की मोटरसाइकिल के पीछे बैठकर तुम कभी दफ्तर नहीं जा सकती। ऐसा मैं पसंद नहीं करता।"

इरानी की काली आँखों में भी क्या आक्रोश उभर आया? एक क्षण के लिए उसके जबड़े कस गये। दूसरे ही क्षण सुरबाला की ओर ताक कर वह आहिस्ता-से हँसी। उसके बाद ठठाकर हँसते हुए हाथ जोड़कर महेन्द्र से बोली, "आपको पसंद न हो, वैसा काम मैं नहीं करूँगी। हाथ जोड़कर कह रही हूँ, अब हुआ न?"

महेन्द्र अपने दाँतों को नीम की दातून से जल्दी-जल्दी रगड़ने लगा। अचानक कोई बात न कह सका। लेकिन उसके चेहरे का तनाव और क्रोध का आवेग बुझ गया। सुरबाला इरानी से बोली, "कल रातवाली बात न? मती और सतु की मोटरसाइकिल के पीछे बैठकर तुम्हारे ऑफिस जानेवाली बात?"

"हाँ, वह बात कहते ही तुम्हारे पतिदेव देखो कितने गुस्से में आ गये।" इरानी ने पूरी घटना को अपनी हँसी से तुच्छ बना देने की कोशिश की।

सुरबाला ने एक बार महेन्द्र की ओर देखा। पति की यह अटल-अटूट दृढ़ता देखकर मन ही मन खुश हुई। हँसकर बोली, "मैंने तो तुमसे पिछली रात ही कहा था, तुम्हारे बहनोई संभवतः सहमत नहीं होंगे।"

"अपने पति को तुम जितना पहचानती हो, मैं क्या उतना पहचानती हूँ?" इरानी ने मुसकराकर सहज स्वर में कहा, "मैंने यों ही बातचीत के सिलसिले में कहा था। कान मलती हूँ, अब यह सब नहीं सोचूँगी।"

सुरबाला हँसती हुई नल की ओर चली गई। महेन्द्र का हृदय अशान्ति और बेचैनी से भर उठा। जहरीला साँप जिस त—

उगलने के बाद निस्तेज हो जाता है, उसकी हालत वैसी ही है। वह इतना स्पष्टवादी है और उत्तेतिज हो उठेगा, ऐसा उसने स्वयं भी नहीं सोचा था। उसके मन की अशान्ति और बेचैनी बहुत-कुछ अनुताप जैसी थी। शायद वह अपना मनोभाव दूसरी तरह भी इरानी के समक्ष प्रकट कर सकता था। परन्तु वह स्वयं को किसी प्रकार रोक नहीं सका और सच्चाई को छिपाकर रखने के खयाल से उसने इरानी से एक मिथ्या बात कही, "दरअसल मुहल्लेवालों के बारे में सोचकर ही मैंने वैसा कहा। तुम्हारी किसी प्रकार की बदनामी हो, ऐसा मैं नहीं चाहता।"

"समझ गई जनाब।" इरानी महेन्द्र की आंखों की ओर देखती हुई हँस कर बोली, और उसकी आवाज एकाएक धीमी हो गई, बहुत ही धीमी, "मैंने ऐसा नहीं चाहा था, मती ने ही मुझे यह बात सुझाई थी।"

महेन्द्र हंसकर बोला, "वे लोग लड़के हैं। उम्र कम है, अभी दायित्व बोध नहीं है। वे लोग तो कहेंगे ही।" उसने देखा, हवा के आकस्मिक झोंके से इरानी के पूरे शरीर का कपड़ा अस्त-व्यस्त हो गया।

इरानी ने सीने के आंचल को संभालने की कोशिश में कमर के नीचे तरफ लहराती साड़ी को चट से जाँघों के बीच दबा लिया। सीने के आँचल को हाथ में थामे ही बोली, "चैत महीने की बयार कलकत्ते में और ही तरह की होती है।" आंचल को उसने जोर से खींचकर थाम लिया।

किसी का ध्यान इस ओर नहीं है कि एक वासन्ती चिड़िया किसी पेड़ के झुरमुट में बैठकर चहक रही है। सुरबाला नल के चबूतरे से महेन्द्र को उद्देश्य करती हुई बोली, "तुम मुंह नहीं धोओगे, देर हो रही है।"

महेन्द्र ने अचकचा कर इरानी की तरफ से आँखें हटा लीं और तेज कदमों से नल की ओर बढ़ गया। लेकिन एक नामालूम चिन्ता समस्या का रूप धारण कर उसके मन को कचोटने लगी।

कुछ दिन बीतने के बाद रविवार आया। इन कई दिनों के दरमियान बाहरी तौर पर महेन्द्र में कोई फेर बदल न दिखने के बावजूद उसके मन के भीतर लहर पर लहर जग रही है और किनारे को तोड़ने की कोशिश कर रही है। या यों कहा जा सकता है कि सम्मोहित शिकार जिस तरह अनजाने ही अजगर के ग्रास की ओर बढ़ता जाता है, वह भी इरानी की ओर बढ़ता जा रहा है। उसका सचेतन मन बार-बार उसे पीछे की तरफ खींचकर ले जाना चाहता है लेकिन वह आहिस्ता-आहिस्ता अचेतन के गड्ढे की ओर बढ़ता जा रहा है। उसका अनमनापन विस्मयकारी है—यहाँ तक कि उसके जीवन में जो घटित नहीं हुआ है, उस काम में भी वह बीच-बीच में भूल-चूक कर जाता है।

महेन्द्र समझ नहीं पाता है कि इरानी स्वयं कितनी सचेतन है। मच्छरदानी लगाकर झाड़ देना और खोंसना अब उसका दैनिक कार्य हो गया है और उस कार्य के दरमियान ही उसका सीना या हाथ महेन्द्र के शरीर को छू जाता है। वह स्पर्श मानो तेज चाकू से भी ज्यादा धारदार हो—एकबारगी खून में जाकर बिंध जाता है या फिर यातना की अनुभूति से उसे रोमांचकारी सिहरन जैसी महसूस होती है। वह अपने विगत यौवन को प्रौढ़त्व के रूप में लेता था किन्तु अब उसे यह एक नया आविष्कार जैसा लगता है कि उसके शरीर में यौवन के ज्वार जग रहे हैं। इरानी अब बातचीत करने के दरमियान आँखों को तरह-तरह से नचाती है और अपनी आवाज में धीमापन लाकर, एकान्त में पूछती है, "सुरादी को आप रात में किस तरह पीड़ा पहुँचाते हैं?"

महेन्द्र इन बातों का कोई उत्तर नहीं दे पाता है, विह्वल-चकित नेत्रों से सिर्फ ताकता रहता है और सीने में नगाड़े बजते रहते हैं। इरानी अनायास ही उसके शरीर का बनियान खींचते हुए कहती है, "आपको इतनी पुरानी गंजी फबती नहीं है। कारखाने से एकाध दर्जन ले आइए।" कभी-कभी सिर के बालों को छूकर कहती है, "लगता है, कोई पुआल का टुकड़ा पड़ गया है।" महेन्द्र को मालूम नहीं कि

मुच पुआल का कोई टुकड़ा है या नहीं। लेकिन बार-बार का स्पर्श उसके खून में सिहरन जगा देता है।

इरानी क्या जान-सुनकर स्वेच्छा से ऐसा आचरण करती है? यदि ऐसी बात नहीं है तो फिर इस तरह का आचरण, और सो भी अकसर सुरवाला की अनुपस्थिति में, क्यों करती है? महेन्द्र को ,इसके अलावा इस बात का भी अहसास होता है कि इरानी को न जाने कैसे मालूम हो गया है कि वह जितना निरीह और उम्र के बोझ से दबा-दबा जैसा दीखता है, उसका अधिकांश उसका हाव-भाव विशेष ही है। कहती है, "मुझे मालूम है, आप फुर्तीले और स्मार्ट हैं, मगर भाव ऐसा रहता है जैसे आप बिलकुल निरोह और ढीले-ढाले हों।" महेन्द्र के कपड़े के थैले को कसकर पकड़ लेती है और कहती है, "इसे लेकर बाहर क्यों निकलते हैं? एक अटैची केस खरीद नहीं सकते? और यह सब कैसी पोशाक है? मुड़ी-तुड़ी धोती, चुन्नट-लाँग कमर में खुंसी हुई और उसके ऊपर शर्ट! यह सब बाबा आदम के जमाने की पोशाक क्यों पहनते हैं? धोती ही पहननी हो तो आजकल मर्दों के लिए करघे की कितनी ही अच्छी-अच्छी धोतियाँ मिलती हैं। वही पहनिये और चुन्नटदार अद्धी का कुरता। सिल्क का कुरता भी पहन सकते हैं। इसके अलावा आज कल खादी के कितनी हा तरह के रंग-बिरंगे कुरते मिलते हैं। आपसे ज्यादा उम्र के आदमी भी वह सब कुरता पहनते हैं। फिर पैरों में आप इस प्रकार के सैंडल क्यों डाले रहते हैं? तलवे फट रहे हैं। अलबर्ट पहन सकते हैं या फिर स्ट्रैप दिये हुए कितने हो सुन्दर-सुन्दर काबुली सैंडल आजकल मिलते हैं, वह सब भी पहन सकते हैं।"

पोशाक के संबंध में इरानो सबके सामने बोलती है। सिर्फ सुर-बाला नहीं, मती-सतु-नीतू सबके सामने बोलती है। वे लोग सुनकर हँस देते हैं। महेन्द्र भी निरीह चेहरा लिये हँस देता है। उसके मुँह से निकल पड़ता है, "यह जिन्दगी इसी तरह बीत गई।"

"अगले जन्म के बारे में आपको कैसे पता चलता है?" इरानी

अपनी राय जाहिर करती है, अगला जन्म होता है या नहीं, यह हलफ-नामा लेकर कौन कह सकता है ? जिन्दगी एक ही होती है। यदि आपसे न हो सके तो मैं आपके लिए कपड़ा-लत्ता-जूता खरीदकर ले आऊँ।"

महेन्द्र मन ही मन खुश होता है लेकिन घबराहट के साथ कहता है, "नहीं-नहीं, पागलपन मत करो।"

महेन्द्र की हालत देखकर लड़के भी हँसते हैं। मती कहता है, "ठीक कहती हो तुम, इरानी मौसी। बाबूजी को तुम जरा साफ-सुथरा रहना सिखा दो।"

महेन्द्र हँसते हुए ही लड़के को डाँटता है, "जा, बड़प्पन मत दिखा।"

सुरबाला भी बीच-बीच में टिप्पणी करती है, "तुम ठीक ही कह रही हो, इरानी। हमेशा से इसे एक ही तरह का देखती आ रही हूँ। किसी भी हालत में तौर-तरीका बदलने वाला आदमी नहीं है।"

"तुम भी यह बात कह रही हो ?" महेन्द्र आश्चर्य भरी निगाहों से देखते हुए पूछता है।

इरानी गरदन झटक, पुतलियों को नचाकर कहती है, फिर आप सोचकर देखिए। सुरादी भी चाहती हैं कि आप जरा स्मार्ट बनें। सो तो कीजियेगा नहीं, लबादा चढ़ाकर इस तरह चलते-फिरते हैं जैसे आपके जैसा दीन-हीन अस्वस्थ आदमी कोई दूसरा न हो। दरअसल आप वैसे कतई नहीं हैं।"

नीतू एक दिन कह देता है, जानती हो इरानी मौसी, बड़ी सड़क पर दवा की जो बड़ी-सी दुकान है, वहाँ बैठकर एक आदमी हिसाब-किताब करता है। बाबूजी ठीक वैसे ही दीखते हैं।"

सुरबाला धमकाती है, "चुप रह, नीतू।"

इरानी कहती है, "नीतू, अपने पिताजी के संबंध में इस तरह की बात नहीं करनी चाहिए।"

महेन्द्र को पता है, लड़के उसे किस निगाह से देखते हैं। इरानी

कटाक्ष से लड़कों का मनोभाव और अधिक स्पष्ट हो जाता है। महेन्द्र गुस्से में नहीं आ पाता है। इरानी की बातों में व्यंग्य का पुट नहीं है, वह सचमुच ही महेन्द्र को और ही तरह का देखना चाहती है। गृहणी और लड़के भी उसे उसी रूप में देखना चाहते हैं। परन्तु बहुत दिनों की आदत एक बात में नहीं जा सकती। यह निरीह मुसकराहट के साथ इरानी से कहता है, "तुम्हारी एक ही बात सोचने लायक है—"जिन्दगी एक ही है।" मगर मेरी प्रकृति और ही तरह की है।"

"अपनी प्रकृति को गोली मारिये।" इरानी तमक कर कहती है, "मैं रातों-रात आपकी प्रकृति को बदल दे सकती हूँ।"

महेन्द्र इरानी की आँखों की ओर ताककर चुप्पी साध लेता है, एकाएक कोई जवाब नहीं दे पाता है। लेकिन छिपे तौर पर इरानी की आँखों की भाषा, हँसने की भंगिमा और बातचीत में बदलाव आ जाता है। कहती है, "सचमुच मैं आपकी प्रकृति बदल दे सकती हूँ।"

महेन्द्र के सीने में नगाड़ा बजने लगता है। चेहरे से वह अपना भाव नहीं करना चाहता। फिर भी कहता है, "इस काठी में क्या यह है?"

"संभव जरूर है।" इरानी काली आँखों को नचाकर अपनी देह में लोच पैदा करती हुई कहती है, "यह सब बात मुझसे मत कहिये। आपकी काठी अभी काफी मजबूत और ताजा है।"

इरानी की बातें महेन्द्र के मस्तिष्क में गहरी प्रतिक्रिया जगाती हैं। फिर भी वह अपने अन्दर के अनजाने प्राणी को खोजने के मकसद से पूछता है, "तुम्हें कैसे पता चला कि मेरी हड्डी की यह ठठरी अब भी मजबूत और ताजा है?"

"मुझे मालूम है, साहब। इरानी आँख नचाकर, गरदन झटकते हुए फुसफुसाकर कहती है, "यह हड्डी अब भी बाजीगरी का खेल दिखाती है और यह बात मुझे मालूम है।"

महेन्द्र की साँस जैसे थम जाती है और वह पूछता है, "कैसे, बताओ तो।"

इरानी आगे बढ़कर, महेन्द्र के कान से होंठ सटाकर कहती है, "आँखों की ओर ताकने पर।"

महेन्द्र के पूरे जिस्म में बिजली की तरंग दौड़ जाती है और वह विह्वल स्वर में पूछता है, "आँखों की ओर ताकने पर ? यह क्या चीज है ?"

"और क्या चीज होगी?" इरानी तिरछी निगाहों से ताककर कहती है, "आँख ही मन का आईना हुआ करती है, यह आप नहीं जानते ? आपकी आँखों की ओर ताकते ही पता चल जाता है कि आपके अन्दर इच्छा-अभिलाषा शक्ति सब कुछ मौजूद है। मैंने क्या यों ही कहा कि अभी आप पूरे जवान हैं ?"

महेन्द्र की आवाज लड़खड़ाने लगती है, "मगर···मगर—मैं—मैं तो इसका अहसास नहीं कर पाता हूँ।"

"मैं अहसास करा दे सकती हूँ।" इरानी उँगली से उसके सीने की ओर इशारा करती है और दाँत से निचला होंठ काटती है। पलकों को नचाकर कहती है, "लेकिन सुरादी को पता चल जायेगा तो वह मेरा झोंटा पकड़कर घर से निकाल बाहर करेगी।" यह कहकर छनकती हँसी से भरे मुख में आँचल दबा लेती है।

महेन्द्र सब कुछ समझने के बाद संशय भरे स्वर में पूछता है, "क्यों ?"

"इस पर आप ही सोचकर देखें।" इरानी झट से महेन्द्र के गाल के करीब होंठ लाकर फुसफुसाते हुए कहती है और हँसकर भाग जाती है।

महेन्द्र अवाक् और विह्वल हो इरानी की देह गंध और उसके चले जाने की दिशा की ओर ताकता रह जाता है। राइटर्स बिल्डिंग के सेक्रेटेरियट के उस निरीह किरानी, जो आज सुयोग की खोज

अपनी वुद्धि के जोर पर लगभग करोड़पति है, के मुखड़े का चमड़ा उत्तेजना से जैसे थरथराने लगता है। उसके मस्तिष्क से जैसे तीव्र चिनगारी निकलती है और वह कुण्डलिनी चक्र को झंकृत कर देती है, साथ ही एक व्याकुलता उसके सम्पूर्ण हृदय को उत्तेजित कर जाती है।

लगभग एक सप्ताह की इस परिणिति और उसके परिणामस्वरूप जो घटना विशेष उल्लेखनीय वन गई है वह है रात में लेटने पर जब नींद नहीं आती तो उसे वाहरी कमरे में मती और सतु की खिलखिलाहट के साथ इरानी की खिलखिलाहट सुनाई पड़ती है और उसका मन विक्षुब्ध हो उठता है। दुनिया का एक यह विचित्र अनुभव है। महेन्द्र सचेतन मन से सोच सके, उसको उसमें क्षमता नहीं है। इरानी के कारण उसका मन ईर्ष्या के ऐसे स्तर पर पहुँच चुका है कि वह इरानी का किसी से घुलना-मिलना वरदाश्त नहीं कर पाता—यहाँ तक कि अपने वाल-वच्चों के साथ भी घुलना-मिलना उसे वरदाश्त नहीं होता है। एक दिन वह विस्तर से ही चिल्ला उठता है, "सुरो, सुरो रात के वक्त घर में यह शोरगुल क्यों मचा है? जरा शान्ति से भी सो नहीं पाऊँगा?"

सुरवाला घवराकर दौड़ी हुई आती है और कहती है, "अच्छा-अच्छा, मैं उन लोगों से जाकर कहती हूँ, तुम सो रहो। मैं दरवाजा वन्द कर देती हूँ।"

"नहीं, दरवाजा वन्द नहीं करना है।" महेन्द्र उसी लहजे में चिल्लाकर कहता है, क्योंकि उसने खुद ही इरानी को दरवाजा खुला रखने कहा है ताकि वाहरी कमरे की वातचीत उसके कानों में आती रहे।

इस वाकया के वाद रात के समय वाहरी कमरे की अड्डेवाजी वंद हो जाती है। महेन्द्र के उस विगड़े मूड और चिल्लाहट से उसकी पत्नी और वच्चों को अचरज होता है। शान्त निरीह महेन्द्र के अन्दर एक

सख्त जिद्दीपन है और इसी वजह से इस घर में मोटर, फ्रीज, टेलीफोन वगैरह नहीं आ सके हैं। लेकिन उसका बिगड़ा हुआ मूड और चिल्लाहट कभी देखने-सुनने को नहीं मिली थी। उसका चुपचाप हाथ और सिर हिलाना ही काफी होता था।

"उस रात की चिल्लाहट के बाद इरानी उसे दूसरे दिन एकान्त में पूछती है, "कल रात आप इतने तैश में क्यों आ गये थे ?"

"सो नहीं सका था, इसीलिए।" महेन्द्र निरीह स्वर में जवाब देता है।

इरानी महेन्द्र के चेहरे की ओर देखती है और धीरे-धीरे उसकी दृष्टि में एक अर्थ पूर्ण हँसी खेल जाती है। महेन्द्र विह्वल और विमूढ़ जैसा रह जाता है और पूछता है, "क्या ?"

इरानी सिर हिलाकर हँसती है और सामने से जाती हुई कहती है, "कुछ नहीं, अब आपकी नींद में खलल नहीं डालूँगी।"

महेन्द्र और सुरबाला के लिए जो बात अनजानी रह गई है वह यह कि इरानी पहले दिन मती की मोटरसाइकिल के पीछे बैठकर दफ्तर गई थी और मती दमदम के मोड़ तक इरानी मौसी को पहुँचा आया था। पच्चीस वर्ष के मती का मन अभी उदार और विकारहीन है। फिर भी वह इरानी को छिपे तौर पर उसके नारी सुलभ आचरण के कारण ही क्लाइव स्ट्रीट तक ले गया था—उस नारी सुलभ आचरण के कारण जो पुरुष के उदार और स्वतंत्र प्राणों को चिरदिन अपनी अधीनता स्वीकार करने को बाध्य करता रहा है। उसमें पापबोध नहीं, प्रकृति की अपनी गति से बढ़ने की लीला है। यही नहीं, इरानी इस बीच मती और सतु के साथ चौरंगी मुहल्ले के वातानुकूलित सिनेमा घर में एक दिन मैटिनी शो भी देख आई है। इस दुराव-छिपाव में बहुत कुछ बचपने का हाथ था। यौवन की प्रगलभता, छिपकर मजा लूटने का भाव था। उस बीच ही लड़कों ने इरानी को महेन्द्र के संबंध में बताया था, "बाबूजी मोस्ट बैकवर्ड माइन्डेड मैन हैं।" "इरानी

हँसते-हँसते कहा था, "मगर तुम लोगों के मोस्ट बैकवर्ड माइन्डेड मैन पिता ने ही तो विशाल कारोबार खड़ा किया है···।"

मती और सतु ने राय जाहिर की थी, "सचमुच बाबूजी को देखकर सोचा ही नहीं जा सकता कि उन्होंने इतना बड़ा कारोबार खड़ा किया है। इन फैक्ट, हमें भी मालूम नहीं है कि बाबूजी ने क्या-क्या कारोबार खड़ा किया है और कितने रुपये कहाँ रखे हैं।"

मती और सतु की बातें इरानी ने हँस-हँसकर सुनी थीं मगर हर बात को ध्यान से सुना था। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बारे में भी मती और सतु से ही उसे पता चला था। लेकिन वास्तविक संपत्ति की तफसील की उन्हें भी जानकारी नहीं है। इरानी की उत्सुकता सिर्फ बढ़ी ही नहीं थी बल्कि उसके रमणी मन ने महेन्द्र सरकार नामक व्यक्ति को मुकम्मल तौर पर ईजाद करने की एक सौगंध खा ली थी। पुरुष के रूप में उस आदमी के हृदय का अधिकांश उसके समक्ष कई दिन पहले उद्घाटित हो चुका है। अब उसी रास्ते से अन्दर धँसकर उस आदमी के तमाम रहस्यों का पता लगाना है।

मगर इस खोज के पीछे क्या कोई कारण है? खुद इरानी को भी इसका पता नहीं है। वह विचार अभी प्रकृति की खामखयाली की तरह ही रमणी के हृदय से खिलवाड़ कर रहा है।

प्रायः एक सप्ताह के दौरान परिस्थिति जब इस सोपान तक पहुँच गई और इरानी महेन्द्र के संबंध का संकेत स्पष्ट हो गया तो इस बीच सप्ताहान्त का रविवार आया। छुट्टी का दिन।

महेन्द्र का रविवार आधे काम का दिन होता है। सवेरे शौचादि और जलपान से निबटने के बाद वह अपने कपड़े के थैले में रखे खाते को लेकर बैठता है। अविश्वास की बात होने के बावजूद, इस एक ही खाते के हिसाब और छोटी-मोटी टिप्पणियों में उसके तमाम कारोबारों का हर पहलू स्पष्टतः प्रतिबिम्बित हो उठता है। सरकार एण्ड सन्स एण्ड अदर कन्सर्न्स के प्रत्येक बस-रूट की बसों के बिके हुए टिकट,

कीमत की दर, आय-व्यय, हैवी ट्रकों के आवागमन की दूरी, माल बोझाई का परिमाण, उसका आय-व्यय, प्रेस, होसियारी और जिल्द-साजी के कारखाने का मौजूदा उत्पादन, आय-व्यय तथा प्रत्येक प्रतिष्ठान की आय का एक नम्बरी यानी चेक से भुगतान—देय और प्राप्य—तथा दो नम्बरी यानी नकद भुगतान का देय और प्राप्य—सब कुछ का ब्योरा एक मोटे खाते में छोटे-छोटे हरफों में लिखा रहता है।

महेन्द्र के अतिरिक्त और किसी के लिए इस खाते में तमाम व्यवसायों को आईने की तरह देखना नामुमकिन है। रविवार के सवेरे एक बार उसे इस खाते को खोलकर बैठना ही पड़ता है। सप्ताह के और-और दिनों में उसे खतियाने का वक्त नहीं मिलता है। रविवार के प्रातःकाल वह खाते को खोल सप्ताह भर के समस्त हिसाबों की बारीकी से जाँच-पड़ताल करता है और उसके परिणामस्वरूप कभी-कभी थोड़ी बहुत भूल-चूक निकल आती है।

विस्मय से इरानी की पेशानी पर सलवटें पड़ गईं और वह एक तरह से चिल्ला पड़ी, "यह क्या महेनदा, आज रविवार को भी आप यह क्या लेकर बैठ गये? काम करने लगे?"

"बस जरा-सा।" महेन्द्र ने हँसकर कहा, "दोपहर के खाने के समय तक करूँगा, उसके बाद मुझे फुर्सत ही फुर्सत है।"

इरानी ने रूठने की मुद्रा में होंठ लटकाकर कहा, "नहीं-नहीं, आज आपको बैठने नहीं दूँगी। चलिये, बाहर के बगीचे में पेड़ के नीचे हवा में बैठकर गपशप करेंगे।"

"पेड़ के नीचे हवा में बैठकर गपशप!" महेन्द्र ने मानो सपना देखने की मुद्रा में कहा और उसके कथन में भी सपने का खुमार छा गया, "क्या गपशप करोगी, इरानी?"

इरानी बोली, "ढेर सारा गपशप करना है। अगल-बगल बैठेंगे तो बहुत सारी बातें अपने आप चली आयेंगी।"

महेन्द्र ने व्यग्रता महसूस नहीं की हो, ऐसी बात नहीं। लेकिन

उसका मन खाते के पृष्ठ में उलझा हुआ था। हालाँकि इरानी का आकर्षण भी उसे खींच रहा था। उसने कहा, "तुम्हारी बातें सुनने की तीव्र इच्छा हो रही है लेकिन मैंने कभी सवेरे पेड़ के तले हवा में बैठ-गपशप नहीं किया है।"

"यही वजह है कि आप स्वयं को बूढ़ा महसूस करते हैं।" इरानी की पलकें भिच-सी गईं और उसने कृत्रिम अभिमान भरे स्वर में कहा, "जिन्दगी को क्या कुछेक खाता-पत्र में ही जिलाए रखिएगा ?"

महेन्द्र मन ही मन सहमत भी हो गया था किन्तु सुरबाला और लड़कों के बारे में सोचकर जा नहीं सका। बोला, "तुम समझती नहीं कि जाने से असुविधा का सामना करना होगा ?"

इरानी कुछ क्षणों तक महेन्द्र की आंखों की ओर निहारती रही, उसके बाद सिर झुकाकर उसके मुँह के करीब अपना मुँह लाकर बोली, "आप डरपोक हैं।" यह कहकर पुतलियों को नचाती और बलखाती हुई चली गई।

महेन्द्र एक क्षण निर्वाक् बैठा रहा और उस आश्चर्यजनक तसवीर के बारे में सोचने लगा कि वह और इरानी बगीचे में पेड़ के तले हवा में बैठकर गपशप कर रहे हैं। कौन-सा गपशप ? कौन-सी बात ? महेन्द्र को मालूम नहीं। अगल-बगल बैठते ही बहुत सारी बातें अपने आप आ जाती हैं। उसके बाद भी महेन्द्र ने हिसाब-किताब में स्वयं को खोने की कोशिश की लेकिन और-और रविवारों की तरह खाते में उसका मन नहीं लगा। बीच-बीच में उसे इरानी का स्वर अनमना बनाते रहा। इस कमरे में भी इरानी कई बार चक्कर लगा चुकी है, हालाँकि उसने महेन्द्र से कोई बातचीत नहीं की और न ही उसकी ओर ताका। महेन्द्र की आँखें चुम्बक की तरह खिंच गई थीं। उसके बाद महेन्द्र जब स्टील की आलमारी में खाता रख कमरे से बाहर आया तो देखा, इरानी सुरबाला के साथ रसोई के काम में लगी हुई है। मती और

सतु मोटरसाइकिल लेकर छुट्टी के अड्डे पर निकल चुके हैं। नीतू बगीचे में खेल रहा है, मुहल्ले के अपने दोस्तों के साथ।

सुरबाला ने हँसकर कहा, "तुम्हारी साली आज मुठो रसोई पकाकर खिलाएगी ?"

समझ में न आने के कारण महेन्द्र ने पूछा, "मुठो रसोई क्या चीज है ?"

"इस देस में रहते-रहते आप बिलकुल पछाँह बंगाली हो गये हैं, इसलिए आपको पता कैसे चलेगा कि मुठो रसोई क्या चीज है।" इरानी ने रसोई पकाते हुए उत्तर दिया।

सुरबाला बोली, "पछाँह बंगाली होने की बात नहीं है। दरअसल आजकल मैं इस तरह की झंझट वाली रसोई नहीं पकाती हूँ। तुम्हारे बहनोई भी आजकल मसालेदार भोजन खाना नहीं चाहते।"

"इसमें कोई खास मसाला नहीं है, सुरादी।" इरानी ने कहा, "चितला मछली की पीठ के हिस्से को सोझाकर काँटे चुन लिये जाते हैं, उसके बाद उसे तलकर आलू मिलाकर प्लेन डालना[1] तैयार किया जाता है। घी देने की जरूरत नहीं, थोड़ा-सा पिसा हुआ जीरा और गरम मसाला देने से ही तैयार हो जाता है।"

सुरबाला ने कहा, "मालूम है।"

"तुम्हें मालूम न हो, ऐसा कहीं हो सकता है, सुरोदी ?" इरानी ने यह बात महेन्द्र की ओर ताकते हुए कहा। उसके बाद सुरबाला की ओर ताकती हुई बोली, "तब हाँ, मेरे हाथ की रसोई महेनदा को पसंद आयेगी या नहीं, कह नहीं सकती।"

इरानी को रसोईघर में रसोई पकाते देख महेन्द्र मन ही मन बड़ा खुश हुआ। बोला, "मैंने सोचा था, तुम बैंक के डेबिट-क्रेडिट एकाउन्ट का ही काम कर सकती हो। रसोई भी पका सकती हो, ऐसा नहीं सोचा था।"

---

१. व्यंजन-विशेष।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि सिलीगुड़ी में मैं पकी-पकायी भात-सब्जी खाकर बैंक जाती थी ?" इरानी काली आंखों की कोर से ताकती हुई बोली, "बिलकुल नहीं। मैं रसोईघर में न जाती होती तो खाना ही नसीब न होता। यहीं आप लोगों से मेरा अन्तर है।"

महेन्द्र ने कहा, "यह बात माननी ही होगी।"

"महेन्द्र सरकार का क्रेडिट और अधिक है।" इरानी होंठों की कोर से मुसकराती हुई बोली, "वे मुझे यदि अपनी रसोई बनाने की नौकरी पर रख लें तो मैं यह भी कर सकती हूँ।"

महेन्द्र ने पूछा, "तनख्वाह क्या होगी ?"

"बैंक में नौकरी करने से जितना मिलता है, उतना ही।" इरानी ने आंखों को नशीली बनाते हुए कहा, "आपको तो मालूम ही है कि मुझे घर रुपया भेजना होगा, साथ ही अपना खर्च भी चलाना होगा।"

महेन्द्र ने निरीह दृष्टि से सुरबाला की ओर देखा और हंस दिया। सुरबाला ने इरानी से कहा, "तुम बेवकूफ की तरह बातचीत क्यों करती हो, इरानी ? इससे तो बेहतर यही है कि अपना सारा बोझ उठाने कहो।" वह महेन्द्र की ओर देखकर हँस दी।

"कहिये, मेरा बोझ उठाइयेगा ?" इरानी ने चूल्हा के निकट से गरदन तिरछी कर महेन्द्र की ओर देखा। और दूसरे ही क्षण कृत्रिम भय के साथ कहा, "यह बात मत कहो सुरोदी, उसके बाद तो तुम गरदन पर हाथ रखकर मुझे निकाल बाहर करोगी !"

सुरबाला बोली, "मैं निकाल बाहर करने वाली कौन होती हूँ ? मैं तो कह रही हूँ कि कोशिश करके देखो, शायद इस आदमी में कुछ बदलाव आ जाये। मैं तो वैसा कर नहीं सकी।"

महेन्द्र बिना कुछ बोले अपनी पूर्ववत् निरीह मुसकान चेहरे पर लिए, रसोईघर के दरवाजे के निकट से हट गया। परन्तु प्रसन्नता का स्वर उसके प्राणों में गूँजता रहा। उसके बाद जब सुरबाला ने खाने को पुकारा तो रसोईघर के अन्दर जाकर महेन्द्र ठिठककर खड़ा हो

गया। देखा, उसके खाने के स्थान पर फर्श पर पीढ़ा बिछा नहीं है और न ही भोजन की थाली है। कोठरी के एक कोने में सुरबाला मुँह में आँचल दबाए खड़ी है। मेज के सामने इरानी है और वहाँ एक थाली में भात तथा कई कटोरे में व्यंजन रखे हुए हैं। इरानी के होंठों के कोने में दोहरी मुसकराहट है और उसकी निगाह मेज की ओर है।

महेन्द्र ने सुरबाला की ओर देखते हुए विस्मय भरे स्वर में कहा, "मुझे अपने स्थान पर खाना नहीं दिया ?"

"नहीं, आज मैंने आपको यहाँ खाना दिया है।" इरानी बगैर मुसकराए महेन्द्र की आँखों की ओर देखती हुई बोली।

महेन्द्र भी इरानी की ओर देख रहा था और उसके चेहरे पर मुसकराहट और बेचैनी दोनों उभर आई थी। वह बोला, "वहाँ क्यों, मुझे फर्श पर ही दे। दो बिना अभ्यास के चन्दन लगाने से सिर दुखने लगता है।"

"कुछ नहीं दुखेगा, आप आकर बैठिये तो सही।" इरानी के स्वर में आदेश का पुट है, "हम लोग आपकी सब बात मानेंगे और आप हमारी कोई बात नहीं मानिएगा ? ऐसा नहीं हो सकता, महेनदा। आज से आपको मेज पर बैठकर ही खाना होगा।"

महेन्द्र ने सुरबाला की ओर देखा और समझ गया कि वह मुँह में आँचल दबाए तमाशा देख रही है। महेन्द्र ने कहा, "खाना तो अपनी पसन्द की चीज है, वरना खाना खाकर सन्तोष ही नहीं होता।"

"पहले आप आकर बैठ जाएँ, फिर मैं देखती हूँ कि सन्तोष होता है या नहीं।" इरानी के स्वर में थोड़ा-बहुत जिद का भाव है लेकिन आँखें महेन्द्र की आँखों पर टिकी हैं।

महेन्द्र ने आगे और पीछे की ओर दृष्टि घुमाकर पुनः सुरबाला की ओर देखा, उसके बाद होले-होले मेज की ओर कदम बढ़ाते हुए बोला, "लगता है, इरानी की साजिश में तुम्हारा भी हाथ है।"

सुरबाला बोली, "बिलकुल नहीं। सारी साजिश इरानी की

"पागलपन है !" महेन्द्र ने कहा, लेकिन वह मेज पर रखे भोजन के सामने कुर्सी पर बैठ गया। एक बार उसने इरानी की ओर ताका।

इरानी उसी की ओर ताक रही थी। बोली, "लीजिए, शुरू कीजिए।"

महेन्द्र ने हाथ लगाया। बाएं हाथ को लटकाए रखने में असुविधा हो रही थी। इरानी ने एक बार सुरबाला को आँखों से आँख मिलाकर, महेन्द्र के बाएं हाथ को पकड़कर मेज पर रख दिया और कहा, "लीजिए हाथ यहाँ रखिए, आराम से बैठकर खाना खाइए।"

महेन्द्र ने हँसकर पुनः एक बार सुरबाला की ओर देखा, उसके बाद खाना शुरू किया। नीतू इस बीच एक बार रसोईघर के दरवाजे से झांक गया और इस तरह चिहुँक उठा जैसे भूत पर उसकी नजर पड़ी हो। और दूसरे ही क्षण वह आँखों से ओझल हो गया। सुरबाला बोली, "खैर इरानी के द्वारा कुछ तो हुआ।"

"इसमें होने-हवाने की कौन-सी बात है ?" इरानी सुरबाला की ओर ताकती हुई बोली, "बल्कि यही कहा जा सकता है कि इसके पहले का काम अजीब तरह का था ! इतना बड़ा भोजन-कक्ष है, टेबुल-चेयर सब कुछ हैं। और-और लोग वहाँ खाना खाएँगे और घर के मालिक फर्श पर बैठकर ?"

सुरबाला के चेहरे पर क्या एक छाया उतर आई ? वह बोली, "वैसा तो गृह-स्वामी की मर्जी से ही हुआ था।"

"सो तो है ही।" इरानी बोली, "घर की मालिक की मर्जी हमेशा चल नहीं सकती। घर वालों की मर्जी का भी थोड़ा-बहुत खयाल रखना पड़ता है।"

महेन्द्र ने सिर उठाकर इरानी की ओर देखा, उसके बाद सुरबाला की ओर। लेकिन बगैर कुछ बोले खाना खाने में मशगूल हो गया। इस बीच मती और सतु ने भी दरवाजे से झांककर इस अविश्वसनीय

घटना को देख लिया था और सुरबाला तथा इरानी की आँखों से आँखें मिलाकर मुसकराते हुए वहाँ से चले गये थे।

महेन्द्र रविवार को दोपहर के समय सोता नहीं है। जो आदमी नौकरी करता है और जिसके इतने कारोबार फैले हैं, उसका एक काम आश्चर्यजनक है और वह यह कि रविवार के अलावा सप्ताह के किसी दूसरे दिन वह अखबार नहीं पढ़ता है। महेन्द्र अपने बिस्तर पर बैठ अखबार पढ़ रहा था। सुरबाला खाना खाकर आई और बोली, "आज क्या करोगे? निकलोगे या घर पर ही रहोगे?"

महेन्द्र ने सिर उठाकर सुरबाला की ओर देखा। रविवार की दोपहर वह खाना खाकर सुरबाला के साथ माणिकतल्ला सी० आई० टी० रोड के फ्लैट में जाता है। सारा दिन गुजार कर शाम को वापस आ जाता है। महेन्द्र के लिए इसका एक जरूरी कारण है। वह है उस एक कमरे के फ्लैट में हर रोज एक बार जाना। क्योंकि उसका सारा नकद काला पैसा वहीं जमा है। उसने कहा, "वहाँ तो एकबार जाना ही है। क्यों, तुम नहीं चलोगी?"

"चलूँगी क्यों नहीं?" सुरबाला बोली, "लड़कों को तो मालूम ही है कि हर रविवार खाना खाने के बाद मैं तुम्हारे साथ बाहर निकलती हूँ। मगर इरानी से क्या कहूँगी? वह तो जानना चाहेगी, हम लोग कहाँ जा रहे हैं।"

महेन्द्र कुछ लहमों तक सोचता रहा, उसके बाद बोला, "इरानी चाहे तो हम लोगों के साथ चल सकती है।"

सुरबाला के चेहरे पर आश्चर्य खेल गया, "तुम्हें असुविधा नहीं होगी?"

"असुविधा क्या होगी?" महेन्द्र ने निरीह स्वर में कहा, "उसके सामने आलमारी खोलकर मैं कुछ देखने नहीं जा रहा हूँ। देखने की जरूरत होगी तो मैं उसका इंतजाम कर लूँगा।"

सुरबाला को महेन्द्र से ऐसी आशा नहीं थी। एक मात्र नीतू

वह एक दो बार ले गया है। इसके अलावा वह किसी को भी नहीं ले जाना चाहता है। नीतू को बेशक वहाँ अच्छा नहीं लगा था, एकमात्र ऊँचो-ऊँची इमारतें, वी० आई० पी० रोड, सॉल्ट लेक और आप-पास के सरकारी फ्लैटों को छोड़कर। सुरबाला बोली, "फिर इरानी से जाकर कह आती हूँ।" वह कमरे से बाहर चली गई।

महेन्द्र के सोच की धारा बेशक दूसरी ओर ही प्रवाहित हो रही है। इरानी को वह घर में छोड़कर जाना नहीं चाहता। छोड़कर जाने का मतलब है मती-सतु के साथ हँसी-मजाक करना और हुड़दंग मचाना। यह भी हो सकता है कि उन लोगों के साथ मोटरसाइकिल के पीछे बैठ कहीं निकल जाए। हालाँकि कल से ही इरानी अपनी नौकरी ज्वाइन करने जा रही है और उसे अकेले ही जाना है। दमदम से क्लाइव रोड तक जाने की समस्या इस बीच महेन्द्र के मन को कुरेद रही है। अपने साथ ले जाए, ऐसा संभव नहीं है। इरानी के लिए उस तरह ड्राइ-वर की बगल भी बैठना में असम्भव है। इसके अलावा ड्राइवर और ·ड११८१ ही क्या सोचेंगे? मुसाफिर यों भी तरह-तरह के व्यंग्य कसते हैं। इरानी जैसी लड़की के साथ उस तरह ड्राइवर की बगल में बैठते देखकर और भी अधिक आवाज कसने लगेंगे। इरानी के लिए यह सब बर्दाश्त न होना ही स्वाभाविक है। "मुझे और सुरादी को लेकर कहाँ जाइयेगा, महेनदा?" इरानी ने कमरे के अंदर प्रवेश किया। उसकी आँखों में कौतूहल है।

महेन्द्र ने मुस्कराकर कहा, "चलो, एक जगह से घूम आएँ।"

"सिनेमा-थियेटर जा रहे हैं?" इरानी की आँखों में प्रत्याशा की छाप है।

महेन्द्र सिर हिलाकर कहा, "क्यों, सिनेमा-थियेटर के अलावा कोई दूसरी जगह नहीं जाया जा सकता? "चलो, एक नए मकान से घूम-फिर आएँ।"

इरानी मती-सतु से पहले ही सुन चुकी थी कि दोपहर के भोजन के

बाद महेन्द्र और सुरबाला बाहर निकल पड़ेंगे। उसने सोचा था, वह मती रातु के साथ कहीं घूमने निकल जायेगी। महेन्द्र की बात सुनकर इरानी को लगा, इस घर के इतिहास में आज एक नई घटना घटी है—महेन्द्र ने मेज पर बैठकर खाना खाया है। मती-रातु के साथ घूमने के निकलने के बजाय महेन्द्र की बात मानना अच्छा ही रहेगा। क्योंकि इस पुरुष के चरित्र का भेद जानने के लिये उसके रमणी-चित्त ने एक प्रकार का संकल्प लिया है। गरदन तिरछी कर आँखों को नचाते हुए बोली, "आप जो कहियेगा, वही करूँगी। आप कह रहे हैं तो चलूँगा।"

महेन्द्र ने कहा, "फिर तुम जाकर तैयार हो जाओ, सुरो से भी तैयार होने को कहो।" वह अखबार रखकर बिस्तर से नीचे उतरा।

रविवार को महेन्द्र अपनी बस से माणिकतल्ला सी० आई० टी० फ्लैट नहीं जाता है। क्योंकि इस दिन प्रत्येक रूट में उसकी एक-एक बस ही चलती है, बाकी छुट्टी पर रहती हैं। हर रविवार को इसी तरह की यथाक्रम व्यवस्था है। सुरबाला के साथ वह बस से माणिकतल्ला मोड़ जाता है। वहाँ से बस बदलकर सी० आई० टी० रोड। दमदम होकर भी दूसरी बस से जाया जा सकता है। मगर महेन्द्र को यही रूट सीधा लगता है।

आज इरानी और सुरबाला के साथ सड़क पर निकलते ही महेन्द्र को अपनी जिन्दगी में पहली बार महसूस हुआ कि छुट्टी के दिन भी बसों में बेहद भीड़ रहती है। हालांकि बस में टँगी हुई भीड़ देखते ही उसका मन प्रसन्न हो जाता है। उसने खास तौर से यह भी महसूस हुआ कि यातायात वाहनों के जितने मुसाफिर हैं वे सब इरानी की ओर स्वच्छ दृष्टि से ताक रहे हैं। शायद यही स्वाभाविक हो। इरानी के सौंदर्य के साथ ही उसके पूरे जिस्म में लाल बेल-बूटेदार रेशमी साड़ी ने भी कस-मसाते यौवन की पताका फहरा दी है। शायद भौंह और आँखों पर हलके हाथों से काली पेंसिल की कूची फेरी गई है। उसके होंठ भी भी लाल-लाल हैं। उस पर भी इसका प्रलेप चढ़ा है। देह पर कोई गन्ध

नहीं है, सिवाय कान में झलमलाते दो नीले पत्थरों के। दाहिने हाथ की कलाई में घड़ी है और लाल रंग के फोम का एक बैग। उसके जिस्म से एक मीठी खुशबू निकल रही है जो महेन्द्र के नथुने में समाकर एक सरूर पैदा कर रही है।

इरानी की तुलना में सुरबाला नितान्त एक अठपहरू साड़ी पहनेवाली प्रौढ़ा जैसी लगती है। हालांकि उसकी नीले चौड़े किनारे की धानी साड़ी कोई कम कीमती नहीं है। कान और नाक में हीरे के पासे और कील हैं। हाथों में निखालिस सोने की छः-छः चूड़ियाँ, सोने से मढ़ी शांख की चूड़ी और लोहा। लेकिन साड़ी वह अठपहरू गृहस्थ वधू की तरह पहने है। पाँवों के सैण्डल कोई खास आकर्षक नहीं हैं। बाहर निकलने के समय गले का हार खोल कर रख लेती है क्योंकि बटमारी होने का डर बना रहता है।

"ओ महेनदा, धूप और भीड़ देखकर मेरा सिर चकरा रहा है।" ...नी महेन्द्र के शरीर से सटती हुई बोली और दूसरे हाथ से उसने सुरबाला का हाथ थाम लिया।

महेन्द्र ने हँसकर कहा, "कलकत्ते में नौकरी करोगी और धूप-भीड़ देखकर डरोगी तो काम कैसे चलेगा ?"

"सचमुच, कलकत्ता एक झमेला ही है।" इरानी बोली, "सिलीगुड़ी में रिक्शे पर बैठ मजे से जाती थी। लौटने के वक्त पैदल ही आती थी। घर से हम लोगों का बैङ्क आधा मील दूर है।"

महेन्द्र बोला, "लेकिन कलकत्ते में तुम्हारे बैङ्क के इर्द-गिर्द आधे मील तक सिर्फ दफ्तरों की इमारतें हैं, आदमी के रहने की जगह नहीं है।"

"फिर भी आप जो कहें, महेनदा, मकान आपने बहुत दूर बनवाया है।" इरानी ने होंठ लटकाकर शिकायत भरे लहजे में कहा, "और ऐसा लगता है, इस ओर की बसों में भीड़ कुछ ज्यादा ही रहती है।"

महेन्द्र बोला, "यह गलत धारणा है। कलकत्ता और उसके आस-पास जहाँ कहीं भी जाओ, बस में भीड़ मिलेगी ही। तब हाँ, श्याम-बाजार का पुल पार करने के बाद ट्राम मिलती है।"

महेन्द्र की बात खत्म होने के पहले ही एक चलती हुई बस में इरानी की हमउम्र एक लड़की रॉड पकड़कर झूलती हुई दीख पड़ी। उसका आँचल सड़क को बुहार रहा था यानी बहुत कुछ खुल-सा गया था। एक मर्द उसे कसकर पकड़े था। इरानी बोली, "बाप रे! इसी तरह जाना होगा?"

"महेन्द्र बोला, "होगा नहीं? लगता है, किसी सिनेमा के मेटिनी शो का टिकट कटाए हुई है।"

"नहीं बाबा, मैं उस तरह नहीं जा पाऊँगी।" इरानी बोली, "आप सुरादी के साथ हर रविवार को कैसे जाते हैं?"

महेन्द्र ने एक बार सुरबाला की ओर देखा, फिर हँसकर बोला, "इसी तरह।"

ऐसे में एक खाली टैक्सी इरानी वगैरह के सामने आकर रुकी और हॉर्न बजाया। इरानी ने तत्काल कहा, "चलिए महेनदा, टैक्सी से ही चलें।"

महेन्द्र ने घबराकर कहा, "टैक्सी से चलेंगे?"

इरानी अपने दोनों हाथों से महेन्द्र और सुरबाला को थामे टैक्सी की ओर बढ़ गई, "आइए। ऐसा हालत देख चुकी हूँ कि उस तरह जाया नहीं जा सकता।"

टैक्सी-ड्राइवर के बगल वाले आदमी ने झट पीछे के दरवाजे को खोल दिया। महेन्द्र ने झिझकते हुए विमूढ़ दृष्टि से सुरबाला की ओर देखा। सुरबाला भी विमूढ़-सी हँसने लगी। महेन्द्र बोला, "ठहरो, जरा और देख लूँ।"

"नहीं-नहीं, अब कुछ नहीं देखना है।" इरानी ने सुरबा[illegible] टैक्सी की ओर ठेल दिया। "इस तरह इतने लोगों [illegible]

ने खड़े होने में भी परेशानी मालूम होती है।" यह कहकर सुरबाला
बाद स्वयं अन्दर जाकर महेन्द्र का हाथ खींचने लगी।
इरानी की ओर इतने लोगों का फटी-फटी निगाहों से ताकना महेन्द्र
अच्छा नहीं लग रहा था। फिर भी वह झिझकते हुए टैक्सी के
न्दर चला गया।

"किराया मैं ही दूँगी। अभी कहाँ जाना है, यही बताइए।" इरानी
ने कहा।

महेन्द्र विवशता की हंसी हंसते हुए बोला, "तुम किराया क्यों
दोगी? बैठ ही गए हैं तो यह काम मेरा है।" ड्राइवर की ओर देखते
हुए बोला, "माणिकतल्ला, सी० आई० टी० रोड।"

ड्राइवर के साथी ने मीटर गिरा दिया। टैक्सी आगे बढ़ने लगी।
सुरबाला और महेन्द्र के बीच इरानी है। वह क्या जान सुनकर महेन्द्र
के शरीर से सटकर बैठी है? उसके बाएँ हाथ का बैग एक तरह से
महेन्द्र की गोद में ही है। बोली, "बाप रे, अब शान्ति मिली। सुरादी,
तुम इस भीड़ में कैसे जाती थीं?"

सुरबाला ने मुसकराकर कहा, "मैं अभ्यस्त हो गई हूँ।"

"मेरे भाग्य में कल से क्या लिखा है, कौनजाने! "इरानी ने कहा,
"इस तरह चमगादड़ की तरह लटककर कैसे जाऊँगी, समझ में नहीं
आ रहा है।"

सुरबाला बोली, "तुमने तो कहा है, तीन महीने के अन्दर ऑफि[illegible]
मुहल्ले के आस-पास कहीं रहने का इंतजाम कर लोगी। फिर चिन्[illegible]
की कौन-सी बात है?"

महेन्द्र चिन्ता में पड़ गया। उसका पूरा शरीर इरानी के देह[illegible]
छुअन की उष्णता से पसीना-पसीना हो रहा है। टैक्सी में न बैठत[illegible]
इतने सघन स्पर्श का अनुभव न होता। इरानी का बायाँ हाथ, जि[illegible]
नाखूनों पर रंग का प्रलेप है, उसकी गोद की बगल में दबा हुआ[illegible]
बीच-बीच में गाड़ी का झटका लगता है तो उसकी छाती मह[illegible]

दाहिने हाथ से छू-छू जाती है और महेन्द्र की इन्द्रियाँ थरथराने लगती हैं। इरानी का ऑफिस आने-जाने और चले जाने की बात उसके मन को विचलित कर रही है। वह बिना कुछ सोचे ही बोल उठा, "कोई न कोई इन्तजाम हो जाएगा। कोई काम अटका नहीं रह जाएगा।"

"आप लोग तो कहकर छुटकारा पा लीजिएगा।" इरानी बायीं ओर मुड़कर बोली और फिर सीधी होकर बैठ गई, "अपनी समस्या के बारे में मुझे स्वयं ही सोचना होगा।"

महेन्द्र बिना कुछ बोले गरदन को झटकारते हुए हँसा। सुरबाला बाहर की ओर ताक रही थी। इरानी ने एक बार तिरछी निगाहों से महेन्द्र की ओर देखा और अपना बायाँ हाथ सीट के पीछे रख दिया। महेन्द्र उसके शरीर के तीव्र स्पर्श से अभिभूत, नशे में धुत आदमी जैसा बैठा रहा। वह रास्ते का कुछ भी नहीं देख रहा है। नशा उसे स्थिर नहीं रहने दे रहा है। अपने में जज्ब कर रहा है और बेपरवाह बना रहा है। सुरबाला के सामने कुछ करना संभव नहीं है। सुरबाला न भी होती तो महेन्द्र बेपरवाह होकर कुछ नहीं कर पाता।

प्रायः पच्चीस मिनट के बाद महेन्द्र ने एक बहुमंजिली इमारत के सामने टैक्सी रुकवा दी। मोटर का कागज देख, अन्दर की बुक पॉकेट से रुपया निकालकर दिया और दरवाजा खोलकर नीचे उतर गया। उसके उतरने के बाद इरानी और सुरबाला भी नीचे उतरे। सड़क की पटरी पारकर, गाड़ी-पार्किङ्ग की बायीं तरफ लिफ्ट की ओर बढ़ते ही महेन्द्र ने देखा, दरबान हैरतभरी निगाहों से इरानी की ओर देख रहा है। सुरबाला को वह रविवार को इस वक्त आते देखता है और कुछ अनुमान कर लेता है। आज इरानी जैसी आधुनिका रूपसी युवती को देखकर बेचारे का दिमाग काम नहीं कर रहा है। लिफ्ट के निम्नगामी तीर की नोक की रोशनी ने संकेत किया।

इरानी ने फुसफुसाते हुए पूछा, "किसके घर जा रही हो, सुरादी?"

"देखो, तुम्हारे बहनोई कहाँ ले चलते हैं।" सुरबाला के चेहरे पर रहस्य की मुसकराहट खेल गई।

लिफ्ट तीन महिला और एक पुरुष को लिए नीचे उतरा। उन लोगों के निकलने के बाद महेन्द्र ने लिफ्ट के दरवाजे को कसकर पकड़ते हुए कहा, "तुम लोग भीतर चली जाओ।"

सुरबाला के पीछे-पीछे इरानी आई। उसके बाद महेन्द्र ने दरवाजा बन्द कर दिया और आठ नंबर बटन दबाया। लिफ्ट ऊपर उठने लगा। इरानी अपनी उत्सुकता दबा कर रख नहीं सकी। पूछा, "महेनदा, आखिरकार आप मुझे अनपहचाने बड़े आदमी के घर ले आए?"

"पहचाने भी तो हो सकते हैं।" महेन्द्र ने हँसकर कहा।

इरानी आश्चर्य चकित और विमूढ़ है। मती-सतु ने उसे इस तरह के किसी मकान के बारे में नहीं बताया था। लिफ़्ट आठ नंबर फ्लोर में आकर रुका। महेन्द्र ने दरवाज खोला। पहले सुरबाला और इरानी बाहर आईं। महेन्द्र ने बाहर निकल दोनों दरवाजे बन्द कर दिये। इरानी बोली, "मैंने ठीक ही कहा था महेनदा, आप चाहें तो स्मार्ट हो सकते हैं। लिफ्ट मजे में चलाते ले आए।"

"इस तरह की इमारतों में बच्चे भी लिफ्ट से चढ़ते-उतरते हैं। हालाँकि बच्चों का अकेले लिफ्ट में चढ़ने का नियम नहीं है।" महेन्द्र ने यह कहकर जेब में हाथ डाला और तीन-चार चाबियों वाला एक रिंग बाहर निकाला।

बायीं ओर एक बंद दरवाजा है। सामने सीढ़ी के पास ही एक और दरवाजा। महेन्द्र ने उसी घर के इएल लॉक में चाबी डालकर दरवाजा खोला। दरवाजे को ठेलकर पुकारा, "चली आओ।"

इरानी जैसी असाधारण बुद्धि की चालाक चुस्त लड़की को भी बात समझ में नहीं आ रही थी। वह सुरबाला के पीछे-पीछे कमरे के अन्दर गई। महेद्र ने शुरू में पंखे का स्विच दबाया, उसके बाद वहाँ से हट

उत्तर की तरफ की खिड़की खोलते ... मेरा यही वक्त
दरवाजा खोल दो।"

दोनों खिड़कियाँ खोलते ही चार ... रहे या
प्रकाश से भर गया। बालकॉनी क
डिजाइन का मोजाइक का फर्श झिल
एक कमरे के फ्लैट में असुविधा या
उधर बाथरूम और मिनी किचेन की
तब हाँ, सामने ही सड़क है। दूर बी० पी० आई० रोड का बहुत बड़ा हिस्सा दीख पड़ता है।"

"सो तो समझी।" इरानी ने विस्मय भरे स्वर में कहा, "लेकिन यह घर है किसका ? कौन रहता है ? एक ही सिंगल खाट का बिस्तर है, और एक ही आलमारी है।"

महेन्द्र सुरबाला की ओर देखकर मुसकराया, उसके बाद इरानी से कहा, "यह सब सोचकर क्या होगा कि किसका मकान है, कौन रहता है ? मान लो, अभी हम लोग हैं और यह मकान हमीं लोगों का है। सप्ताह में एक दिन एक वक्त के लिए आते हैं। ज्यादा फर्नीचर रखकर क्या होगा ?"

इरानी ने हैरतभरी निगाहों से सुरबाला की ओर देखा, उसके बाद महेन्द्र की ओर निगाह दौड़ाते ही उसकी आँखों का परदा जैसे सरक गया। बोली, "इसका मतलब यह घर आपका ही है ?" चाबी से दरवाजा खोला और उस पर भी तुम समझ नहीं सकीं ?" सुरबाला ने हँसते हुए कहा।

इरानी के चेहरे पर जैसे हजार पावर का बल्ब जल उठा। बोली, "अहा, कितना सुन्दर है!" यह कहकर तेज कदमों से बालकॉनी की ओर चली गई और मुग्ध नयनों से दूर, दोपहर के बी० आई० पी० रोड और सेल्ट लेक देखने लगी। उसके बाद कहा,
है!"

"देखो, तुम्हारे ...ानी के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। इरानी ने
...हस्य की मुस... मुड़कर कहा, "यह टॉप फ्लोर है, यानी नवमीमाला।
लिफ्ट ! इसे क्या किराये पर लिया है?"
...लोगों, "नहीं, खरीदा है।" महेन्द्र ने कहा।
"क्यों, दमदम में इतना बड़ा मकान रहने के बावजूद इसे क्यों
खरीदा?" इरानी के कौतूहल का कोई अन्त नहीं है।

महेन्द्र बोला, "हर रोज तो नौकरी और उस मकान का सिलसिला
बना ही रहता है। रविवार को एक वक्त इस घर में सोकर या बैठकर
बिता जाता हूँ। सुरो भी आती है। सप्ताह में एक दिन वह एक वक्त
गाय नहीं दुहती है, बछड़ों के पीने के लिए छोड़ देती है।"

इरानी आश्चर्य में आकर एक बार कमरे के अन्दर झांक गई।
देखा, सुरबाला नहीं है। पूछा, "सुरोदी कहाँ गई?"

"शायद बाथरूम।"

इरानी महेन्द्र से सटकर खड़ी हो गई और पलकों को नचाती धीमे
स्वर में बोली, "दरअसल बीबी के साथ यहाँ एकान्त में मिलना होता
है। है न?"

महेन्द्र के गले और चिबुक को इरानी की साँसें छू रही थीं और
उसे महसूस हो रहा था, इरानी की साँसों में भी जैसे एक सुगंध है
सीने के एक किनारे का आँचल सरका है, दोनों उन्नत वक्षों के बी...
की गहराई जैसे वह प्रत्यक्ष देख रहा है। उसके शोणित की गति ती...
हो गई। देखा, इरानी के होंठों के बीच उसके सफेद-उजले दांत झिल...
मिला रहे हैं।

"क्या हुआ, मेरी बात का उत्तर दीजिए।" इरानी ने महेन्द्र...
सीने को अपनी उँगली से कोंचा।

स्पर्श से महेन्द्र जैसे सचेतन हो उठा। एक बार पीछे की ओर त...
कर झिझकते हुए कहा, "तुम क्या बोल रही हो! मेरे और सुरा के...
...? हम दोनों चुपचाप इस बालकॉनी में या तो बैठे...

हैं या फिर लेटे। सप्ताह भर में आराम के तौर पर मेरा यही वक्त हुआ करता है।"

"वह सब रहने दीजिए।" इरानी ने कहा, "सुरादी के दिन रहे या नहीं, पता नहीं; आपके दिन तो हैं ही।"

महेन्द्र की आवाज लड़खड़ाने लगी, "मैं—मैं तो—कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ।"

"समझा दूँ।" इरानी अपना शरीर महेन्द्र के शरीर से टिकाकर खड़ी हो गई। महेन्द्र की साँस जैसे रुक गई। सुरबाला का कंठ स्वर सुनाई पड़ा, "साली और बहनोई में इतनी क्या चर्चा चल रही है?"

महेन्द्र जरा हटकर खड़ा हो गया। इरानी ने कमरे के अन्दर जाकर कहा, "तुम लोगों के गोपनीय करिश्मे के बारे में कह रही थी।"

"वह क्या?" सुरबाला ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

इरानी बोली, "और क्या? यह घर असल में तुम्हारा और महेनदा का वृन्दावन है, युगल मिलन का स्थान।"

"धत्त मुँहजली!" सुरबाला ने हँसकर उसे ढकेल दिया और कहा, "उसने क्या यही कहा?"

इरानी ने भी हँसते हुए कहा, "वे स्वीकार क्यों करने लगे?"

"हाँ, उम्र का तिहाई हिस्सा बीत गया, अब चौथा है। अब इस उम्र में वृन्दावन!" सुरबाला पंखे के नीचे मोजाइक के फर्श पर बैठ गई।

महेन्द्र ने हलका सा ठहाका लगाया, उसके बाद पलंग पर जाकर बैठ गया। इरानी फोम के बैग को पलंग पर रखती हुई बोली, "महेन-दा, मुझे आप यही मकान दे दें। मेरे अकेले के लिए बहुत अच्छा रहेगा। आप और सुरादी भी बीच-बीच में आ सकेंगे।"

महेन्द्र बोला, "इसमें तुम्हें कौन-सी सुविधा होगी? यहाँ से आफिस जाने में भी तुम परेशान हो जाओगी। इसके अलावा होस्टल

"देखो, तुम्हारे ...ॉनी के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। इरानी ने रहस्य की मुस... मुड़कर कहा, "यह टॉप फ्लोर है, यानी नवमीमाला।

लिफ्ट ... ! इसे क्या किराये पर लिया है?"

लोगों ... "नहीं, खरीदा है।" महेन्द्र ने कहा।

हा... "क्यों, दमदम में इतना बड़ा मकान रहने के बावजूद इसे क्यों खरीदा?" इरानी के कौतूहल का कोई अन्त नहीं है।

महेन्द्र बोला, "हर रोज तो नौकरी और उस मकान का सिलसिला बना ही रहता है। रविवार को एक वक्त इस घर में सोकर या बैठकर बिता जाता हूँ। सुरो भी आती है। सप्ताह में एक दिन वह एक वक्त गाय नहीं दुहती है, बछड़ों के पीने के लिए छोड़ देती है।"

इरानी आश्चर्य में आकर एक बार कमरे के अन्दर झांक गई। देखा, सुरबाला नहीं है। पूछा, "सुरोदी कहाँ गई?"

"शायद बाथरूम।"

इरानी महेन्द्र से सटकर खड़ी हो गई और पलकों को नचाती धीमे स्वर में बोली, "दरअसल बीबी के साथ यहाँ एकान्त में मिलना होता है। है न?"

महेन्द्र के गले और चिबुक को इरानी की साँसें छू रही थीं और उसे महसूस हो रहा था, इरानी की साँसों में भी जैसे एक सुगंध है। सीने के एक किनारे का आँचल सरका है, दोनों उन्नत वक्षों के बीच की गहराई जैसे वह प्रत्यक्ष देख रहा है। उसके शोणित की गति तीव्र हो गई। देखा, इरानी के होंठों के बीच उसके सफेद-उजले दांत झिल-मिला रहे हैं।

"क्या हुआ, मेरी बात का उत्तर दीजिए।" इरानी ने महेन्द्र के सीने को अपनी उँगली से कोंचा।

स्पर्श से महेन्द्र जैसे सचेतन हो उठा। एक बार पीछे की ओर ताक-कर झिझकते हुए कहा, "तुम क्या बोल रही हो! मेरे और सुरा के क्या अब वे दिन रहे? हम दोनों चुपचाप इस बालकॉनी में या तो बैठे रहते

हैं या फिर लेटे। सप्ताह भर में आराम के तौर पर मेरा यही वक्त हुआ करता है।"

"वह सब रहने दीजिए।" इरानी ने कहा, "सुरादी के दिन रहे या नहीं, पता नहीं; आपके दिन तो हैं ही।"

महेन्द्र की आवाज लड़खड़ाने लगी, "मैं—मैं तो—कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ।"

"समझा दूँ।" इरानी अपना शरीर महेन्द्र के शरीर से टिकाकर खड़ी हो गई। महेन्द्र की साँस जैसे रुक गई। सुरबाला का कंठ स्वर सुनाई पड़ा, "साली और बहनोई में इतनी क्या चर्चा चल रही है ?"

महेन्द्र जरा हटकर खड़ा हो गया। इरानी ने कमरे के अन्दर जाकर कहा, "तुम लोगों के गोपनीय करिश्मे के बारे में कह रही थी।"

"वह क्या ?" सुरबाला ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

इरानी बोली, "और क्या ? यह घर असल में तुम्हारा और महेनदा का वृन्दावन है, युगल मिलन का स्थान।"

"धत्त मुँहजली !" सुरबाला ने हँसकर उसे ढकेल दिया और कहा, "उसने क्या यही कहा ?"

इरानी ने भी हँसते हुए कहा, "वे स्वीकार क्यों करने लगे ?"

"हाँ, उम्र का तिहाई हिस्सा बीत गया, अब चौथा है। अब इस उम्र में वृन्दावन !" सुरबाला पंखे के नीचे मोजाइक के फर्श पर बैठ गई।

महेन्द्र ने हलका सा ठहाका लगाया, उसके बाद पलंग पर जाकर बैठ गया। इरानी फोम के बैग को पलंग पर रखती हुई बोली, "महेन-दा, मुझे आप यही मकान दे दें। मेरे अकेले के लिए बहुत अच्छा रहेगा। आप और सुरादी भी बीच-बीच में आ सकेंगे।"

महेन्द्र बोला, "इसमें तुम्हें कौन-सी सुविधा होगी ? वहाँ से कॉलेज जाने में भी तुम परेशान हो जाओगी। इसके अलावा हॉस्टल में बहुत

एक अलग बात है। यहां अकेली कैसे रहोगी ?"

"क्यों ? अगर मैं अकेले डेरा लेकर रहूँ तो फिर ऐसे ही रहना पड़ेगा।" इरानी ने कहा, "सुबह शाम के लिए एक दाई रख लूंगी। तब हां, यह कहकर ही क्या होगा ? मैं इस तरह के फ्लैट का किराया कहां से दूंगी ?"

महेन्द्र सुरबाला की ओर नजर दौड़ाते हुए निरीह हँसी हंस दिया। बोला, "घबराने की कौन-सी बात है ? तुम्हारा कोई न कोई इंतजाम हो जाएगा। मैं खुद भी तुम्हारे लिए कोशिश करूँगा।"

"खैर, अभी यह सब बात रहे।" इरानी बालकॉनी की ओर चली गई, "मैंने इतनी ऊँचाई से कभी कलकत्ते को नहीं देखा है, इसलिए देख लूं।"

महेन्द्र ने स्टील की आलमारी की ओर नजर दौड़ाई। एक बार बालकॉनी की ओर ताका। इरानी चारों तरफ का दृश्य देखने में मशगूल हो गई है। वह आहिस्ता-आहिस्ता आलमारी के पास गया और जेब से चाबी निकाली। सुरबाला फर्श पर लेट गई।

मनुष्य प्राकृतिक प्रकोप की ध्वंसलीला को अचानक धरती पर उतरते देखकर ज्ञान शून्य हो जाता है और हाहाकार मचाते हुए मृत्यु का वरण करता है। लेकिन पृथिवी के परिमंडल में, अन्तरिक्ष या पाताल के गर्भ में, अनिवार्य ध्वंसलीला की तैयारियाँ पहले से ही चलती रहती हैं। मनुष्य को यदि समस्त प्राकृतिक ध्वंसलीला का अनुमान पहले से ही चल जाता तो हो सकता है वह आत्मरक्षा का उपाय खोज लेता। लेकिन मनुष्य अपनी लीला में मग्न रहता है और प्रकृति अपनी लीला में। मनुष्य के लिए प्राकृतिक ध्वंसलीला का पता पहले ही चल जाए, ऐसा संभव नहीं है। यहाँ तक कि विज्ञान के दर्प से मदमाती सभ्यता भी प्राकृतिक प्रकोप की ध्वंसलीला रोक नहीं सकती। मनुष्य का अनुभव इस बात का संकेत करता है।

महेन्द्र का ग्रह भी प्रकृति की ध्वंसलीला की जो एक तैयारी कर

रहा है, अपने अनुभवी जीवन में उसे न तो इसका अहसास हुआ और न ही वह इसका अनुमान कर सका। किसी को हानि उठाते देखकर और-और लोग उसकी बेवकूफी पर टिप्पणी करते हैं। लेकिन मनुष्य कहाँ, कब और किस परिस्थिति में अपनी लाचारी से अनजाने ही ध्वंस की ओर कदम बढ़ाता है, इस पर कोई नहीं सोचता। यह मनुष्य के जीवन के एक गहरे तात्पर्य का विषय है।

महेन्द्र ने सचिवालय के एक साधारण किरानी होकर भी इतनी विषय-संपत्ति अर्जित की है, इतने कारोबार खड़े किए हैं कि सब कुछ अविश्वसनीय जैसा लगता है। संपत्ति क्या चीज है, इसे वह जानता है। भोग के प्रति उसमें कोई आसक्ति हो, इस तथ्य से वह स्वयं भी अपरिचित था। वह भोगी नही था। जवानी में सुरबाला उसके जीवन में विवाहिता वधू के रूप में आई थी। विवाह के पहले उसे अपनी आँखों से देखा तक नही था। पिता की पसन्द पर ही शादी की थी और स्वयं पसन्द करे, यह बात उसके खयाल में भी नहीं आया था। क्योंकि विवाह को उसने जीवन के दसियों अनिवार्य विषय के तौर पर ही स्वीकार किया था। पत्नी को पत्नी के रूप में ग्रहण करना और देखना दाम्पत्य जीवन में जो कुछ करणीय है, उसे भी दुनिया की और-और बातों के रूप में ही ग्रहण करना सीखा था। उसी के अनिवार्य कारणवश सन्तान को जन्म दिया। पति-पत्नी के पारस्परिक सान्निध्य से शारीरिक मिलन होना उसके लिए भोजन-वस्त्र की तरह ही एक साधारण बात थी। उसमें कोई अधिक सुख, आनन्द, उल्लास या उच्छ्वास का उसने अनुभव नहीं किया था। उसके बाद सचिवालय के तरह-तरह के गली-कूचे का फेरा लगाने के क्रम में वह जीवन के दूसरे नशे में गर्क हो गया था। मौजूदा पचपन वर्ष की प्रौढ़ता में पहुँचने के बहुत पहले ही दांपत्य जीवन के स्वाभाविक क्रियाकलाप उसके जीवन से विदा हो चुके थे। सुरबाला ने भी इसे स्वाभाविक समझकर ही स्वीकार कर लिया था। उसे कोई शिकवा-शिकायत नहीं थी। पति और पुत्रों के

थ वह सुखी गृहस्थ जीवन बिता रही है और उसे सुखी स्त्री ही कहा
ाएगा ।

इस दृष्टि से महेन्द्र भी सुखहीन नहीं था । वह अपनी नौकरी,
जायदाद, कारोबार, वकील से परामर्श, टैक्स का हिसाब-किताब वगै-
रह लेकर मगन था । इरानी उसके जीवन में एक प्रलयंकर आँधी की
तरह आई । उस आँधी ने उसके शोणित में एक प्रबल आवेग पैदा कर
दिया । लगभग एक साल पहले, नन्दिनी के विवाह के समय ही उसकी
स्थिरता और मन को इरानी ने चंचल बना दिया था । उसके जैसे
पुरुष ने भी यह महसूस किया था कि इरानी के रूप और यौवन में एक
ऐसी रमणी की प्रकृति अपना पंख फैलाए हुए है जो कि सभी रूपसी
युवतियों में नहीं हुआ करती है । उस फैले पंख पर प्रत्येक पुरुष को
कूदने-फाँदने की इच्छा होने लगती है ।

तब महेन्द्र की समझ में यह मुद्दा क्षणस्थायी था, कुछेक दिनों की
बात । अबकी स्थानान्तरित होकर जब इरानी उसी के घर में आकर
टिकी तो तत्क्षण उसका हृदय बाणविद्ध हो गया । और ऐसा उसके
अज्ञात में अवचेतन की गहराई में हुआ । हालाँकि इरानी के समस्
अंगों में किसी भी पुरुष के प्राणों को बेधने का हथियार है और य
बात उसके सचेतन मन से छिपी हुई नहीं है । यही वजह है कि
इरानी के चलते अपने लड़के के बारे में भी निश्चिन्तता का अनु
नहीं कर पाता है । बल्कि अवचेतन मन से ईर्ष्यालु हो उठा है । क
वह सचेतन मन से अपने जगत की परिक्रमा करने की प्रक्रिया से
कर इरानी की ओर मुखातिब होकर खड़ा हो गया है । या
कह सकते हैं कि इरानी ने प्रबल चुम्बक की तरह उसे अपन
खींच लिया है ।

जो घटनाएँ सरसरी दृष्टि से अत्यन्त ही तुच्छ प्रतीत हो
महेन्द्र का भोजन-कक्ष के फर्श से डाइनिंग टेबुल तक पहुँचना
पर बैठ सी० आई० टी० रोड जाना—वे उसके जैसे व्यक्ति

किसी भी हालत में तुच्छ नहीं हैं। प्राकृतिक ध्वंसलीला की यह सब तैयारियाँ हैं और एक बार जब इसकी शुरुआत हो गई है तो ध्वंस के आवर्तन की अन्तिम सीमा में पहुँचे बिना इसका अन्त होनेवाला नहीं है। तब उसे रोका भी नहीं जा सकता है।

महेन्द्र घर लौटने के समय अगोचर में ही बहुत कुछ आगे बढ़ आया। अब उसे सारे काम-धाम के बीच हमेशा अपने शोणित में एक पुकार सुनाई पड़ती है और वह पुकार उसे बेचैन कर देती है। इसका कारण यह है कि वह इरानी की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा है। नतीजा यह हुआ है कि राइटर्स से निकलने के बाद वह अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में स्वभावतया बहुत ही कम वक्त तक रुक पाता है। उसकी जो परिणिति होनी चाहिए, हो चुकी है। अपनी तीक्ष्ण सजग दृष्टि बरकरार रखना और सब कुछ को अपने मजबूत हाथों में समेटे रखना, अब संभव नहीं हो पा रहा है। हालांकि इसके लिए वह हर जगह कैफियत यही देता है कि उसकी तबीयत ठीक नहीं रह रही है। घर पर भी उसने यही कैफियत दी है। फलस्वरूप सुरबाला उसके स्वास्थ्य के लिए चिन्तित हो उठी है।

एकमात्र चिन्तित नहीं है तो रत्ना मित्र—यानी इरानी। उसे अपनी सफलता का अहसास हर कदम पर हो रहा है। सुरबाला ने सहज विश्वास के कारण महेन्द्र की सेवा-शुश्रूषा की बहुत कुछ जिम्मेदारी उसी पर सौंप दी है। इरानी ने महेन्द्र को तिल-तिल पहचान लिया है। इरानी की प्रकृति उस पर अमोघ शक्ति का प्रभाव छोड़ रही है। महेन्द्र ने यद्यपि मना किया है, फिर भी वह हर रोज मती की मोटर-साइकिल के पीछे बैठकर मलाइब स्ट्रीट जाती है। मती और सत्रु दोनों ने इरानी के इस दावे को मंजूर कर लिया है और घर में यह बात किसी को जानने नहीं दी है। लौटने के वक्त इरानी मिनी बस से ही लौटकर आती है। वह और कहीं नहीं जाती क्योंकि उसे मालूम है कि महेन्द्र जल्दी ही घर लौट आएगा।

स बीच इरानी ने और एक काम किया है। नये साल पर उसने
को एक महीन करघे की धोती, अद्धी का एक कुरता, एक जोड़ा
बर्ट जूते और एक अटैची केस उपहार स्वरूप दिये हैं। महेन्द्र ने
ों हाथ उठाकर न-न करते हुए घोर आपत्ति की थी। लेकिन इरानी
अधर की तरंग और काली आँखों के अभिमान में सब बह गया था।
हेन्द्र ने तमाम पोशाकों को पहना था, पांवों में अलबर्ट जूते भी डाले
। मौका देखकर सुरवाला ने हमेशा के लिए रखे मोती-जड़े सोने के
बटन भी कुरते में डाल दिए थे। नये साल के दिन घर में बाकायदा
त्योहार मन गया था। महेन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा था, "लेकिन दुहाई
है इरानी, यह सब पोशाक पहनकर मुझे जहाँ कहीं भी जाने कहो, मगर
राइटर्स नहीं। अटैची केस के साथ भी नहीं।"

इरानी ने कहा था, "ठीक है, कहीं दूसरी जगह जाइएगा तो अब
से आपको इस तरह की पोशाक पहन, हाथ में अटैची केस थामे जाना
होगा। इस तरह का मुड़ा-तुड़ा कपड़ा-लत्ता पहन और उस बदसूरत
वाहियात बैग को थाम आप नहीं जा सकते।"

महेन्द्र ने निरीह मुसकराहट के साथ कहा था, "यह सब पागलपन
है।"

दरअसल मन-प्राणों से यदि कोई पागल हो चुका था तो वह महेन्द्र
ही था। क्योंकि उसकी आत्म-विस्मृति हैरतअंगेज थी। पहला वैशाख
का वह दिन केवल पोशाक में ही नहीं बीता था। इरानी की जिद प
महेन्द्र सुरवाला, नीतू और उसे लेकर, टैक्सी पर सवार हो सिने
देखने गया था। वह उत्सव टूटन की एक प्रक्रिया थी, यह किसी
समक्ष में नहीं आया।

हालांकि एक महीना बीत चुका है, लेकिन इरानी अपने स्थायी
की बात भूल चुकी है। असल में भूली नहीं है, उसके डेरे की खो
भार महेन्द्र ने ले लिया है। महेन्द्र मन ही मन इस बात की चि
बेचैन था लेकिन वह किसी सिद्धान्त पर नहीं पहुँच पा रहा था।

तरह के विचार उसके मन में जगते थे मगर उन्हें कार्य के रूप में परि-णत नहीं कर पाता था।

इसी तरह की परिस्थिति में जेठ मास के दूसरे पखवारे में महेन्द्र दो बजकर बीस मिनट में राइटर्स से बाहर निकल रहा था। अपनी उस विशेष पोशाक के कारण महेन्द्र सरकार एक ही नजर में पहचान में आ जाता है। बाएँ हाथ की कुहनी में कपड़े का थैला, दाहिने हाथ में छाता। मुख्य प्रवेश-द्वार से बाहर निकलते ही महेन्द्र अचकचाकर खड़ा हो गया। उसे अपनी आँखों पर जैसे विश्वास ही नहीं हुआ—सचमुच उसने गेट के बाहर इरानी को देखा या यह उसका भ्रम है।

इरानी के कंधे में बैग लटका है। वह मुँह में आँचल थामे मुसकरा दी। यौवन से छलकते अंग काँप उठे। महेन्द्र को एकाएक याद आया, आसपास के बहुतेरे लोग इरानी की ओर ताक रहे हैं। वह इरानी के निकट आकर बोला, "तुम ?"

"आपके लिए ही खड़ी हूँ। इरानी आँख मटकाकर धीमे स्वर में बोली, "मुझे मालूम है, आप दो बजे बाहर निकलते हैं। बहुत देर से खड़ी हूँ। सोच रही थी, अन्दर जाकर पता लगाऊँ या नहीं।"

महेन्द्र ने घबराहट और बेचैनी के साथ आसपास खड़े लोगों पर निगाह दौड़ाई, "आफिस नहीं गई थीं ?"

"गई थी, पौने दो बजे चलती बनी।' इरानी लाल-लाल होंठों के बीच सुफेद दाँतों को चमकाती हुई बोली, "सोचा, हर रोज चार-पाँच बजे तक काम करती हूँ, आज जरा आपके पास चलूँ।"

महेन्द्र की दृष्टि फाटक के निकट खड़े सिक्युरिटी के सिपाही की ओर गई। उसकी आँखों में विस्मयजनित कौतूहल है, क्योंकि उसने शायद यह सोचा भी नहीं होगा कि इरानी जैसी एक युवती से महेन्द्र का कोई संपर्क हो सकता है। महेन्द्र को बेचैनी महसूस हुई। बोला, "चल-

-चलते बातचीत करेंगे।"

"चलिए।" महेन्द्र की बगल में चलती हुई इरानी ने सड़क पार
ते हुए पूछा, "अभी कहाँ चलिएगा ?"

महेन्द्र के नथुने में इरानी के प्रसाधन किए अंगों की खुशबू समा
ही है। अपनी देह में वह उत्ताप महसूस कर रहा है। बोला, "इस
क तो मैं गणेशचन्द्र एवन्यू के दफ्तर जाता हूँ।"

"उफ्, ऑफिस और ऑफिस!" इरानी ने होंठ लटकाकर कहा,
"और कुछ सोच ही नहीं पाते हैं आप! मैं इस शिद्दत की धूप में तपती
हुई आपके पास आई और मुझे छोड़कर आपको ऑफिस जाने की इच्छा
हो रही है? फिर जाइए।" उसने अपने गरदन को एक बार में झटक
दिया।

महेन्द्र ने हँसकर कहा, "ठीक है, तुम्हारी क्या इच्छा है, यही बताओ
इस धूप में कहाँ चलोगी ?"

"चलिए न, किसी एयर कन्डिशन्ड रेस्तराँ में चलकर बैठें।" इरानी
बोली, "आपको कुछ खिलाऊँगी, मैं भी खाऊँगी।"

महेन्द्र ने मुसकराकर कहा, "मैं एक तरह से बाहर कुछ खाता ही
नहीं। तुम्हें यदि भूख लगी हो तो..."

"हाँ, लगी है।" इरानी ने महेन्द्र का एक हाथ थाम लिया, "खाऊँगी
नहीं तो ठण्डे में जाकर बैठूंगी। कितना आराम मिलेगा।" यह कहकर
उसने लालदीघी के पेवमेंट के सामने इन्तजार में खड़ी टैक्सियों में
एक को हाथ उठाकर पुकारा, "टैक्सी।"

इस वक्त यहाँ टैक्सियाँ रहती हैं। महेन्द्र कुछ कहे इसके पहले
एक टैक्सी उन लोगों के सामने आकर खड़ी हो गई। इरानी ने दरव
खोलकर पहले महेन्द्र को अन्दर जाने दिया, उसके बाद स्वयं ज
बैठ गई। ड्राइवर ने मीटर डाउन कर पीछे मुड़कर देखा। इरानी
"आपसे यह पूछकर कोई फायदा नहीं कि कहाँ किस रेस्त
जाइएगा।"

महेन्द्र के ललाट पर एक क्षण के लिये कुछ सलवटें पड़ गईं। बोला, "रेस्तरां के बदले अगर कोई आरामदेह जगह हो तो काम चलेगा? ऐसा हो तो मैं तुम्हें एक जगह लेकर चल सकता हूँ।"

"कहाँ? गंगा के किनारे? दुहाई है आपकी।" इरानी ने महेन्द्र को जाँघ को दबा दिया।

महेन्द्र का शोणित तीव्र गति से प्रवाहित होने लगा। बोला, "नहीं, इस दोपहर के वक्त तुम्हें लेकर मैं गंगा के किनारे नहीं जाऊँगा।" उसने ड्राइवर से कहा, "लाउडन स्ट्रीट चलो।"

टैक्सी चलने लगी। इरानी ने पूछा, "वहाँ क्या है?"

महेन्द्र ने कहा, "जाकर देखोगी ही। इतना घबरा क्यों रही हो?' उसने आँख झुकाकर अपनी जाँघ पर इरानी के नखरंगे हाथ को देखा। एकमात्र इरानी के साथ घर से बाहर निकलने का यह पहला मौका है। सोचा था, इरानी हाथ हटा लेगी, लेकिन हटाया नहीं। उसके तेज गति से प्रवाहित होते शोणित में उष्णता आ गई। स्पर्श की प्रतिक्रिया से उसके पूरे जिस्म में एक उत्ताप जगा और वह शिराओं में प्रवाहित होने लगा।

"इस तरह बीच-बीच में ऑफिस से भागने में बड़ा मजा आता है।" इरानी महेन्द्र के कन्धे से अपने सिर को सटाती हुई बोली, "कॉलेज से भागने की तरह। ऑफिस से भागने की आपको इच्छा नहीं होती?"

महेन्द्र का गला सूख रहा है लेकिन उसके अन्दर एक स्रोत प्रवाहित हो रहा है। हँसकर बोला, "ऑफिस से भागना किसे कहते हैं, मैं नहीं जानता।"

"आप मोस्ट ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट हैं।" इरानी महेन्द्र की ठोड़ी छूकर बोली, "अब इतने ओबीडियेन्ट रहने की जरूरत ही क्या है?"

महेन्द्र बोला, "ओबीडियेन्ट रहने की बात मैं नहीं कह रहा हूँ। आखिर करूँगा क्या? काम के अलावा मुझे मालूम ही क्या है?"

महेन्द्र की बातों में दयनीय स्वर उभर आया। इरानी बोली,

कह सकते हैं। लेकिन करने लायक कोई काम मिल जाए तो
र से गायब हो सकियेगा न ?"
महेन्द्र ने इरानी की आँखों की ओर देखा। देखा, उसके होंठ और
वों में एक अर्थपूर्ण कौंध खेल रही है। वह बोला, "क्या मिलेगा ?"
ान लीजिये, आज की तरह मैं ही अगर बीच-बीच में धावा बोलना
ू कर दूँ।" इरानी ने गरदन टेढ़ी की।
महेन्द्र ने देखा, हँस दिया और बुदबुदाया, "धावा !"...उसे महसूस
ो रहा है कि उसके जिस्म और गोद से इरानी का जिस्म और मांसल
जाँघ टकरा रही है। उसने बाहर की ओर नजरें दौड़ाईं। टैक्सी लाउ-
डन स्ट्रीट के भीतर आ चुकी है। थोड़ी देर बाद ही उसने टैक्सी ड्राइवर
से कहा, "सामने दाहिनी ओर खड़ा होना है।"
इरानी ने झुककर देखा और बोली, "यह तो एक बहुत ही ऊँची
इमारत है।"
महेन्द्र बोला, "हाँ, बारह मंजिली इमारत।" उसने अन्दर के बुक
पॉकेट में हाथ डालकर रुपया निकाला।
इरानी ने महेन्द्र के हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा, "उहुँ, वैसा नहीं
होगा। आप चाहें बिगड़ें या कुछ करें, टैक्सी का किराया आज मैं ही
दूँगी।" उसने बैग खोलकर दस रुपये का एक नोट ड्राइवर की ओर बढ़ा
दिया।
महेन्द्र हँस पड़ा, "तुमसे पार पाना मुश्किल है।" वह दरवाज
खोलकर नीचे उतरा।
इरानी ने किराया चुकाने के बाद आसमान की ओर सिर उठा
उस बहुमंजिली इमारत की ऊँचाई देखी, "माणिकतल्ला सी० आ
टी० रोड के मकान से यह ज्यादा उंची और देखने में सुन्दर इम
है। यहाँ भी फ्लैट रखे हुए हैं ?"
महेन्द्र ने कहा, "धीरे-धीरे मेरे साथ आओ, घबरा क्यों रही
इरानी की आँखें फिर चौंधिया रही हैं। महेन्द्र सीढ़ी की ब

होता हुआ लिफ्ट के सामने पहुँचा। लिफ्ट नीचे ही था और अन्दर के एक कोने में स्टूल पर लिफ्टमैन बैठा था। महेन्द्र ने इरानी को पुकारा, "आओ।"

इरानी महेन्द्र के साथ लिफ्ट के अन्दर आ गई। महेन्द्र ने लिफ्टमैन से कहा, "नाइन्य फ्लोर।"

लिफ्टमैन ने बैठे-बैठे ही दरवाजे को खींचकर बटन दबा दिया। लिफ्ट ऊपर जाने लगा। इरानी मन ही मन प्रत्येक माला की गिनती कर रही है, दूसरी माला, तीसरी, चौथी, पांच-छः-सात-आठ-नौ। लिफ्ट रुका, दरवाजा खोल दिया।

महेन्द्र ने पुकारा, "आओ।"

दोनों लिफ्ट से बाहर निकले। महेन्द्र बाएँ जाकर दीवार की ओट में चला गया। दाहिनी ओर एक बन्द दरवाजा है। दरवाजे में की-होल है। महेन्द्र ने कपड़े के थैले में हाथ डालकर टटोलना शुरू किया, उसके बाद चाबी वाला एक रिंग निकाला। इएल लॉक में चाबी डाल दरवाजा खोला। अन्दर अँधेरा रेंग रहा है। इरानी को अन्दर का कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है। महेन्द्र ने बाएँ हाथ को बढ़ाकर एक स्विच दबाया। दरवाजे के अन्दर सिर के पास बत्ती जलने लगी। इरानी को पुकारा, "अन्दर चली आओ।"

इरानी अन्दर गई। महेन्द्र ने जैसे ही दरवाजे को ठेला वह अपने आप बन्द हो गया। प्रवेश-पथ कोई कम चौड़ा नहीं है। महेन्द्र ने और भीतर जाकर दाहिना हाथ बढ़ाकर स्विच दबाया और विशाल कमरे के बीचोबीच एक बहुत बड़ी बत्ती जल उठी। आंखों को चौंधियाने वाली रोशनी नहीं, कोमल और मधुर। परन्तु सब कुछ स्पष्ट दीख रहा है। शुरू में आंखें गलीचे के चारों तरफ रखे सोफे और दीवान पर गईं। बीच मे सेंटर टेबुल, शीशा लगा हुआ। एक तरफ की दीवार पर मात्र एक तसवीर है। इरानी यह नही जानती कि यह तसवीर पिकासो के 'बुल फाइट' की प्रिंट है। एक कोने में तिकोने एक मेज पर

कौन है, बगल में गद्दी मढ़ी एक कुर्सी ।

महेन्द्र ने आगे बढ़कर पर्दा हटा दिया और पूरब तरफ के दरवाजे खोल दिया । खासी लंबी-चौड़ी बालकॉनी । जोरों से सिर्फ़ हवा ने प्रवेश ही नहीं किया, आँधी की तरह सायँ-सायँ आवाज भी हुई । इरानी कुछ बोल नहीं रही, केवल देख रही है । बालकॉनी की ओर जाने के पहले ही उसकी निगाह बाईं ओर गई । पार्टिशन जैसा एक पर्दा है जो हटा हुआ है । पर्दे के उस पार एक बड़ी मेज है, दोनों ओर कुर्सियों की कतार । मेज पर शीशे के गिलास इस तरह सजे हैं, जैसे बैठने भर की देर हो । उसके बाद उसकी नजर पीछे की तरफ बाईं ओर के एक रेफ्रिजरेटर पर पड़ी । उसकी बगल से एक दूसरे कमरे में जाने का रास्ता है । इरानी औरताना कौतूहल वश उस ओर बढ़ गई । हत्था घुमाकर दरवाजा खोलते ही उसे रसोईघर दिखाई पड़ा । गैस की पाइप लाइन और चूल्हा । शीशे की आलमारी में झकमकाता डिनर सेट, चम्मच, कांटा-छुरी, कप-डिश तथा कीमती शीशे के तरह-तरह के गिलास । एक तरफ मीट सेफ । गैस के चूल्हे के पास एक बेसिन ।

"तुम यहाँ ?" महेन्द्र रसोईघर के दरवाजे पर आकर खड़ा हुआ ।

इरानी ने मुड़कर देखा और पूछा, "यह सब किसका है महेनदा ?"

"फ्लैट तो देखा ही नहीं, इसके पहले ही मालिक की खोज-खबर क्यों लेने लगीं ?" महेन्द्र ने इरानी के अवाक् चेहरे को देखकर हँसते हुए कहा, "आओ, कमरों को चलकर देख लो ।"

इरानी दरवाजे के पास आई और बोली, "चलिए ।"

महेन्द्र ड्राइंगरूम के अन्दर जाकर दाहिनी तरफ के छोटे गलियारे से होता हुआ आगे बढ़ा । बाएँ और दाहिने सिरे के दोनों कमरों के दरवाजे खोलते हुए बोला, "जाओ, अन्दर जाकर देख आओ ।"

कमरों की खिड़कियों को महेन्द्र ने पहले ही खोल दिया था । इरानी ने बाईं ओर के दरवाजे के अन्दर जाकर देखा, कमरे के एक ओर एक पलंग है और उस पर डनलप पिलो का गद्दा मढ़ा बिस्

तकिया। ड्रेसिंग टेबुल और वारड्रोब दूसरी ओर है। दूसरे छोर पर एक ओर खुला हुआ दरवाजा है। इरानी आहिस्ता-आहिस्ता दरवाजे के पास गई और झाँककर देखा। एक बड़ा-सा गुसलखाना फव्वारा और गरम पानी का हिटर। बेसिन के सामने आईना। उसके पास रैक पर दामी तौलिया। सुगंधित साबुन।

लौटते वक्त इरानी की नजर आईने के सामने रखे एक लिपस्टिक पर पड़ी। उसकी भौंहों पर बल पड़ गए। हाथ बढ़ाया मगर बिना छुए ही वापस चली आई। बाहर आ दाहिनी ओर के कमरे के अन्दर प्रवेश किया। तकरीबन एक ही जैसा इन्तजाम है। लेकिन इस कमरे के पलंग को देखते ही साफ-साफ समझ में आ जाता है कि तकिया, चादर वगैरह इस तरह बिखरे हैं जैसे कोई उस पर सो चुका है। ड्रेसिंग टेबुल के पास जाते ही आईने के सामने उसे एक जनाना रेशमी रूमाल पड़ा हुआ दिखाई पड़ा। इस कमरे में भी एक वारड्रोब है। गुसलखाना पहले जैसा ही है। खिड़की से सायँ-सायँ हवा आ रही है। समूचे फ्लैट को हवा जैसे उड़ाकर ले जाना चाहती है। शायद बहुत ऊँचा होने के कारण ही दोपहर के वक्त भी हवा में गरमी नहीं है।

इरानी के कौतूहल का कोई ओर अन्त नहीं। वह कमरे से बाहर निकल आई। देखा, ड्राइंगरूम में महेन्द्र टेलीफोन से किसी से कह रहा है, "हाँ एक दूसरे काम के कारण मुझे रुक जाना पड़ा है। कब जाऊँगा, कह नहीं सकता···अयँ ? हाँ, हर जगह सूचना भेज देनी है। रख रहा हूँ।" उसने रिसीवर रख दिया।

"यह किसका फ्लैट है, महेनदा ?" इरानी ने दोबारा तहकीकात की।

महेन्द्र मुड़कर मुसकराने लगा। बोला, "अभी भी एक मकान देखना बाकी है। फ्लैट चाहे किसी का हो, मगर कैसा लगा, यही बताओ।"

"बहुत ही सुन्दर। वेल फर्निश्ड, फ्लैट की साज-सज्जा देखकर आँखें

धया रही हैं।" इरानी ने कहा।
अब महेन्द्र उत्तर की ओर गया। पर्दा हटाकर एक दरवाजे को
कर खोला। इरानी पीछे-पीछे आई। पूरब तरफ की खिड़की खुली
। यह शयन-कक्ष और भी बड़ा है। डब्ल बेड पलंग का यह बिस्तर
ौर ज्यादा खूबसूरत है। बेडकवर संभवतः चिकने मखमल का है। इस
कमरे में वारड्राॅव, ड्रेसिंग टेबुल के अतिरिक्त स्टील की एक आलमारी
भी है। खिड़की से दूर-दराज की कई इमारतें दीख रही हैं। निकट
न जाने से कलकत्ते का बाकी हिस्सा नजर नहीं आता है, सिर्फ आस-
मान दिखाई पड़ता है।

"आप ले आए, सब कुछ दिखाया लेकिन इतने करीने और सुन्दर
ढंग से सजे फ्रिज-टेलीफोन वाला यह फ्लैट किसका है, यह तो बताया
ही नहीं।" इरानी की आँखों में संदेहपूर्ण जिज्ञासा का भाव है। वह
महेन्द्र के पास जाकर खड़ी हो गई। फिर बोली, "लेकिन बिलकुल
खाली है और चाबी है आपके पास।"

महेन्द्र ने धीमे स्वर में कहा, "खाली रखना ही पड़ता है। मतलब
है—बीच-बीच में दफ्तर के उच्च पदाधिकारी चाबी माँग लेते हैं और
यहाँ आकर जरा आराम और अय्याशी करते हैं।"

"इसका मतलब हुआ यह फ्लैट आपका है।" इरानी की काली
काली आँखें फैल गईं। गले का स्वर थम सा गया और उसमें आश्च
का भाव तिर आया, "और वो जो लिपस्टिक देखा, रूमाल देखा—
सब किसके हैं?"

महेन्द्र ने कहा, "मुझे मालूम नहीं। आफिस के बड़े-बड़े अ
आते हैं, उनके साथ जो औरतें आती हैं, शायद वे ही छोड़ गई है
"उफ् महेनदा—महेनदा, आप धरती के कितने नंबर के अ
हैं, मेरी समझ में नहीं आ रहा है।" इरानी का समस्त विस्म
कौतूहल अब उल्लास के रूप में उभर आया, "इतना बड़ा बेल
फ्लैट आपका है? उस हाथ के थैले को आप पलंग पर फेंक दें

महेन्द्र ने हँसकर कहा, "तुम्हारे वातानुकूलित रेस्तरां से यह जगह बुरी तो नहीं है न ?"

"बुरी का मतलब ? स्वर्ग है स्वर्ग !" इरानी ने अपने दोनों हाथों से महेन्द्र के हाथ कसकर पकड़ लिए, "महेनदा, तुम्हें क्या कहूँ, समझ में नहीं आ रहा है। तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं है, तुम सचमुच ही सुखी हो।"

महेन्द्र के खून में आग की लपटें दहकने लगीं और उसका कंठस्वर दीवारों अवरुद्ध जैसा हो गया। बोला, "सचमुच ? हालांकि मेरी—मेरी धारणा है—मुझे कुछ भी हासिल नहीं हुआ है।"

"तुम्हें क्या नहीं मिला है महेनदा, क्या नहीं मिला है ?" इरानी महेन्द्र के शरीर से सटकर खड़ी हो गई और अपना चेहरा महेन्द्र के चेहरे के पास ले गई, "तुम्हें जो नहीं मिला है, वह क्या मैं तुम्हें दे सकती हूँ ?"

महेन्द्र ने इरानी के चेहरे की ओर देखा, लेकिन इतने निकट रहने के बावजूद उसका चेहरा साफ़-साफ दिखाई नहीं पड़ा। एक चमकता हुआ प्रकाश उसके सामने है, बस इतना ही। लेकिन इरानी की छाती और शरीर के बाकी हिस्से उसके शरीर से सटते गए। उसने कराहते जैसे स्वर में कहा, "इरानी, वह बात मुँह खोलकर कहूँ, इसका साहस नहीं हो रहा है।"

"मैं जानती हूँ, जानती हूँ कि तुम मुझे चाहते हो।" इरानी ने फुस-फुसाते हुए कहा, "तुम्हारी आँखों की ओर देखकर पहले दिन ही मुझे इसका पता चल गया था। तुमने कहा क्यों नहीं था ?"

महेन्द्र नशे से अभिभूत होकर बोला, "ऐसा कर नहीं पाया इरानी, क्योंकि मैं मैं ही हूँ। मगर आज बिना कहे रह नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हें देखकर सब कुछ भूल जाता हूँ।"

"तब लो महेनदा, मेरा सब कुछ तुम ले लो।" इरानी ने कम्पित स्वर में होंठों को कँपाते हुए कहा, "तुम्हें जैसे भी मर्जी हो, मुझे

आवेग, उच्छ्वास और उत्तेजना से थरथराता महेन्द्र दुविधाग्रस्त स्थिति में खड़ा रहा। टूटे स्वर में बुदबुदाया, "ऐसा लग रहा है जैसे जिन्दगी का सब कुछ आज नया हो, बिलकुल ही नया।"

"फिर मैं ही तुम्हें सब कुछ की तालीम देती हूँ।" इरानी महेन्द्र के गले को अपनी बाँहों में भरकर उसे पलंग के पास ले गई। खींचकर बिठाया और स्वयं भी बैठ गई। उसके बाद महेन्द्र के होंठों को बार-बार चूमना शुरू कर दिया।

महेन्द्र के भीतर से आहिस्ता-आहिस्ता एक क्षुधार्त, आकांक्षा से उग्र पुरुष प्रकट हुआ—यह वही पुरुष है जिसकी उम्र अभी गौण है। इच्छित रमणी को लेकर उसके यौवन का जैसे पहले-पहल यह अभिषेक हो रहा हो। वासना के प्रबल आवेग से वह इरानी को बिस्तर पर लिटाकर मर्दित करने लगा।

इस तरह ध्वंस का प्रथम संकेत मिला। इसके बाद ध्वंस का सि
सिला चलने लगा। शुरू में कुछ दिनों तक इसी प्रकार अनियमित
पर काम चलता रहा। लेकिन इस अनियमित मिलन ने महेन्
और अधिक व्याकुल बना दिया। जिन्दगी एक ही बार के लिए
है, इस विश्वास को सत्य मानकर उसने अनवरत भोग से अपने
को परिपूर्ण बनाना चाहा। इससे व्यावसायिक केन्द्रों और घर
तरह के सवाल पैदा होने लगे। सब जगह महेन्द्र एक ही उत्तर
वह एक विशेष कार्य में व्यस्त है।

इस बात को किसी ने अविश्वसनीय तौर पर नहीं लिय
महेन्द्र के लिए वैसा कुछ असंभव नहीं है। शायद वह नए
काम कर रहा है। सुरबाला को सिर्फ एक ही चिन्ता है—
दिनों से तबीयत ठीक न रहने की शिकायत कर रहा है।
हालांकि महेन्द्र में अस्वास्थ्य का कोई चिह

पड़ रहा है। बल्कि आजकल वह तरो ताजा दीखता है। उसके चलने-फिरने में भी एक तरह का बदलाव आ गया है। कपड़े-लत्ते की ओर भी उसने ध्यान देना शुरू कर दिया है। बीच-बीच में अटैचीकेस को भी वह उपयोग में लाता है।

घर पर लड़के माँ और इरानी मौसी से बाबूजी में आए बदलाव के संदर्भ में चर्चा करते हैं। बात को हँसी-मजाक में उड़ा देने के बावजूद, इरानी के अतिरिक्त सभी के मन में अशान्ति का भाव जमने लगा है। हर आदमी का हर तरह का बदलाव स्वीकार कर लिया जाए, यह संभव नहीं है। मती और सतु आपस में चर्चा करते हैं कि महेन्द्र की नियमित अनुपस्थिति के कारण कर्मचारीगण फायदा उठा रहे हैं और कोई मन लगाकर काम नहीं करता है। चोरी का भी प्रकोप बढ़ गया है। असली आदमी न रहे तो जो होता है, वही होने लगा है।

महेन्द्र जब घर से निकल जाता है तो इरानी मती-सतु के साथ पूर्ववत् मोटरसाइकिल से बाहर निकलती है। लेकिन आजकल बीच-बीच में उसे लौटने में देर हो जाती है और कैफियत के तौर पर बताती है कि ऑफिस में काम का दबाव बढ़ गया है। बीच-बीच में उसका ध्यान इस ओर जाता है कि गुरवाला अकसर उसे लुक-छिपकर देखती है। इरानी महसूस करती है, एकमात्र गुरादी की आँखों ने ही उसके परिवर्तन को पहचान लिया है। जिस बदलाव को घर के बाल-बच्चे समझ नहीं सकते, एकमात्र नारी ही नारी के उस परिवर्तन को भाँप सकती है। यही वजह है कि गुरवाला बीच-बीच में मुसकराकर हँसी-मजाक के लहजे में पूछती हैं, "अरी इरानी, आजकल तुम क्या प्रेम-वेम के चक्कर में फँसी हो?"

"क्या कहती हो, गुरादी!" इरानी बात को हँसी में उड़ा देना चाहती।

गुरवाला कहती, "तुम दिन-ब-दिन और ही तरह की होती जा रही हो। एक तो यों ही खूबसूरत हो, उस पर ऐसा लगता है जैसे

तुम्हारी खूबसूरती दिन-दिन और निखर रही है। बात क्या है? देखना, अभी हम लोगों के पास रहो। चाची को मुझे ही कैफियत देनी होगी।"

"डरने की कोई बात नहीं है सुरोदी, इतना याद रखो कि मैं नौकरी से अपनी जीविका चलाती हूं।" इरानी हंसकर कहती।

सुरबाला जरा संकोच के साथ पूछती, "होस्टल का कुछ पता चला?"

"होस्टल तो बहुत सारे हैं सुरादी, लेकिन मन के लायक नहीं मिल रहा है।" इरानी मिथ्या उत्तर देती।

महेन्द्र इरानी के साथ नियमित तौर पर लाउडन फ्लैट नहीं जा पाता है। अक्सर दफ्तर के अफसरान चाबी मांग लेते हैं। वैसे दिन वह इरानी के साथ माणिकतल्ला सी० आई० टी० रोड वाले फ्लैट में जाता है। उसे देखते ही पता चल जाता है कि वह सिर्फ नशे में धुत होकर नहीं चल रहा है। इस दुनिया में संभवतः महेन्द्र जैसे सभी धनी-मानी लोग सच्चरित्र नहीं हैं। लेकिन महेन्द्र का सारा काम अति की सीमा पर रहता है। जब वह व्यवसाय-वाणिज्य और संपदा के संचय में निमग्न था, उस समय वह शाहखर्ची किसे कहते हैं, बिलकुल नहीं जानता था। बल्कि संपत्ति की तुलना में वह अत्यन्त दीन-दरिद्र की तरह जीवन जीता था। अब जब कि वह इरानी का आंचल थामे रास्ते के नये मोड़ पर आया है, तो तमाम दिशाओं से मुंह मोड़कर दुनिया को केवल इरानीमय देख रहा है। इरानी उसका जप-तप ध्यान ही नहीं है, वह उसकी रक्त-धारा के लिए प्राण संचारिणी का कार्य कर रही है। चारों तरफ से अपनी रक्षा करते हुए, अपने पैरों पर खड़े व्यक्ति की हैसियत से, इरानी को अपने साथ लेकर चलने की उसे तालीम नहीं मिली है। उसे इरानी अपने प्रवाह में बहाकर लिए जा रही है।

लिहाजा कि उसने इरानी के सम्मुख अपने आपको इस तरह सौंप दिया कि इरानी के लिए उसका कुछ गोपनीय नहीं रह गया। यहां

तक कि परी कथा की तरह जो खाता उसके प्राणों का भौंरा है, उसे भी इरानी के हाथों में सौंप दिया। अपना पूरा हिसाब-किताब भी बता दिया। इरानी ने विस्मय में आकर, आँखों को फैलाकर खाते की एक जगह की संख्या की ओर इंगित करते हुए पूछा था, "यह सत्तासी लाख रुपये की पूरी रकम क्या कालाधन है ?"

जवाब में इरानी को प्यार करते हुए महेन्द्र हंस दिया था। इरानी ने अत्यन्त सावधानी, परन्तु इस प्रकार के भाव से जैसे उसकी जिज्ञासा कोई अहमियत न रखती हो, पूछा था, "यह रकम बेशक बोल्ट में रखी हुई होगी ?"

"दिमाग खराब है ?" महेन्द्र ने कहा था, "वोल्ट में कहीं इतना नकद रुपया रखा जाता है ? किसी भी वक्त पकड़ लिया जा सकता है। तुम्हें दिखाऊँगा कि कहाँ रखा हुआ है।"

प्रेम में सराबोर हो इरानी ने महेन्द्र की गोद में सिर रखकर कहा था, "नहीं-नहीं, मैं यह सब देखना नहीं चाहती। तुम्हारे पास है, इतना जानकर ही मैं सुखी हूँ।"

महेन्द्र ने उसकी बात अनसुनी कर दी थी। माणिकतल्ला सी० आई० टी० फ्लैट की आलमारी के निचले हिस्से में अत्यन्त गोपनीय ढंग से रखे सत्तासी लाख रुपये का भंडार, नीचे के चेंबर के ढक्कन को हटाकर, उसके-निचले भाग में चाबी घुमाकर एक दूसरे चेंबर को खोलते हुए 'खुल जा सिमसिम' जैसे चमत्कार के साथ दिखाया था। कहा था, "सुरो को दिखाया है और अब तुम्हें दिखा रहा हूँ। लेकिन सुरो को न तो यह चाबी दिखाई है और न ही उसे चेंबर खोलने का तरीका बताया है। यह सिर्फ तुम्हें दिखा रहा हूँ।"

"खैर, जल्दी से बन्द कर दो।" इरानी ने कहा था और स्वयं चाबी ले, नीचे के छिद्र को हाथ से टटोलकर, उसका ढक्कन बन्द कर दिया था, "दो, मैं ही बन्द कर देती हूँ।"

महेन्द्र चाबी की बात याद भी नहीं रखना चाहता था। उसने

तो मान लीजिए कि कैफियत ही है।"

महेन्द्र ने तीखे स्वर में कहा था, "नहीं, मैं कोई कैफियत देना नहीं चाहता। तुम लोग इतने दिनों से क्या कर रहे हो ? तुम लोग सारा कारोबार चला नहीं सकते ?"

सुरबाला इस बकझक के बीच ही वहाँ पहुँच चुकी थी। दूर थी तो केवल इरानी। सुरबाला ने महेन्द्र से कहा था, "यह सब तुम क्या कह रहे हो ? तुमने क्या उन लोगों को उस तरह से चलने की कभी तालीम दी है ?"

"चलने की तालीम क्या दूँगा ?" महेन्द्र ने उसी उत्तेजना के साथ कहा था, "अगर अचानक मेरा हार्टफेल हो जाए ? तब ? उस समय भी वे मेरे इन्तजार में बैठे रहेंगे ?"

सुरबाला ने हाथ से अपना मुँह ढँक लिया था और आहत उद्वेगभरे स्वर में कहा था, "छिः छि, यह सब क्या बक रहे हो ? तुम्हारी जुबान से इस किस्म की बातें कभी सुनने को नहीं मिली थीं। 'तुम्हें क्या हो गया है ?" सुरबाला की आँखों की कोर में आँसू छलछला आए थे, अगर तुम पर कोई मुसीबत आई हो तो हम लोगों से कह सकते हो। कभी तो जबान खोलकर तुमने कुछ कहा नहीं।"

"क्या कहूँगा ?" महेन्द्र ने ऊब के साथ कहा था, "मुझ पर कोई मुसीबत नहीं आई है।"

मती ने कहा था, "आप पर कोई दूसरी मुसीबत आई हो, इसका पता हमें नहीं है। तब हाँ, यह जान लीजिए, इन दो महीनों के बीच एक रूट की हमारी दो बसों के वर्कर तीन सप्ताह से स्ट्राइक पर हैं। आपके अलावा और किसी को वे लोग अपनी माँग बताने को तैयार नहीं हैं। एक महीना से अधिक अरसा गुजर गया, एक ट्रक माल लेकर पंजाब गई थी, वह लौटकर नहीं आई है। पुलिस को सूचना दी है मगर पुलिसवाले कोई पता नहीं बता सके। होसियारी में स्टैम्प वाला एक चौथाई माल जमा हो गया है। प्रेस में हजारों फर्में चोरी से छापे जाते

हैं। एकमात्र सुधीर बाबू जिल्दसाजी का कारखाना ठीक से चला रहे हैं। इन सबों को आप मुसीबत कहना नहीं चाहते हैं?"

"इतनी खबरों का पता रखते हो मगर कोई रास्ता नहीं निकाल सकते?" महेन्द्र ने रूखे स्वर में कहा था।

सतु का दिमाग जरा गरम रहता है। उसने झुंझला कर कहा था, "नहीं, रास्ता निकाल नहीं पाया और न निकाल पाऊँगा। इतने दिनों तक किसी काम में हमें हस्तक्षेप नहीं करने दिया। अगर किया भी तो आपने दूर हटा दिया। सारा कुछ आप अपने हाथ में रखे हुए हैं। आप अपनी छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि आपने हम पर विश्वास किया है? नहीं, ऐसा नहीं किया है।"

सुरबाला ने सतु के मुँह पर चांटा जड़ दिया, "सतु, चुप रहो। बाबूजी से इस तरह बातें मत करो।"

"विश्वास नहीं किया है तो ठीक ही किया है।" महेन्द्र ने गुस्से में आकर कहा था, "अब जो करना हो करो, वरना जहन्नुम में जाओ। मैं एक महीने की छुट्टी पर बाहर जाऊँगा।"

मती ने कहा था, "ठीक है, जाना है तो माँ को साथ लेते जाइए। आप अकेले नहीं जा सकते हैं।"

"तुम्हारे हुक्म से?" महेन्द्र बेहद गुस्से में आ गया था, "मैं किसको लेकर जाऊँ और किसको लेकर न जाऊँ, यह बात तुमलोग बताओगे?"

सतु ने कहा था, "हाँ, हमीं बताएँगे। अन्यथा आप जा नहीं सकते।"

"एक ही चांटे में तेरा दिमाग चकराने लगेगा, हरामजादा।" महे हाथ उठाकर गुस्से में सतु की ओर बढ़ा।

सतु भी वैसा ही गँवार है। उसने कहा, "मारिए. मार दे देख लीजिए।"

सुरबाला बाप और लड़कों के बीच आकर रुनाई के स्वर में महेन्द्र से कहा था, "दुहाई है

हूं, अब झमेला मत बढ़ाओ। मैंने तुम्हारा यह रूप कभी नहीं देखा था। मालूम नहीं; ईश्वर हमें किस ओर घसीटकर ले जा रहे हैं। तुम्हें जहां भी मर्जी हो, जाओ। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी। मैंने आज तक तुम्हारे किसी काम में अड़चन नहीं डाला है। बस, सिर्फ़ अपनी सेहत का खयाल रखो।" सतु का हाथ पकड़ वह उसे हटाकर ले गई थी।

नीतू घर के एक कोने में खड़ा था। पिता का तेवर देख वह भय से काठ हो गया था। आखिर में इरानी कमरे के अन्दर आई थी। मगर कुछ बोली नहीं। कृत्रिम करुणा की मूर्त्ति लिए खड़ी रही। महेन्द्र सबके सामने से हट गया था।

पर्वत का भूस्खलन शुरू हो जाता है तो प्रकृति की अन्तर्निहित ध्वंस-लीला अपनी गति से अग्रसर होने लगती है। प्रकृति का यही धर्म है। ंस की तैयारियां जब चलने लगती हैं तो वह मनुष्य को कुछ जानने हीं देती। उसके बाद जब उसकी लीला शुरू हो जाती है तो वह दुर्निवार और भयंकर हो जाती है।

महेन्द्र के जीवन में इस प्रकृति की भूमिका इरानी ने ग्रहण की है। मुर्गी नामक चिड़िया जब अत्यन्त सावधानी और चौकसी के साथ सजग दृष्टि रखते हुए डग बढ़ाती है तो लगता है शिकारी के लिए उसे पकड़ना संभव नहीं है। महेन्द्र गोकि सदा से चौकसी के साथ कदम रखता आया था लेकिन अनिवार्यतः वह शिकारी के फंदे में फंस गया। शायद यह कोई नई घटना नहीं है। चिरन्तन काल से ही कोई न कोई नारी व्यक्ति के जीवन, संसार या राष्ट्र में विनाश को अनिवार्य बनाती आई है। इस मामले में सर्वनाश के जितने भी अस्त्र हो सकते हैं, सबके सब नारी के सौंदर्य में छिपे रहते हैं। पुरुष इस मामले में प्रकृति के हाथ में खिलौने की भूमिका अदा करता है और उसकी बुद्धि और चौकसी धीमी पड़ जाती है।

महेन्द्र उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। केवल अपने से सेक्रेटरी और अफसरों को ही उसने हैरत में नहीं डाला है। छुट्टी पर घर से बाहर जाने के लिए कुछ न कुछ तैयारियाँ करनी पड़ती हैं, यह बात भी उसके दिमाग से उतर गयी है। ऑफिस के अफसरान के अतिरिक्त उसके और-और सहकर्मी भी हैरत में आ गए हैं, क्योंकि उन लोगों ने मामूली सर्दी-बुखार में भी महेन्द्र को छुट्टी लेते नहीं देखा था। उसकी प्राप्य छुट्टी साल-दर-साल बर्बाद होती रही थी।

एकमात्र सुरबाला ही सचेत थी। उसने एक सूटकेस में महेन्द्र के कुछ कपड़े-लत्ते रख दिए। लेकिन महेन्द्र को इसके लिए कोई फिक्र नहीं थी। सूटकेस लेकर वह राइटर्स गया और यथासमय सूटकेस ले टैक्सी पर बैठ गया और लाउडन स्ट्रीट फ्लैट में चला आया। इरानी अपने समय पर आई। उसके बाद केवल उन्माद और लालसा की अग्नि में *जलने के आनन्द का सिलसिला चलने लगा।*

लालसा की अग्नि में दग्ध होने में एक प्रकार का सुख है, लेकिन वह सुख, लालसा और उच्छ्वास अंधे होते हैं। प्रेम में जो सब कुछ खो देता है उसे भी एक प्रकार का आनन्द मिलता है, क्योंकि उसमें मुक्ति है। उस मुक्ति का नाम है—"सखी, मर जाऊँ तो बाँध मुझे रखना तमाल की डाल में।" लेकिन एक प्रौढ़ व्यक्ति की तमाम जिन्दगी के अवचेतन की भूख शान्त करने की क्रिया से इसका कोई ताल-मेल नहीं है।

मैनेजर को अपने सौंदर्य से रिझाकर, इरानी ने महेन्द्र के कथना- नुसार दो बजे के बाद ही एक महीने तक ऑफिस से लौटने की अनुमति प्राप्त कर ली है। ऑफिस में भी इरानी के रूप पर मुग्ध पुरुषों की कोई कमी नहीं है। इरानी की काली आँखों की पुतलियों में केवल पुरुषों का चित्त चुराने की चमक नहीं है। फिलहाल उसकी मारक आँखों में एक बारीक सोच और सावधानी की छाया मँडराती रहती है।

महेन्द्र की एक महीने की छुट्टी के दौरान दूसरे सप्ताह ही,

ने अपनी एक सहेली की सहायता से दक्षिण कलकत्ते के एक काम-काजी लड़कियों के होस्टल में रहने का इन्तजाम कर लिया है। पेशगी रकम देकर हस्ताक्षर वगैरह कर आई है। लेकिन दूसरी ओर दमदम के घर में सुरबाला और उसके लड़के के सामने भी अहम् भूमिका अदा कर रही है। मती और सतु महेन्द्र के बारे में उससे खुलकर चर्चा करते हैं। उन्हीं लोगों से इरानी को पता चला है, महेन्द्र की संपत्ति के संबंध में उन्हें पूरी जानकारी नहीं है। लेकिन उन्हें अपने पिता के चरित्र पर किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है। उनकी धारणा है, महेन्द्र किसी बेकार आदमी के पल्ले पड़ गया है। स्वभावतया वे लोग अपने पिता के लिए चिन्तित हैं।

इरानी मन ही मन हंसती है। तीसरे सप्ताह के दौरान उसने चौथे सप्ताह के लिये बैंक से छुट्टी ली। महेन्द्र तब अपने बुझे यौवन की लौ को प्रखरता से जलाने के लिये पागल जैसा हो गया था। चौथे सप्ताह के पहले दिन ही वह माणिकतल्ला सी० आई० टी० रोड फ्लैट की चाबी लेकर चंपत हो गई। सुरबाला को बताया, उसे अच्छा नहीं लग रहा है। एक हफ्ते के लिये सिलीगुड़ी जाना चाहती है। और यह भी सूचना देने से नहीं चूकी कि लड़कियों के एक होस्टल में उसने रहने का इन्तजाम कर लिया है।

सुरबाला का अनुमान था, दमदम के मकान का परिवेश इरानी को मौजूदा हालत में अच्छा न लगना स्वाभाविक ही है। उसने सोचा, इसी वजह से इरानी एक बार सिलीगुड़ी से घूम-फिर कर आना चाहती है और होस्टल में रहने का इन्तजाम कर लिया है। उसने बस इतना ही कहा, "इरानी, तुम्हारे बहनोई को क्या हो गया है और वे कहाँ गये हैं, कुछ समझ में नहीं आता है। तुम्हारा मन उदास हो गया है, इसका मुझे पता है। लेकिन मेरा एक अनुरोध है, सिलगुड़ी के सगे-संबंधियों को यह सब बात नहीं बताना।"

"तुम निश्चिन्त रहो, सुरोदी।" इरानी ने कहा, "यह सब चर्चा

करने में रखा ही क्या है। तब हाँ, महेनदा के लिये चिन्तित जरूर हूँ।"

सुरबाला की आँखों में आँसू छलक आये! बोली, "उन्हें जिन्दगी के प्रथम दिन से एक जैसा ही देखती आई हूँ लेकिन इस रूप में कभी नहीं देखा था। पता नहीं, क्या बात है!"

इरानी अपना असबाब लेकर यथासमय विदा हो गई। अबकी उसके असबाब में एक नये चमड़े के सूटकेस की वृद्धि हुई है। विदा के दिन दोपहर के वक्त वह लाउडन स्ट्रीट फ्लैट में गई लेकिन छुट्टी या चले जाने की बात उसने महेन्द्र को नहीं बताई। बल्कि आने के पहले लाउडन स्ट्रीट के पते पर महेन्द्र को एक पत्र भेज चुकी थी। शाम छः बजे इरानी के विदा होने का समय है। प्रगाढ़ आलिंगन और चुम्बनों के क्षण में महेन्द्र को पता नहीं चला कि यह इरानी की आखिरी विदाई है।

महेन्द्र दूसरे दिन अपने लाउडन स्ट्रीट के फ्लैट में, ग्यारह बजे बार-बार, व्याकुल प्रत्याशा की आँखों में टेलीफोन की ओर ताकने लगा। क्योंकि ग्यारह बजे इरानी हर रोज बैंक से टेलीफोन करती है।

महेन्द्र छटपटाने लगा और कई बार संदेह में आकर टेलीफोन को कान से लगाया। डायल टोन बाकायदा सुनाई पड़ रहा है। टेलीफोन खराब नहीं हुआ है। कहीं बैंक का टेलीफोन खराब तो नहीं है? मगर वहाँ मात्र एक ही टेलीफोन नहीं है। मुख्यालय में पी० बी० एक्स है। तीनेक डाइरेक्ट लाइन भी हैं। फिर भी महेन्द्र ने तय किया कि वह ढाई बजे तक इन्तजार करेगा। शायद किसी खास वजह से इरानी टेलीफोन नहीं कर पा रही है।

इसी बीच बारह बजे दरबान आया। वही महेन्द्र के लिये बाहर से खाना ले आता है। एक टिफिन कैरियर भी यहाँ रखा है। कभी दरबान और कभी लिफ्टमैन खाना ला देता है। महेन्द्र खुद ही बोतल

पानी भरकर फ्रिज में रख देता है। उसने दरबान को रुपया दिया। सिर्फ अपने खाने के लिए नहीं। इरानी आने के बाद यहाँ नाश्ता करती है। उसके लिये पहले से ही नाश्ता मंगवाकर रख दिया जाता है।

इरानी का फोन न पाने के कारण महेन्द्र दोपहर का खाना निश्चितता के साथ नहीं खा सका। उसके बाद भी विश्राम नहीं कर सका। बार-बार बाहर की बालकॉनी में जाकर नीचे झाँकता रहा। हालांकि इरानी के आने का तब वक्त नहीं हुआ था। जब ढाई बज गये तो महेन्द्र की बेचैनी बढ़ गई। इरानी के द्वारा दिये गये खास नंबर पर उसने टेली-फोन किया। टेलीफोन बहुत देर तक घनघनाता रहा, उसके बाद एक महिला का कंठस्वर तैरता हुआ आया, "हैलो।"

"कौन इरानी ?" महेन्द्र ने कहा।

टेलीफोन के दूसरे छोर से विस्मय भरा उत्तर आया, "कौन इरानी ? आप किससे मिलना चाहते हैं ?"

क्षण भर में ही महेन्द्र समझ गया, गले की आवाज पहचानने में उससे गलती हुई है। तुरन्त बोला, "अन्यथा न लें, मैं रत्ना मित्र से बातचीत करना चाहता था। वे हैं या बाहर निकल चुकी हैं ?"

उस छोर से महिला-स्वर आया, "रत्ना मित्र ? वह परसों से छुट्टी पर है। आप कौन बोल रहे हैं ?"

महेन्द्र की आवाज लड़खड़ाने लगी, "छुट्टी पर है ? मैं उसका बहनोई महेन्द्र सरकार बोल रहा हूँ।"

"ओह, आप महेन्द्र बाबू हैं ?" उस छोर के रमणी-स्वर में अपनापा तैर आया, आपके बारे में रत्ना से सुन चुकी हूँ। नमस्कार !"

महेन्द्र बेवकूफ की तरह बुड़बुड़ाया, "नमस्कार !"

उस छोर से आवाज आई, "आपको क्या पता नहीं है कि वह परसों से छुट्टी पर है ? कल दार्जिलिङ्ग मेल से सिलीगुड़ी रवाना हो गई है।"

"सिलीगुड़ी ?"

"हाँ आपको तो मालूम रहना चाहिये था। वह तो आपके घर पर ही थी।" उस छोर से आवाज आई।

महेन्द्र का रिसीवर से थमा हुआ हाथ काँप रहा है। बोला, "दर-असल मैं कुछ दिनों से घर में नहीं था। वह कब लौटकर आएगी ?"

"वह एक हफ्ते की छुट्टी पर गई है।" उस छोर से आवाज आई, "लौट कर वह सीधे होस्टल में रहने चली जायेगी।"

"होस्टल ?" महेन्द्र की आवाज थरथराकर टूटने लगी।

"जी हाँ, मैंने उसके लिए होस्टल में इन्तजाम कर दिया है। उस छोर से रमणी-स्वर आया, "मतलब यह कि मेरे साथ ही होस्टल में रहेगी।"

महेन्द्र ने उसकी बातों के आखिरी हिस्से को नहीं सुना। भयभीत, आतंकपूर्ण आँखों से अपने हाथ के काँपते रिसीवर की ओर देखा। उस छोर से तब आवाज आ रही थी, "हैलो, हैलो···।"

महेन्द्र ने फुसफुसाकर कहा, "चली गई···सिलीगुड़ी···लौटकर होस्टल में···।" उसके हाथ से रिसीवर गिर गया। वह पागल की तरह दौड़ता हुआ गया और अपने कपड़े के थैले को ड्रेसिंग टेबुल से उठाकर उलट दिया और झाड़ने लगा। खाता, कुछ रुपये-पैसे और कुछेक चाबी के गुच्छे फर्श पर बिखर गये। महेन्द्र ने फर्श पर बैठे-बैठे ही हरेक चाबी के गुच्छे को देखा और पर्चे से माणिकतल्ला सी० आई० टी० फ्लैट की चाबी को उठाकर देखा। देखकर एक बार उसे गाल से और दूसरी बार सीने से चिपका लिया।

पर दूसरे ही क्षण महेन्द्र का संपूर्ण शरीर काँप उठा, *आँखें सन्देह* और भय से आतंकित हो उठीं। वह तुरन्त खाता, रुपया-पैसा, चाबी के गुच्छे आदि कपड़े के थैले में रख उठकर खड़ा हो गया। *अपने कपड़े*-लत्ते की ओर देखे, इसका उसके पास अवकाश नहीं है। सिर के ऊपर पंखा चल रहा है, इसका भी उसे खयाल *नहीं है। आँधी की त*

शयन-कक्ष से निकल ड्राइंगरूम को पार किया और बाहर के दरवाजे को खोल जोर से खींच दिया। ताला अपने आप बन्द हो गया। लिफ्ट के पास आ, बार-बार घण्टी दबाने लगा। हताश हो जब सीढ़ी की ओर पाँव बढ़ाने लगा तो लिफ्ट ऊपर आया। वह एक तरह से छलाँग लगाकर ही लिफ्ट के अन्दर चला गया। लिफ्टमैन को आश्चर्य में डालते हुए कहा, "नीचे।"

नीचे उतर महेन्द्र जल्दी-जल्दी लिफ्ट से बाहर निकला और सड़क पर आ पागल की तरह टैक्सी खोजने लगा। थोड़ी दूर पैदल जाने के बाद ही टैक्सी मिल गई। टैक्सी में बैठ, टूटे हुए स्वर में किसी तरह कहा, "माणिकतल्ला सी० आई० टी० रोड।" टैक्सी चलने लगी। महेन्द्र पत्थर के मानिन्द बैठा रहा, हालांकि उसका अन्तर थरथरा रहा है। सी० आई० टी० रोड के फ्लैट के सामने पहुँचकर टैक्सी वाले को रोका, भाड़ा चुकाया और नीचे उतर तेज कदमों से चलने लगा। उसका ध्यान इस बात पर नहीं गया कि दरबान उसकी ओर हैरतभरी निगाह से ताक रहा है। लिफ्ट से आठवीं माला में आकर उसने पहले दरवाजा खोला। बत्ती जलाकर कमरे को बन्द कर दिया। थरथराते हाथ से आलमारी खोली। नीचे के असंलग्न चेम्बर को हटाकर रख दिया, उसके बाद नीचे चाबी डालकर, अन्दर के चेम्बर का ढक्कन खोला और एक ही क्षण में उस खाली चेम्बर पर मुंह के बल गिर कर आर्तस्वर में रोने लगा, "उफ्, आह, हाय-हाय···।"

उसका ध्यान इस बात पर गया ही नहीं कि चेम्बर के किनारे की धारदार जगह से उसके सिर में चोट आई है और उससे खून टपक रहा है। वह बच्चे की तरह बन्द कमरे में कब तक रोता रहा, इसका उसे पता नहीं चला। उसके बाद वह उठकर खड़ा हो गया। खुली आलमारी की ओर देखा। शून्य चेम्बर की ओर निगाह दौड़ाई। उसका सारा शरीर पसीने से भीग गया है, गालों पर सूखे आँसू की लकीर है। सिर के कटे हुए हिस्से में खून जम गया है। आलमारी की तरफ से

आँखें हटाकर उसने कमरे के चारों तरफ निगाह दौड़ाई। उसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता बालकॉनी के दरवाजे की ओर बढ़ गया। सिटकनी खोल, जल्दी-जल्दी बालकॉनी की तरफ बढ़ गया। सड़क पर रोशनी जल रही है। दूर वी० आई० पी० रोड की रोशनी कतार बद्ध बिन्दु जैसी दीख रही है। महेन्द्र ने नीचे सड़क की ओर देखा। आदमी और यातायात वाहन चल-फिर रहे हैं और सड़क जैसे उसे हाथ के इशारे से बुला रही है।

महेन्द्र ने फुसफुसाकर कहा, "जाऊँगा। अब तुम्हारे सिवा मेरे लिए कोई दूसरी जगह नहीं है।" रेलिंग पकड़, जैसे ही उसने पाँव आगे रखना चाहा, कमरे के अन्दर से सुरबाला की आवाज तैरती हुई आई, "सुनो, कहाँ जा रहे हो?"

महेन्द्र ने तत्क्षण कमरे की ओर देखा। कमरा खाली है। फिर भी उसने कमरे के अन्दर प्रवेश किया, पलंग की तरफ देखा, उसके बाद फर्श को। फुसफुसाकर बोला, "तुम कहाँ हो सुरो? कहाँ हो?" यह कहते हुए औंधे मुँह फर्श पर लेटकर मातृहीन शिशु की तरह पुकारने लगा, "सुरो-सुरो, तुम कहाँ हो?"

महेन्द्र सुरो को पुकारते-पुकारते, शिशु की तरह ही फर्श में मुँह छिपाकर सो गया।

एकाएक चिहुँककर जग गया और बोला, "कौन? इरानी?"

निःशब्द कमरा। रोशनी जल रही है। महेन्द्र ने भूतग्रस्त मानिन्द कमरे के चारों ओर निहारा। उसकी आँखें खुली आलमारी पर गईं। पीछे मुड़कर देखा, बालकॉनी का दरवाजा खुला है। वहाँ पानी का दाग है, चौखट भीगी है। पता नहीं, कब पानी बरस चुका है। महेन्द्र सपना देख रहा था, इरानी पीछे से आई है और उसे अचानक बाँहों में भर लिया है, जैसा कि वह अकसर किया करती थी।

महेन्द्र उठकर खड़ा हो गया। बालकॉनी में गया। अब भी सड़क पर रोशनी जल रही है लेकिन पूर्व दिशा के क्षितिज में हलकी लाली

रही है। कहीं टूटे हुए स्वर में दो-चार कौवे बोल उठे। नीचे की
र ताका। दो-चार आदमी चल-फिर रहे हैं। देखते ही बात समझ
आ जाती है, सवेरे के मेहनतकश बाहर निकले हैं।

महेन्द्र ने दूर के आसमान की ओर एक बार फिर निहारा, उसके
द कमरे के अन्दर आ, बालकॉनी का दरवाजा बन्द कर दिया। गुसल-
ख़ाने में जाकर बत्ती जलाई। बेसिन के ऊपर रखे आईने में अपना
चेहरा देखा। सिर के कटे हिस्से को हाथ से छुआ। बेसिन के नल की
टोंटी खोल हाथ-मुँह गरदन-गला धो लिये। कपड़े के छोर से पोंछा।
अब उसकी आँखों में बेचैनी, भय, आतंक, हताशा और रुलाई नहीं है।
उसके चेहरे पर मार खाए व्यक्ति के द्वारा स्वयं को शान्त करने की चेष्टा
का भाव तैर रहा है। अब वह बहुत कुछ सामान्य नहीं दीख रहा है।

गुसलखाने की बत्ती बुझाकर वह कमरे के अन्दर वापस आया।
आलमारी के तमाम चेम्बरों को पूर्ववत् बन्द कर दिया, पल्ले को चाबी
से बन्द कर दिया। कपड़े के थैले में खाता, रुपया-पैसा और चाबियों के
सारे गुच्छे भर लिये। कमरे के चारों तरफ एक बार नजर दौड़ाई और
रोशनी बुझा दी। दरवाजा बन्दकर लिफ्ट के पास आने पर समझ में
आया, इस इमारत का कोई आदमी अभी सोकर नहीं उठा है। वह
सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आया। देखा, दरवान सोया है और बाहर जाने
के कलैप्सिबल गेट पर ताला जड़ा है।

महेन्द्र ने दरवान को पुकारा। बिना कुछ बोले पाँच रुपये का ए
नोट निकालकर दिया। दरवान ने भी बगैर कुछ बोले गेट का ता
खोल दिया। बाहर आ महेन्द्र ने सड़क के दोनों किनारे की ओर अ
दौड़ाई। बस की उम्मीद में न रुककर वह पैदल ही आगे बढ़ा और
एक टैक्सी मिल गई। उस वक्त भी सड़क पर रोशनी जल रही
मगर पूरब का आसमान साफ हो रहा था और लाली तेजी से फैल
थी। टैक्सी जाने को राजी हो गई तो महेन्द्र ने बैठकर कहा, "द
चिड़िया मोड़।"

टैक्सी जब महेन्द्र के गेट के सामने आकर रुकी तो उसके घर के झाऊ और देवदार के पेड़ों की फाँक से रक्तिम धूप की प्रथम किरण झाँक रही थी। किराया चुकाकर, गेट के छोटे हिस्से से वह सिर झुकाकर अन्दर घुसा। ग्वाला अगर न आया होता तो छोटा हिस्सा बन्द ही होता। ग्वाला आ गया है, इसलिए खुला है। इसका मतलब सुरबाला अभी गाय दुह रही है।

महेन्द्र बगीचे की ओर गया। जैसा सोचा था, सही निकला। सुरबाला गाय दुह रही है। गाएँ बछड़ों को चाट रही हैं। शुरू में ग्वाला की नजर उस पर गई और उसने माथे पर हाथ रखकर कहा, "राम-राम बाबूजी।"

सुरबाला ने तत्क्षण मुड़कर देखा और उसकी हालत ऐसी हो गई जैसे नीचे गिर पड़ेगी। बोली, "तुम! तुम आ गए?"

सुरबाला को गाय के थन से हाथ हटाकर जमीन पर रखते देख, महेन्द्र तेज कदमों से उसके पास चला आया और बोला, "आ गया हूँ सुरो। घबराओ नहीं। तुम जो काम कर रही थी, करो। मैं बल्कि बाथरूम जाकर नीम की दातून ले आता हूँ और दाँत रगड़ लेता हूँ।"

क्या कहे, सुरबाला तय नहीं कर पा रही है। महेन्द्र के सिर पर नजर जाते ही वह गाय के पास से उठ खड़ी हुई, "यह क्या, तुम्हारे सिर में चोट कैसे लगी?"

"चोट नहीं लगी है, सुरो, सिर फट गया है। महेन्द्र उदास है लेकिन सहज मुसकान के साथ बोला, "तुम घबराओ नहीं। मैं कमरे में थैला रख, नीम की दातून ले आता हूँ।"

सुरबाला की आँसूभरे नेत्रों में उद्वेग की छाप है। महेन्द्र ने हाथ उठाकर उसे सांत्वना दी और घर के पिछवाड़े के दरवाजे की ओर चला गया। अपने कमरे के अन्दर जाकर देखा, नीतू मच्छरदानी के अन्दर सोया है। उसने बगैर कोई आवाज किए बैग से चाबी निकाली और आलमारी खोली। थैले को अन्दर रख उसे फिर बन्द . .

का कुरता उतार अलगनी पर रख दिया। बाहर आ गुसलखाने की खिड़की पर देखा, कपड़े में भीगी हुई नीम की दातून पूर्ववत् रखी हुई है। यह सुरबाला का काम है। शायद उम्मीद में वह हर रोज नीम की दातून रखती आई है।

महेन्द्र की छाती में साँस जैसे अटक रही थी, फिर भी वह एक दातून मुँह में रख पिछवाड़े के दरवाजे से निकल आया और देखा, सुरबाला अब भी गाय के पास खड़ी है। महेन्द्र ने कहा, "मैं तो आ ही गया सुरो। तुम गाय दुह लो।"

सुरबाला की आँखों में धुंधलापन तिर रहा है, फिर भी उसके उद्वेग की छाया बहुत कुछ पतली हो जाती है। वह फिर जाँघों के बीच बाल्टी रख गाय दुहने लगी।

महेन्द्र ने बगीचे के चारों तरफ आँख दौड़ाई। सरला गैरेज यानी खटाल साफ कर रही है। वह धीरे-धीरे पूरब की ओर बढ़ गया। नीम की दातून चबाते-चबाते बीच-बीच में अनमनेपन में डूब जाता है और फिर आसमान की ओर देखने लगता है। पिछली रात की बारिश में ड़-पौधे भीग गए हैं और हरे-हरे पत्ते ऐसे दीख रहे हैं जैसे नए सिरे से साज-सिंगार किया हो। मैना और गौरैया उड़ रही हैं। कहीं एक नीलकंठ बैठे-बैठे कलरव कर रहा है।

महेन्द्र को खयाल ही न रहा कि कब सुरबाला गाय का दुहना खत्म कर चुकी है और ग्वाला दूध लेकर चला गया है। अचानक उसकी इन्द्रियाँ चौंक पड़ीं। सुरबाला उसके निकट आकर खड़ी हो गई है। महेन्द्र चिहुँका नहीं, अपनी सहजात हँसी के साथ बोला, "आओ सुरो।"

सुरबाला महेन्द्र के सामने आकर खड़ी हो गई। अब भी उसकी आँखें आर्द्र हैं, लेकिन उनमें जिज्ञासा का भाव है। महेन्द्र ने कहा, "सुरो, मुझसे कुछ मत पूछो। मैं शायद बहुत दूर चला गया था, मगर वापस आ गया।"

"यही तो मेरा—हम लोगों का भाग्य है।" सुरबाला ने कहा, "तुम न कहना चाहोगे तो मैं तुमसे कोई बात नहीं पूछूंगी।"

महेन्द्र ने कहा, "इसलिए सुरो, कि पूछने से कोई लाभ नहीं होगा।"

"इरानी चली गई है, जानते हो न ?" सुरबाला बोली।

महेन्द्र थूक निगलकर एक क्षण चुप रहा, उसके बाद बोला, "जानता हूं।"

"जानते हो ? कैसे पता चला ?"

"तुम फिर पूछताछ कर रही हो ?" महेन्द्र मुसकराया।

सुरबाला ने घबराकर कहा, "नहीं-नहीं, पूछताछ नहीं करूंगी।"

महेन्द्र नीम की दातून का कसैला थूक फेंककर बोला, "सुरो, मैंने सोचा था, जीवन जबकि एक ही है तो उसके साथ अपनी मर्जी के अनुसार खिलवाड़ करूं।" यह कहकर वह हंस दिया और सिर हिलाया, "लेकिन यह असली बात नहीं है। जीवन निःसन्देह एक ही है लेकिन आदमी को एक ही जीवन में अपना सारा काम-काज कर लेना पड़ता है। इसे बिसरा देने से गलती की सजा उसे इसी जीवन में भोगनी पड़ती है।" वह चुप हो गया। उसके गले को ठेलकर जैसे कोई चीज बाहर निकलना चाहती है। स्वयं को शान्त करने के खयाल से वह मुलायम धूप से झलमलाते चिकने पेड़-पौधों की ओर देखने लगा।

नीलकंठ अब भी शोर मचा रहा है। उसके साथ एक बया और दो बुलबुलें भी स्वर मिला रही हैं। मैना और नीलकंठ चुप होकर किसी जगह बैठना नहीं जानते। महेन्द्र ने हलकी खांसी खांसते हुए कहा, "चलो सुरो, मुंह धो लूं। सिर की चोट के कारण एक बार डॉक्टर के पास जाना होगा।"

"आज तुम ऑफिस जाओगे ?" सुरबाला ने घबराकर पूछा।

महेन्द्र ने कहा, "राइटर्स नहीं जाऊंगा लेकिन काम-धंधे की दूसरी जगहों में जाना है। रसोई के बारे में सोच रही हो ? आज मैं जरा देर

से बाहर निकलूंगा।"

वह पीछे की तरफ मुड़ा। देखा, मती, सतु, नीतू तीनों बगीचे में आकर उसकी ओर ताक रहे हैं। महेन्द्र ने मुड़कर सुरबाला की ओर देखा। सुरबाला ने भी देखा। उसकी आँखों में फिर आंसू भर आए हैं। महेन्द्र सुरबाला का हाथ थामे पानी के नल की ओर चला गया। नल के पास जाकर लड़कों की तरफ मुड़कर बोला, "तुम लोग मुँह बाए क्या देख रहे हो? बाजार-दुकान जाओ। खा-पीकर हम लोग सभी एक ही साथ निकलेंगे।"

मती और सतु ने एक-दूसरे की तरफ आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा। उसके बाद महेन्द्र पर उनकी दृष्टि गई। मती ने पूछा, "आप कब आए बाबूजी?"

"सवेरे।" महेन्द्र ने सुरबाला का हाथ छोड़ पानी की टोंटी खोल दी। सतु बोला, "बाबूजी, आपके सिर में क्या हुआ है?"

"कट गया है, दवा लगानी है।" अँजुरी में पानी भर कर उसने मुँह के अन्दर डाला।

मती और सतु मां की ओर नजर दौड़ाकर अन्दर चले गए। नीतू अब भी प्रस्तर की तरह खड़ा है। सुरबाला ने देखा, महेन्द्र ने एक बार मुँह से पानी बाहर फेंका परन्तु दोबारा पानी लेना भूल गया है। खुले नल की टोंटी से पानी की अजस्रधारा बह रही है। महेन्द्र का हाथ पानी से भीग रहा है।

सुरबाला आगे बढ़कर उसके निकट आई। महेन्द्र उसकी ओर मुखातिब नहीं हुआ। बोला, घर जाओ, सुरो। मैं आ रहा हूँ।"

सुरबाला कुछ क्षणों तक चुपचाप खड़ी रही। उसके बाद आगे बढ़कर उसने नीतू का हाथ थाम लिया और घर के भीतर चली गई। महेन्द्र अब भी खड़ा है और पानी की धारा ~~बह रही है~~ बहती जा रही है।